"श्रीमहावीर जैन विद्यालय"

प्रभु वीरशासनमें अपूरव वीर पुरुषोंका किया।
श्रीवीरविद्यालय कि जिसका नाम कायम है किया॥
हे वीर! दाता नामधारी! दान इसमें दीजिए।
विद्यार्थिजनको वीर कर लक्ष्मी सफल कर लीजिए॥ १॥

[उक्त संस्थामें जिस किसी धर्मात्मा स्त्रीपुरुषको दान देना हो वह नीचे लिखे पतेपर भेजें]

श्रीमहावीर जैनविद्यालयके ओनररी सेक्रेटरी–मि. **मोतीचंद** गिरधरलाल कापडिआ–बी. ए एल्. एल्. बी. सोलीसीटर–हाई कॉर्ट–
प्रीन्सेसस्ट्रीट—मनहर बिल्डींग—बम्बई.

मुंबाई
निर्णयसागर छापखानामां छाप्युं.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Vallabhadas Tribhuvandas Gandhi, Secretary Shri Jain Atmanand Sabha, Bhavanagar.

॥ आशय ॥



परम उपकारी महात्मा श्रीमद् विजयानंदसूरि (आ-
ारामजी) महाराजे जैन प्रजा उपर जैन दर्शनना
त्वज्ञान वगेरेना अनेक ग्रंथो लखी जे उपकार कर्यो छे
अवर्णनीय छे.

आत्महितैषिओने आत्महित करवानुं साधन, तत्व-
ानना ग्रंथोनुं दोहन जेम छे, तेम भक्ति पण एक प्र-
ल साधन छे. परमात्मानी भक्ति पण भाव पूजा तेमज
तवन सज्झाय वगेरेथी गुणग्रामवडे करी शकाय छे, जेमां
ूजा एक अपूर्व साधन छे, जेथी उक्त पूज्यपाद स्वर्ग-
ासी महात्माए समयने अनुसरता नवीन राग रागणीथी
१ स्नात्रपूजा, २ अष्टप्रकारी पूजा, ३ नवपद पूजा,
४ सत्तरभेदी पूजा अने ५ वीसस्थानक पूजा मली पांच पू-
ाओ बनावी जैन समाज उपर परम उपकार करेलोछे.

उक्त महात्माने संगीतनो अभ्यास केवो होवो जो-
ईए ते तेओनी बनावेली आ कृतिओ साफ साफ
ाहेर करी रहीछे, संगीतना प्रोफेसरो अने जाणकारो
ेमज पूजाना रसिको तेमनी रचनाना संबंधमां अनेक
विध प्रशंसा करेछे अने तेने लइने सत्तर भेदी अने वीस

स्थानकनी पूजा तो आ देशमा (गुजरात काठियावाडमां) पण उक्त महात्मानीज बनावेली घणे भागे भणाववामां आवेछे.

आ पांच पूजा तेमज ते साथे ते महात्माना पगले चालनारा प्रसिद्ध वक्ता मरहुम स्वर्गवासी महात्माना प्रशिष्य श्रीमद् वल्लभ विजयजी महाराजनी बनावेली १ पंचपरमेष्ठिपूजा, २ पंचकल्याणकपूजा, ३ एकवीस प्रकारी पूजा, ४ऋषिमंडलपूजा ५ नंदीश्वर द्वीप पूजा, ६ द्वादशव्रत पूजा, अने, नवाणु प्रकारी पूजा, मली सात पूजाओ के, जे घणे भागे हिंदी भाषामां रची गुजराती भाषाना अजाण एवा पंजाब, मारवाड, मेवाड, मालवा, बंगाल, विगे देशोना जैन बंधुओनी अगवडता दूर करेली छे.

आ पूजाओ हिंदी भाषामां छे, छतां सरल गुजराती जेवी छे, एटलुंज नही परंतु दरेक पूजा वर्तमान समयने अनुसरता राग रागणीथी भरपूर होइ आकर्षण करनारी छे, जे गया वर्षमां मनहर मुंबई नगरीमां तेओनी चातुर्मास दरम्यान छेल्ली बनावेली पंचपरमेष्ठिनी पूजा सांभलनारा जैन तेमज जैनेतर मनुष्योए तेनी रसिकता संबंधी एक आवाजे वखाण करेली छे एटलुंज नही परंतु वारंवार अनेक वखत उक्त महात्मानी पूजाओ उपरा उपर भणावी अपूर्व आनंद मुंबईनी प्रजाए लीधो छे. तेज तेनी उपयोगिता, कृतिनी रसिकता अने रचनार महात्मानी

विद्वत्ता सिद्ध करी बतावेछे. ए उपरांत संक्षिप्त अष्ट प्रकारी पूजा अने गुरुभक्तिरूप श्रीमद् विजयानंदसूरि (आत्मारामजी) महाराजनी अष्टप्रकारीपूजा, खास पंजाबी गुरुभक्तोनी प्रार्थनाथी रची छे, ते पण आ पुस्तकना पाछला भागमां जॉइंट करवामां आवी छे.

आ सभा तरफथी प्रथम स्वर्गवासी पूज्यपाद गुरुराज श्रीमद् विजयानंदसूरि (आत्मारामजी) महाराजनी एकली पूजाओनी पहेली आवृत्ति करवामां आवेली हती ते खपी जवाथी उक्त गुरुराज महात्मानी पूजाओ साथे श्रीमद् वल्लभविजयजी महाराजनी बे पूजाओ मली बीजी आवृत्ति, 'पूजासंग्रह' तरीके बहार पाडवामां आवी हती; बीजी आवृत्तिपण थोडा वखतमां खपी जवाथी तेमज बन्ने महात्मानी बनावेली तमाम पूजाओ एक साथे छपाय तो वधारे सारुं, एवी मागणीओ वारंवार थवाथी आ त्रीजी आवृत्ति, जेमां पांच आत्मारामजी महाराजनी बनावेली, अने सात तथा बे मली नव वल्लभविजयजी महाराजनी बनावेली मली एकंदर चौद पूजाओ आ त्रीजी आवृत्तिमां प्रसिद्ध करवामां आवेलीछे.

आ तमाम पूजाओ शुद्ध प्रसिद्ध थाय तो वधारे सारुं, एवा हेतुथी प्रथम तपासी जवा, पाछलथी प्रुफ जोवा, वगेरे बाबतमां आ सभा तरफथी मुनिराजश्री वल्लभ वि-जयजी महाराजने विनंती करतां तेओ साहेबे अथथी

इति सुधी तपासी जवा वगेरेमां पोतानो अमूल्य वखत लई जे तसदी लीधीछे तेने माटे आ सभा अंतःकरणथी उपकार माने छे.

विशेषमां मरहुम पूज्यपाद गुरुराजजी आत्मारामजी महाराजनो परिवार मंडल के जे अमोने प्रसंगे प्रसंगे किंमती सलाह आपी उत्तम कार्यो करवा प्रेरेछे तेमाटे पण आ सभा उक्त परिवार मंडलनो आभार मानेछे.

आ ग्रंथनी आवृत्ति प्रसिद्ध करवामां शेठ कल्याणजी वीरजी वेरावळवाळाए पोतानां धर्मपत्नी मरहुम बीजकोर बाइना तरफथी रु. ४००, तथा शेठ मदनजी कानजी वेरा-वलवाला तरफथी रु. १००, मली रु. ५००, नी मदद आ सभाने मळेली छे जेमनो उपकार मानवामां आवेछे. तेमज ते बाबतनी व्यवस्था करवामां शा. माणेकलाल नानजी रेहवासी भावनगर (हाल निवासी मुंबई)वाळा ए पण घटती मदद करेली छे. जेथी एमनो उपकार मानवामां आवेछे.

विशेष आ ग्रंथ छपाववामां आवेला ऊंचा कागळो आखी बुक माटेना शेठ "हेमचंदभाइ अमरचंद तलकचंद" मांगरोळ निवासीए आ सभाने अर्पण कर्याछे, जेथी ते-मनो पण उपकार साथे आभार मानवामां आवेछे. मळेली उत्तम लक्ष्मीनो लाभ आवा अनेक धार्मिक कार्योमां खरची

उदारता बतावी लेवातो होवाथी खरेखर मनुष्य जन्मनी सार्थकता बतावी आपेछे.

आ ग्रंथनी शुद्धता अने निर्दोषता करवामां पूरती सावधानी राखेल छे छतां कोई स्थळे दृष्टि दोषथी के प्रेस दोषथी स्खलना थइ होयतो तेने माटे मिथ्यादुष्कृतछे.

भावनगर—
आत्मानंद भवन
वीर संवत्. २४४१.
आत्म संवत्. १९
विक्रम संवत्. १९७१.
माघ शुक्क पूर्णिमा.

गांधी. वल्लभदास त्रिभुवनदास
अने
शेठ. हरजीवनदास दीपचंद,
सेक्रेटरीओ.





अनुक्रमणिका.

पूजाका नाम	प्रारभपृष्ठाक	समाप्तिपृष्ठाक
१ स्नात्रपूजा	१	१९
२ अष्टप्रकारीपूजा	१९	४१
३ नवपदपूजा	४२	७४
४ सत्तरभेदीपूजा	७५	१००
५ वीसस्थानकपूजा	१००	१३९
६ पंचपरमेष्ठीपूजा	१४०	१६४
७ पंचकल्याणकपूजा	१६५	१९६
८ एकवीसप्रकारीपूजा	१९७	२३८
९ ऋषिमंडलपूजा	२३९	२७८
१० नंदीश्वरद्वीपपूजा	२७९	३१६
११ नवाणुप्रकारीपूजा	३१७	३५१
१२ वाराव्रतपूजा	३५२	३९६
१३ संक्षेपअष्टप्रकारीपूजा	३९७	४०२
१४ गुरुपूजाष्टक संस्कृत	४०३	४०६
१५ ,, भाषा	४०७	४१२
१६ गुरुमहाराजकी आरती	४१३	४१५



अथ श्रीजैनाचार्य श्रीश्रीश्री १००८ श्रीमद्-
विजयानंद सूरीश्वरजी-प्रसिद्ध नाम
"आत्मारामजी" महाराजजी
विरचित

पूजासंग्रह.

"स्नात्रपूजा"

प्रथम पूर्वदिशा सन्मुख, अथवा उत्तरदिशा सन्मुख, प्रतिमाजीका मुख होवे उस तरह ऊपरा ऊपरी शुद्ध करके, धूपादिकसे पवित्र करी हुई तीन चोकियां, जलादिकसें शुद्ध करके, धूपादिकसें पवित्र करके, गुलाब केवडा प्रमुखके जलसे सुगंधित छंटकाव करके, पुष्पकी वृष्टि करी हुई भूमिमें स्थापन करनीं. ऊपर प्रतिमाजी स्थापनेके लिये सिंहासन स्थापन करना. यदि दो चोकियां और तीसरा सिंहासन होवे तो भी

कुछ हरकत नहीं. चोकियोंके मध्य भागमें एक एक केसरका स्वस्तिक करना. उसके ऊपर चावलोंका स्वस्तिक करना. उसके ऊपर श्रीफल, सुपारी आदि रखना. सिंहासनमें, अगर ऊपर रखी हुइ परात आदिमें, दो स्वस्तिक केसरसे करके एकके ऊपर तीन नवकार पूर्वक पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापन करनी, उसके आगे दूसरे स्वस्तिकके ऊपर सिद्धचक्र स्थापन करना. स्नात्रका जल नीचे न गिरे जिसके लिये सिंहासनके पास पाणी निकलनेकी टूटीके नीचे पीत्तलकी बाटी (त्रांबाकुंडी) रखनी. स्नात्र पूजा आदि संपूर्ण होए पीछे स्नात्रका जल जहां पांव न आवे वैसे स्थानमें गेरना. चोकियोंके आगे एक पटडा (पाटला) अगर छोटी चोकी (बाजोठ) शुद्ध पवित्र करके स्थापन करनी. उस चोकीके ऊपर हारबंद दो अथवा चार स्वस्तिक करके ऊपर चावल पूरने. तिसके ऊपर सुपारी, बदाम आदि रखना. पीछे निर्मल जल १, दूध २, दधि (दही) ३,

गौका घृत ४, और मिसरी ५, इनसे पंचामृत बनाके बीचमें फूल, बरास, केसर, चंदन आदि सुगंधित पदार्थ डालके जितने स्वस्तिक किये हो उतने कलश भरके स्वस्तिकके ऊपर रखनें, कलशके पासे पर स्वस्तिक करने, और गलेमें टूटीके साथ पेच (आंटी) पाकर मौली (नाडा) बांधना. कलशोंके ऊपर शुद्ध अंगलूहणें तह (घड़ी) करके स्वस्तिक करके रखने.

प्रतिमाजीके दाहिणे (जिमणे) पासे प्रतिमाजीकी नाशिकाके बराबर लाट (शिखा) आवे उस रीतिसे दीपक रखना. सो दीपक लालटैन (फानस) आदिमें रखना. वामे (डाभे) पासे धूप रखना. सिंहासनके ऊपर चंद्रोया, वंदरवाल (तोरण) बांधना. भगवान्के ऊपर छत्र धारण करना. इत्यादि विधि करे बाद दो अगर चार स्नात्री शुद्ध होके, आभूषणोंसे सुशोभित हो तिलक लगा मुखकोश बांध हाथ धो धूपादिकसे पवित्र कर, तीन तारकी मौली

(नाडाछड़ी)से कंकण बाध हाथको केसर आदिकसे चर्चित करके खड़े रहे. पीछे स्नात्र पढ़ाना प्रारंभ करे.

"स्नात्रपूजा."

॥ दोहा. ॥

वामासूनु पणमीए, श्रीशंखेश्वर पास ।
स्नात्र रचू जिनवर तणा, जिम तूटे भवपास ॥१॥
अलंकार विकार विना, विधुवत् कमनीय अंग ।
सहज उपाधिमुक्त विभु, सोभे जीत अनंग ॥२॥

"यह पढ़कर प्रतिमाजीके अलंकार उतारने."

॥ दोहा ॥

बिंब भला जिनराजका, महिमा जास अपार ।
कुसुमाभरण उतारीए, त्रिभुवन मोहनहार ॥३॥

"यह पढ़कर निर्माल्य अर्थात् पहिले चढ़ाये हुए फूलादि उतारने."

॥ दोहा ॥

बालपणेमें सुरगिरौ, कनक कलश भरि नीर ।
करी स्नात्र सुराधिपा, पाम्या भवजल तीर ॥४॥

दिठा जिन जिनराजको, धन्य जन्म है तास।
नयन सफल पिण तेहना, सकल फली मन आस ५

"यह पढकर प्रथम स्थापन किये कलशसे स्नात्र करना पीछे शुद्ध जलके साथ स्नान करा अंगलूहणा कर चंदन पुष्पादिकसे पूजा करनी. पीछे धोए धूपादिकसे पवित्र किये हुए कलश स्नात्र करने योग्य सुगंधि पंचामृतसे भर हारबंध रखने, ऊपर शुद्ध वस्त्र ढांप देना. पीछे सर्व स्नात्री हाथमें केशर, चंदन, धूप, पुष्प, चामर आदि लेके हारबंध खडे रहे. एक स्नात्री कुसुमांजलि लेके भगवानके दाहिणे (जिमणे) पासे खड़ा रहे. पीछे नीचे मूजिब उच्चारण करे."

नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ दोहा ॥

अतिसय चउतीस संयुत, वाणीगुण पणतीस।
सो परमेसर देख भवि, त्रिभुवनकेरो ईस॥ १॥

॥ कुसुमांजलि ढाल ॥

(पार्वतीका पति जो कहीए, जिनपति पूजे फूलोंसे यह चाल.)

सर्व सुरेंद्र पूजे जिम तिम,
कुसुमांजलि करो फूलोंसे। अं० ॥

पवित्र उदक लेइ अंग पखाली,
शुचि वसन तनु धारी रे ।
आदिजिनंदके चरण कमलमें,
कुसुमांजलि मनोहारी रे ॥ स० ॥ १ ॥

"यह पढ़कर कुसुमांजलि चढ़ावे. कुसुमांजलिके साथ तिलक, पुष्प, धूप आदि पूजाका विस्तार समझलेना. सर्व कुसुमांजलिमें ऐसेही समझना. इति प्रथमकुसुमांजलिः ॥ १ ॥

॥ नमोर्हत्०—दोहा. ॥

जो निजगुणपर्यव रमे, जस अनुभव इक रंग ।
सहजानंदी शिवंकरु, अचल सरूप अनंग ॥२॥

॥ कुसुमांजलि ढाल. ॥

रयण सिंहासन जिन थापीजे,
आतमगुण आनंदीरे ।
दके चरण कमलमें,
मांजलि सुखकंदीरे ॥ स० ॥ २ ॥

ह पढ़कर कुसुमांजलि चढ़ानी.
लात्रति द्वितीयकुसुमांजलिः ॥ २ ॥"

॥ नमोर्हत्०—दोहा. ॥

निर्मल आतमरूप करी, निर्मल गुण सोहंत ।
निर्मल दीनी देशना, निर्मल भविजन संत ॥३॥

॥ कुसुमांजलि ढाल. ॥

अगर कपूर धूप कर वासी,
पूजो पुग्गल निरासी रे ।
नेमि जिनंदके चरण कमलमें,
कुसुमांजलि सुखरासी रे ॥ स० ॥ ३ ॥

"यह पढ़कर कुसुमांजलि चढ़ानी.
इति तृतीयकुसुमांजलिः ॥ ३ ॥"

॥ नमोर्हत्०— दोहा. ॥

जे सिद्धा जे सीझसी, भविजन कर भव अंत ।
जिनभक्ति विन कोइ नहि, जय जय अमर अनंत४

॥ कुसुमांजलि ढाल. ॥

आतमानंदी निजगुणसंगी,
जगत उद्धारण हारा रे ॥
पास जिनंदके चरण कमलमें,
जल थल फूल उदारारे ॥ स० ॥ ४ ॥

"यह पढ़कर कुसुमांजलि चढ़ानी.
इति चतुर्थकुसुमांजलिः ॥ ४ ॥"

॥ नमोर्हत्०—दोहा. ॥

त्रिभुवन दीपक चरम जिन, सर्व संघ आधार।
मुक्ति रमणी कारण विभु, भव दुःख भंजनहार॥५॥

॥ कुसुमांजलि ढाल ॥

जिनके गुणका पार न पाऊं,
जो मुझ तारण हारा रे।
वीर त्रिलोकी हितकर वंदु,
कुसुमांजलि अघ टारा रे। स० ॥ ५ ॥
"यह पढ़कर कुसुमांजलि चढ़ानी.
इति पंचमकुसुमांजलिः" ॥ ५ ॥

॥ नमोर्हत्०—दोहा ॥

ऋषभदेव आदि करी, वर्द्धमान परजंत।
वर्तमान चउ वीस जिन, कलिमल सयल निहंत ६

॥ कुसुमांजलि ढाल ॥

जग तारक चउ वीस हि जिनवर,
भविजन कमल दिनंदारे।
चउवीस जिनंदके चरण कमलमें,
कुसुमांजलि शिवकंदारे ॥ स० ॥ ६ ॥
"यह पढ़कर कुसुमांजलि चढ़ानी।
इति षष्ठकुसुमांजलिः ॥ ६ ॥

॥ नमोर्हत्०—दोहा ॥

उत्कृष्ट पदे सय सत्तरि, विहरमान लाभंत ।
चवण समय इग वीस जिन, पूजो कलिमल हंत७
चार चार मेरु समंत, विहरमान जिन वीस ।
भक्तिभावें पूजीए, पूरे संघ जगीस ॥ ८ ॥

॥ कुसुमांजलि ढाल ॥

भूत भविष्य अनंत चउवीसी,
वर्तमान जिन चंदारे ।
आतमानंदी सयल जिनंदकी
कुसुमांजलि करो नंदारे ॥

"यह पढ़कर कुसुमांजलि चढ़ानी.
इति सप्तमकुसुमांजलिः" ॥ ७ ॥

"पीछे स्नात्री तीन खमासमण पूर्वक जगचिंतामणि चैत्यवंदन संपूर्ण जय वीयराय पर्यंत करे. पीछे मुखकोश बांधके हाथ शुद्ध करके धूपादिकसे पवित्र करके तीन खमासमण देके एक नवकार गिणके एक स्नात्री पंचामृतका कलश अंगलूहणेसे ढांपकर ऊपर फूल माला डालके हृदयके पास धारण करके खड़ा रहे.

और सर्व स्नात्री धूप, चामरादि लेके खड़े रहे, पीछे मिठे स्वरसे नीचे मुजब पढ़ें ॥"

॥ ढाल दूसरी ॥

॥ दोहा ॥

सकल जिनंद नमी करी, कल्याणक विधि रंग ।
जो भवि गावे रंगसे, अटल महोदय चंग ॥ १ ॥

(कोयल टौंक रही मधुवनमें यह चाल.)

सुपन महोच्छव करो भवि रंगे, मुक्ति रमणी सुख लहो भवि चंगे ॥ सुपनमहोच्छव०—अंचली ॥

समकित महाव्रत संजम पाली,
वीसथानक तप विधि कर झाली ।
तीर्थंकर पद बांधि उमंगे,
भव तीजे शुभ दया दिल संगे ॥सु०१॥
एक भवांतर जिनपद संगी,
पंदर क्षेत्रमें नृपकुल चंगी ।
आर्य देशमें नृप पटराणी,
अवतरे कूखमें जिन त्रिहुं नाणी ॥सु०२॥
सुख सिज्झामें माता देखे,

चउ दस सुपन सुहंकर रेखे।
गजवर वृषभ सिंह वर कमला,
फूलमाला विधु सूर्य हि अमला ॥ ३ ॥
धजा कलस वलि पद्म सरोवर,
रतनागर पय अतिही विसाला।
भवन विमान रतनकी राशि,
अग्नि शिखा अति झाकझमाला ॥ ४ ॥
पतिको सुपन प्रकासे पति कहे,
तीर्थंकर सुत त्रिभुवन नंदा।
होसे सुनकर माता हरखी,
आतमराम जिनंद सुख कंदा। सु० ५॥



॥ ढाल तीसरी ॥

॥ दोहा ॥

शुभ लग्ने जिन जनमिया, त्रिभुवन भयो प्रकाश।
नारकको सुख ऊपनो, भविजन पूरे आस ॥ १ ॥

(वारि जाउंरे केसरिया सामरा, गुण गाउंरे वारि० यह चाल)

जन्म महोच्छव गावोरे,
भवताप निवारी जन्ममहोच्छव० अं.।

उरध अधो दिशि अठ अठ आवे,
सुंदर रूप कुमारीरे ॥ भ० ॥ १ ॥
रुचक गिरि चउ दिशिसे अठ अठ,
चार विदिशि मध्य चारीरे ॥ २ ॥
अष्ट संवर्त्तक वात गंधोदक,
अड जल भरी ले भृंगारीरे ॥ ३ ॥
दर्प्पण अष्ट अष्ट लेइ चामर,
पंखा अष्ट लेइ भारीरे ॥ भ० ॥ ४ ॥
कदली घर कर पुत्र मातायुत,
शुचीकरण कुंभ वारीरे ॥ भ० ॥ ५ ॥
माताको कुसुमालंकार करीने,
राखड़ी बांधे सारीरे ॥ भ० ॥ ६ ॥
शयने थापी गिरिसम आयु,
होजो जिनजी तुमारीरे ॥ भ० ॥ ७ ॥
पूजी वांदी निजगेह पहुंती,
आतम आनंद कारीरे ॥ भ० ॥ ८ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ दोहा ॥

जन्म्या जिन जननी घरे, कंपे आसन सार ।
दाहिण उत्तर नायके, जान्यो यह अधिकार ॥१॥
घंटानाद बजायके, करे सुघोषण सार ।
सुरगिरि मिल सब आईयो, जन्म महोच्छव कार २

राग—भैरवी.

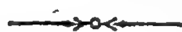
(लागी लगन कहो कैसे छुटे प्राणजीवन०—यह चाल)

सुरपति सगरे जिनपति केरा,
करे महोच्छव रंगेरे ॥ अं० ॥
सब सुर वर मिल सुरगिरि आवे,
सोहमपति चित चंगेरे ।
बहु परिवारें जन्मनगरमें,
जिनपति नमत उमंगेरे ॥ सु० ॥ १ ॥
रत्न कूख धारिणि सुन माता,
सोहमपति हुं सुरंगेरे ।
तुम सुतकेरा ओच्छव करसुं

भय मति करी मन चंगेरे ॥ सु० ॥ २ ॥
थापी प्रतिबिंब जिनवर लेइ,
पंच रूप करी संगेरे ॥
पांडुक वनमें शिला सिंहासने,
जिनवर लेइ उछरंगेरे ॥ सु० ॥ ३ ॥
शक्र बिराजे त्रेसठ सुरपति,
सुरगिरि मिले मन रंगेरे ।
अच्युतपति तिहां हुकमज कीनो.
हरख न मावे अंगेरे ॥ सु० ॥ ४ ॥
सामग्री सकल मिलावो सुरवर,
खीरनिधि जल गंगेरे ।
ओच्छव करे जो जिनपति केरा,
जन्मादिक दुःख भंगेरे ॥ सु० ॥ ५ ॥
मागध आदि तीर्थ उदक वर,
ओषधि मृत्तिका सुरंगेरे ।
सूत्रे भाषी सर्व सामग्री,
मेली अधिक उमंगेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥
अड जातिके कलश प्रत्येके,

अड अड सहस सुचंगेरे ।
चउसठ सहस ही इक अभिषेके,
अढीसें गुणा सर्वंगेरे ॥ सु० ॥ ७ ॥
ईशान इंद्र लेइ खोले प्रभुको,
सोहमपति मन रंगेरे ।
वृषभ रूप करी शृंगे जल भरी,
न्हवण करे प्रभु अंगेरे ॥ सु० ॥ ८ ॥
आतम आनंद जन्म सफलकर,
गावे गीत सुरंगेरे ।
भव संताप निवारण हारे,
जिनपति मज्जन चंगेरे ॥ सु० ॥ ९ ॥

"पीछे पंचामृतसे भरेहुए कलशोंसे स्नात्र करावे और नीचे मुजिब पढ़े."



॥ ढाल पंचमी ॥

॥ राग—कमाच ॥

कलश इंद्र भर ढारे,
जिनंदपर कलश इंद्र०—अंचली ॥

हाथो हाथ हि सुर वर लावत,
खीर विमल जलधारे ॥ जि० ॥ १ ॥
सुर वनिता मिल मंगल गावे,
आनंद हरख अपारे ॥ जि० ॥ २ ॥
गंधर्व किन्नर गण सब करते,
गीत नृत्य स्वर तारे ॥ जि० ॥ ३ ॥
देवदुंदुभि मनहर वाजे,
बोले जय जयकारे ॥ जि० ॥ ४ ॥
आतम आनंद पदके दाता,
जगजीवन हितकारे ॥ जि० ॥ ५ ॥

"संपूर्ण पंचामृतसे स्नात्र कराए बाद स्वच्छ जलसे स्नान कराके अंग लूहणे करके चंदन केशर धूपादिकसे पूर्वसे अधिकतर पूजन करे पीछे स्नात्री धूप चामरादि करे और नीचे मुजिव पढे."

॥ ढाल छठ्ठी ॥

॥ दोहा ॥

पुष्पादिकसे पूजके, करि बहु मंगलमाल ।
रच संगीत सुहावना, सुघर वजावे ताल ॥१॥

॥ राग कमाच, तराना ॥

नाचत शक्र शक्री, हेरी माई नाचत शक्र शक्री ।
छंछंछंछं छननननन, नाचत शक्र शक्री ॥ अं० ॥
श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि बहु बनी ठनी ।
इंद्र इंद्राणी करे नाटक संगीत धुनी ॥
जय जय जिन जग तिमिर भानु तूं ।
चरण घूंघरी छननननन ॥ माई० १ ॥
धौं धौं धप मप मादल करत धुनी ।
सुंदर रंगीली गोरी गावत जिनंद गुनी ॥
धन्य कृतपुन्य हम जन्म सफल अज ।
मेटे भवदुःख तुम वरननननन ॥ मा० २ ॥
त्रौं त्रौं त्रिक त्रिक वेणु वीणा त्रां त्रिक ।
भमरी फिरत गावे गीत मानु मधु पिक ॥
चार गति भ्रमण मिटावे भवि जनको ।
तेरे विन नहीं कोइ सरननननन ॥ मा० ३ ॥
करके संगीत शुद्ध करमसे करी जुद्ध ।
माता कर सोंप बुध वचन उच्चारे शुद्ध ।
सुत तुम स्वामी हम जतनसे राखजो ।
जनम मरण दुःख हरननननन ॥ मा० ४ ॥

बत्ती कोडी कनक वसन मणि माणकुं ।
वृष्टि करे पुण्य भरे रिद्धि सिद्धि दाणकुं ॥
आतम आनंद भरी दीप नंदीसरे जाइ ।
करके अठाइ गए सदनननन ॥ मा० ५ ॥



"अथ कलश."

(राग ठुमरी ॥ गिरनारीकी पहारी पर कैसे गुजरी—यह चाल)

जिन जन्म महोच्छव जयकारी,
जयकारी रे देवा जयकारी ॥ जि० अं०॥
दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक,
नित नित ओच्छव चित्त धारी ॥ जि० १॥
जंबूद्वीप पन्नत्तिए भाखी,
जन्म महोच्छव विधि सारी ॥ जि० ॥२॥
ते अनुसार संखेप रूपसे,
जिन गुण गाया कुमत छारी ॥ जि० ३ ॥
तप गच्छ गगनमें दिनमणि सरिसा,
विजयसिंह प्रभु गणधारी ॥ जि० ४ ॥
सत्य कपूर क्षमा जिन उत्तम,
पद्म रूप कीर्त्ति भारी ॥ जि० ५ ॥

श्रीकस्तूर मणि बुद्धि विजया,
आतमरूप आनंदचारी ॥ जि० ६ ॥
खं सर अंक इंदु (१९५०) शुभ वर्षे,
जंडिआले मास रहे चारी ॥ जि० ७ ॥
संघके आग्रहसे करी रचना,
जिन कल्याणक अघ टारी ॥ जि० ८ ॥

॥ इति स्नात्र पूजा ॥

॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर वाणी भारती, दारति तिमिर अज्ञान ॥
सारति कविजन कामना, वारति विघ्न निदान ॥१॥
चिदानंद धन सुरतरु, श्री शंखेश्वर पास ॥
पदकज प्रणमी तेहना, आणी भाव उल्लास ॥ २ ॥
पूजा अष्टप्रकारकी, अंग तीन चित धार ॥
अग्र पंच मन मोदसे, करि तरिये संसार ॥ ३ ॥
न्हवण विलेपन सुमन वर, धूप दीप अति चंग ॥
वर अक्षत नैवेद्य फल, जिन पूजन मन रंग ॥४॥

उज्जल विमल वसन धरी, शुचितनु मनजिनराग
उतरासंग मुखकोशको, बांधी सुभग सोभाग॥५॥

॥ अथ प्रथमा न्हवणपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अधिक सुगंध जले भरी, कंचन कलश अनूप ॥
नर नारी भक्ति करी, पूजे त्रिभुवन भूप ॥ १ ॥

॥ राग—मालकोश ॥

न्हवण करो जिनचंद, आनंदभर॥ न्हवण० ॥
कंचन रतन कलश जल भरके,
महके वास सुगंध ॥ आ० ॥ १ ॥
सुरगिरि ऊपर सुरपति सगरे,
पूजे त्रिभुवन इंद ॥ आ० ॥ २ ॥
श्रावक तिम जिन न्हवण करीने,
काटे कलिमल फंद ॥ आ० ॥ ३ ॥
आतम निर्मल सब अघ टारी,
अरिहंत रूप अमंद ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

जलपूजा विधिसे करे, टरे करम मल वृंद ॥
हरे ताप सब जगतका, करे महोदय चंद ॥ १ ॥

॥ राग–जयजयवंती ॥

॥ सुरगण इंद मधुर ध्वनि छंदा,
पठन करी करे न्हवण जिनंदा ॥
मागध वरदाम ने परभासा,
अपर तरंगिनी उदक अमंदा ॥ सुर० ॥ १ ॥
क्षीरोदधि अड़ जाति कलश भर,
न्हवण करें जिम चौसठ इंदा ॥
तिम श्रावक जिन भक्ति रंगे,
न्हवण करे जरे करमको कंदा ॥ सुर० ॥ २ ॥
विप्रवधू सोमेश्वरी नामे,
जल पूजनसे लहे महानंदा ॥
कारण कारज समज भलीपरे,
आतम अनुभव ज्ञान अमंदा ॥ सुर० ॥ ३ ॥

॥ अथ काव्यम् वसंततिलकावृत्तम् ॥

तीर्थोदकैर्धुतमलैरमलस्वभावं,
शश्वन्नदीह्रदसरोवरसागरोत्थैः ।
दुर्वारमारमदमोहमहाहिताक्ष्यं,
संसारतापशमनाय जिनं यजामि ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीया विलेपनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

कुमति कुवास निरासिनी, वासिनी चिद्घनरूप ॥
भासिनि अमर अनघपद, नाशिनी भवजल कूप ।१।
सुरपति जिन अंगे करे, सरस विलेपन सार ॥
श्रावक तिम लेपन करे, चंदन घसी घनसार ॥२॥

॥ राग-जिद काफी ॥

करंरे करंरे करंरे करंरे,
श्रीजिनचंद विलेपन करंरे ॥ श्रीजि० ॥
चेतन जान कल्याण करनको,
आन मिल्यो अवसर रे ॥
शास्त्र प्रमान जिनंदजी पूजी,
मन चंचल स्थिर करंरे ४॥ श्रीजि० ॥ १ ॥
सरस चंदन केसर हरिचंदन,
घसी घनसार सु धर रे ॥

कनक रतन जरी भरी रे कचोरी,
मन वच तनु शुचि कर रे ४॥ श्रीजि० ॥२॥
चरण जानु कर अंश शिरोपर,
भाल कंठ प्रभु उर रे ॥
उदर तिलक नव कर जिनवरके,
आतम आनंद भर रे ४ ॥ श्रीजि०॥३॥

॥ दोहा ॥

॥ शीतल गुण जिनमें वसे, शीतल जिनवर अंग ॥
आतम शीतल कारणे, पूजो अरिहंत रंग ॥१॥

॥ राग-कसूरी जंगलो ॥

॥ सिद्धि वधू लइ रे, जिनरंग राची ॥ जिन० ॥
हरिचंदन घनसार सुमन हर रे,
द्रव्य तिलक नव दइ ॥ जिन० ॥ १ ॥
अचल सुरंगी सुमन गुण भृंगी रे,
भावतिलक शिर भइ ॥ जिन० ॥ २ ॥
पूजक चार तिलक करि अंगे रे,
पूजे अति हरखइ ॥ जि० ॥ ३ ॥
जयसुर शुभमति जिनवर पूजी रे,
दंपती शिवपद लइ ॥ जि० ॥ ४ ॥

आतमानंदी करम निकंदी रे,

आनंद रस रंग मइ ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सच्चंदनेन घनसारविमिश्रितेन,

कस्तूरिकाद्रवयुतेन मनोहरेण ।

रागादिदोषरहितं महितं सुरेंद्रैः,

श्रीमज्जिनं त्रिजगतः पतिमर्चयामि ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥



॥ अथ तृतीया कुसुमपूजा ॥

॥ दोहा ॥

त्रीजी पूजा सुमनकी, सुमन करे भवि रंग ॥

पंच वाण पीड़ा हरे, भाव सुगंधि अभंग ॥ १ ॥

॥ राग-धनाश्री ॥

(अव मावडी गिरि जानदे, मेरा नेमजीसे कामहै ।)

॥ अव भविक जन जिन पूजले,

जिम सुधरे सगरे काम रे ॥ अव० ॥ अंचलि ॥

अतिही सुगंधी कुसुम लीजें,
खरचीने बहु दाम रे ॥
मोगरा चंपक मालती,
केतकी पाटल आम रे ॥ अब० ॥ १ ॥
जासुल प्रियंगु पुन्नाग नागन,
दाउदी वर नाम रे ॥
मचकुंद कुंद चंबेलि ले,
जे ऊगियां शुभ धाम रे ॥ अब० ॥ २ ॥
सदा सोहागन जाइ जूई,
बोलसिरी शुभ ठाम रे ॥
लइ कुसुम जिनवर देवने,
पूजो जरे जिम काम रे ॥ अब० ॥ ३ ॥
शुभ सुमन केरी माल गूंथी,
जिन गले धरी जाम रे ॥
आतम आनंद सुहंकरु,
जिम मिले शिववधू धाम रे ॥ अब० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सुभग अखंड कुसुम ग्रही, दूर करी सब पाप ॥
त्रिभुवन नायक पूजिये, हरे मदन संताप ॥ १ ॥

॥ श्रीराग वा कालिंगडो ॥

॥ जिनवर पूजा शिवतरु कंद ॥ जिनवर० ॥

दमनक मरूवो बकुल केवड़ो,
सरस सुगंधित अति महकंद ॥ जि० ॥ १ ॥
कुसुमार्चन भवि करो मन रंगे,
ताप हरे प्रभु जिनवर चंद ॥ जि० ॥ २ ॥
विषयि देवको आक धतूरा,
पूजे नर वायस मति मंद ॥ जि० ॥ ३ ॥
वणिक धूआ लीलावती पूजी,
फूलें जिनवर हरे भव फंद ॥ जि० ॥ ४ ॥
आतम चिद्घन सहज विलासी,
पामी सत् चित् पद महानंद ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

जातीजपाबकुलचम्पकपाटलाद्यै-
मंदारकुंदशतपत्रवरारविंदैः ।
संसारनाशकरणं करुणाप्रधानं
पुष्पैः परैरपि जिनेंद्रमहं यजामि ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ अथ-चतुर्थी धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

कर्मेंधनके दहनको, ध्यानानल करि चंड ॥
द्रव्य धूप करि आतमा, सहज सुगंधित मंड ॥१॥

॥ राग पीलू अथवा बरवा ॥

धूप पूजा अघ चूरे रे भविका, धूप पूजा अघ चूरे रे॥
एतो भव भय नासत दूरे रे, भ० ॥
कृष्णागर अंबर घनसारे,
तगर कपूर सनूरे रे ॥
कुंदरु मृगमद तुरक सुगंधि,
चंदन अगर सचूरे रे ॥ भविका० ॥ १ ॥
ए सब चूरण करी मनरंगे,
भंगे करम अंकूरे रे ॥
नव नव रंगी शुद्ध दशांगी,
जिनवर आगें अदूरे रे ॥ भविका० ॥ २ ॥
धूपदान कंचन मणि रत्ने,
जड़ित घड़ित अति पूरे रे ॥
निर्धूम पावक अति चमकंति,
जिनपतिको कर तूं रे ॥ भविका० ॥ ३ ॥

जिनवर मंदिरमें महमहती;
दश दिग् सुगंध पूरे रे ॥
आतम धूप पूजन भविजनके,
करम दुर्गंधने चूरे रे ॥ भवि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

धूपदान निज घट करी, जिनभक्ति वर धूप ॥
करम कुगंधी मिट गई, पूजे आतम भूप ॥ १ ॥

॥ राग-खमाचका तिलाना ॥

पूजत आनंद कंद री हेरी माइ ॥ पूजत० ॥
जिनप जिनंद चंद पूजे सुर नर वृंद ॥
सेवत अनूप धूप मिटे दुर्गंध रूप ॥
जिनवर अंग भ्रम तिमिर भानु तुं ॥
मरन हरन तुम चरननननन ॥ मा० ॥ १ ॥
दश अंग धूप खेवी दशही निदान सेवी ॥
सुभग सुरंगी रंगी मुगति वधूटी लेवी ॥
जिनवर सेवी हम ऊर्ध्व अभंग गति ॥
तिम तुम गति जिन अरचननननन ॥ मा०॥२॥
सिद्ध बुद्ध अजर अमर अज निर्मल ॥
कालवेदी भव छेदी दूर करी कलिमल ॥

ऐसा महानंद पद धूप पूजा फल करे ॥
अखय भंडार भरे कौन करे वरनननन ॥ मा० ॥३॥
वाम अंगे धूप करी पूजी मन शुद्ध करी ॥
चार गति दुःख हरी आतम आनंद भरी ॥
विनयंधर नृप सात भव सिद्धि वर ॥
नहीं कोइ तुम विन सरनननन ॥ मा० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

कृष्णागरुप्रचुरितं सितया समेतं,
कर्पूरपूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।
धूपं जिनेंद्रपुरतो गुरुतोषपोषं,
भक्त्योत्क्षिपामि निजदुष्कृतनाशनाय ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमी दीपकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पंचमी पूजा जिन तणी, पंचमी गति दातार ॥
दीपकसे प्रभु पूजियें, पामियें केवल सार ॥ १ ॥

॥ राग–सिंध काफी ॥

पूजो अरिहंत रंगरे, भवि भाव सुरंगे ॥ पू० ॥

दीपक ज्योति बनी नवरंगी,
जिनजीके दाहीने अंग ॥
रयण जड़ित चमकत शुभ रंगे,
गोघृत भरी अति चंग रे ॥ भवि० ॥ १ ॥

करुणा रससे धरी शुभ फानस,
मरत न जेम पतंग ॥
झगमग ज्योति सुंदर दीपे,
अनुभव दीप अभंग रे ॥ भवि० ॥ २ ॥

जिन मंदिरमें दीप प्रगट करी,
भावना शुद्ध मन रंग ॥
ध्यान विमल करतां अघ नासे,
मिथ्या मोह भुजंग रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥

दीप दरससे तस्कर नासे,
आतम तिमिर उतंग ॥
तिम जिन पूजत मिले चित्त दीपक,
जरत है समर पतंग रे ॥ भ० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्रव्य दीपक विभावरी, तिमिर करे सब दूर ॥
भाव दीपक जिन भक्तिसे, प्रगटे केवल सूर ॥१॥

॥ राग-भैरवी ॥

॥ दीप जयंकर चिद्घन संगी,
केवल जगत प्रकासे रे ॥ अंचलि ॥
द्रव्य दीपक अर्चन करि रंगे,
मिथ्या तिमिर निरासे रे ॥
तस फल केवल दीप सुहंकर,
लोकालोक विकासे रे ॥ दीप० ॥ १ ॥
पड़त पतंग न धूमकी रेखा,
केवल दीप उजासे रे ॥
जनम मरण गति चार भयंकर,
दुर्मति दुःख सब नासे रे ॥ दीप० ॥ २ ॥
घृत विन पूरे ज्योति अखंड़ित,
वर्तिक मल न चिकासे रे ॥
पाप पतंग जरत सब छिनमें,
ज्योतिमें ज्योति मिलासे रे ॥ दीप० ॥ ३ ॥

जिनमति धनसिरि दीप पूजनसे,
सिद्धि गति सुख रासे रे ॥
आतम आनंद घन प्रभु मिलसे,
पूजत भवि जो उल्लासे रे ॥ दीप० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

विध्वस्तपापपटलस्य सदोदितस्य,
विश्वावलोकनकलाकलितस्य भक्त्या ।
उद्योतयामि पुरतो जिननायकस्य,
दीपं तमःप्रशमनाय शमांबुराशेः ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठी अक्षतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अक्षय शिवसुख कारणे, अक्षत पूजा सार ।
चौगति चूरण साथीयो, करे कुमति मत छार ॥१॥

॥ राग-चढ़ंस ॥

॥ तुमतो सुघर भये शिव साधो,
अक्षत पूजा करो मन मेरे ॥ तुम० ॥ अंचलि ॥

अक्षत तंदुल माणि मुक्ताफल,
साथियो करो जिन बिंब पुरो रे ॥
माणक मरकत अंक आदिसे,
जिन पूजी मन आनंद लो रे ॥ तुम० ॥१॥
तंदुल गोधूम अन्न अखंड़ित,
आदि लेइ ढ़िग पुंज करो रे ॥
अक्षत पूजा करी मन रंगे,
अक्षय सुख भंडार भरो रे ॥ तुम० ॥२॥
आतम अनुभव रत्न सुरंगो,
चिंतामणि सुरद्रुम खरो रे,
अक्षत पूजासे भवि प्रगटे,
जिनवर भक्ति हृदयमें धरो रे ॥ तुम० ॥३॥

॥ दोहा ॥

शुद्धाक्षत तंदुल ग्रही, नंदावर्त विधान ॥
जिन सन्मुख होइ पूजियें, जरे करम संतान १

॥ लावणी मराठीमें ॥

अरिहंत पद अर्चन करी चेतन,
जिन स्वरूपमें रम रहिये ॥

निजसत्ता प्रगटे,
जारके करम भरम निज सुख लहिये ॥अ० १
तुं निज अचल ईश विभु चिद्घन,
रंग रूप विन तुं कहिये ॥
अज अचल निराशी,
शिव शंकर अघहर जग महिये ॥ अरि० २
अव्यय विभु निरंजन स्वामी,
त्रिभुवन रामी तुं कहिये ॥
सब तेरी विभूति,
अक्षत अर्चनसे झट लहिये ॥ अरि० ३
मरुदेवी नंदन चरण सुहंकर,
कीर जुगल अक्षत गहिये ॥
करि अर्चन सुर नर,
अंतमें परमातम पद रस वहिये ॥ अरि० ४

॥ काव्यम् ॥

ज्ञानं च दर्शनमथो चरणं विचिंत्य;
पुंजत्रयं च पुरतः प्रविधाय भक्त्या ।
चोक्षाक्षतैः कणगणैरपरैरपीह;
श्रीमंतमादिपुरुषं जिनमर्चयामि ॥ १ ॥

॥ मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमी नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

शुचि निवेद्य रस सरससुं, भरि अष्टापद थाल ।
विविध जाति पकवानसें, पूजियें त्रिभुवनपाल ॥१॥

॥ राग–ठुमरी ॥

जिन अर्चन सुखदाना रे ॥ भविका ॥ जिन० ॥
अमृति अमृत पाक पतासां,
वरफी कंद विदाना रे ॥
फेणी घेवर मोदक पेठा,
मगदल पेंड़ा सोहाना रे ॥ जि० ॥ १ ॥

लाखणसाई सक्करपारा,
मोतिचूर मन माना रे ॥
खाजां खुरमां खीर खांड घृत,
सेव कंसार विधाना रे ॥ जि० ॥ २ ॥

साटा दोठा मठड़ी सबुनी,
  कलाकंद कलिदाना रे ॥
सीरा लापसी पूरी कचोरी,
  शाल दाल घृत आना रे ॥ जि० ॥ ३ ॥
इत्यादि नैवेद्य सुरंगा,
  पूजिये त्रिभुवन राना रे ॥
आतम आनंद शिव पद रंगी,
  संगी सदा आधाना रे ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अनाहार पद दीजिये, हे जिन दीनदयाल !
करुं अर्चन नैवेद्यसुं, भर भर सुंदर थाल ॥१॥

॥ राग जंगलो ॥

(॥ महावीर तोरे समवसरणकी रे ॥ महा० ए देशी)

जिनंदा तोरे चरण कमलकी रे ॥
  जो करे अर्चन नर नारी,
  नैवेद्य भरी शुभ थारी,
  तन मन कर शुद्ध आगारी ॥
जिनंदा तोरे चरण कमलकी रे ॥ जि० ॥१॥

वीणा रंग राजे रे, मृदंग ध्वनि गाजे रे,
वाजे वाजिंतर भारी,
मिल अर्चन जन शृंगारी,
आये जिन मंदिर शुभकारी॥ जिनं० ॥ २॥
भविजन पूजो रे, जगमें देव न दूजो रे,
धूजे जिम करम कठारी,
मांगुं पद अनाहारी,
ज्युं वेगे वरुं शिवनारी ॥ जिनं० ॥ ३ ॥
पूजा फल ताजा रे, हालीजन राजा रे,
आतमको आनंदकारी,
भव भ्रांति मिट गई सारी,
जिन अर्चनकी वलिहारी ॥ जिनं० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

सन्मोदकैर्वटकमंडकशालिदालि-
मुख्यैरसंख्यरसशालिभिरन्नभोज्यैः ॥
क्षुत्तृड्व्यथाविरहितं स्वहिताय नित्यं,
तीर्थाधिराजमहमादरतो यजामि ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टमी फलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्ट करमके हरनको, आठमी पूजा सार ॥
अड़ गुण आतम परगटे, फल पूजन फलकार ॥१॥

(ठुमरी । महावीर चरणमे जाय, मेरो मन लाग रह्यो ॥ ए देशी ॥)

मेरो मन रंग रह्यो,
फल अर्चनमें सुखदाय ॥ मेरो० ॥ अंचलि ॥
श्रीफल पूगी पिस्ता बदामा,
द्राक्ष अखोड़ मिलाय ॥ मेरो० ॥ १ ॥
खारक मीठे अंब नारंगी,
कदली सीताफल लाय ॥ मेरो० ॥ २ ॥
द्राक्ष आलूचां फनस संतरा,
अंगुर जंबीर सुहाय ॥ मेरो० ॥ ३ ॥
तरबूजां खरबूजां सिंघोड़ां,
सेव अनार गिनाय ॥ मेरो० ॥ ४ ॥
इत्यादि शुभ फल रस चंगे,
कंचन थाल भराय ॥ मेरो० ॥ ५ ॥

फलसे पूजा अर्हन् केरी,
आतम शिव फल थाय ॥ मेरो० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

इंद्रादिक जिम फल करी, पूजे श्रीअरिहंत ॥
तिम श्रावक पूजन करे, फल वरे सादि अनंत ॥१॥

॥ रेखता ॥

जिनवर पूज सुखकंदा,
नसे अड़ कर्मका धंदा ॥
सुंदर भरि थाल रतनंदा,
जिनालये पूज जिनचंदा ॥ जिन० ॥ १ ॥
विविध फल सार रस चंगा,
अपुनरावृत्ति फल मंगा ॥
अड़ द्धिद्धि संपदा रंगा,
बुद्धि सिद्धि शिव वधू संगा ॥ जिन०॥२॥
पूजे भवि भावसु रंगा,
करी अड़ कर्मसु जंगा ॥
करी शुद्ध रूप अनंगा,
उतरी अनादिकी भंगा ॥ जिन० ॥ ३ ॥
कीर युग दुर्गता तंगा,
करी फल पूजना मंगा ॥

आतम शिवराज अभंगा,

विमल अति नीर जिम गंगा ॥ जिन० ॥४॥

॥ काव्यम् ॥

सन्नालिकेरपनसामलबीजपूर-

जंबीरपूगसहकारमुखैः फलैस्तैः ॥

स्वर्गाद्यनल्पफलदं प्रमदाप्रमोदं,

देवाधिदेवमशुभप्रशमं महामि ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥



॥ अथ कलश ॥

॥ राग-धनाश्री ॥

पूजन करो रे आनंदी,

जिनंद पद पूजन करो रे आनंदी ॥ अंचलि ॥

अष्टप्रकारी जन हितकारी,

पूजन सुरतरु कंदी ॥ जि० ॥ १ ॥

श्रावक द्रव्य भाव करे अर्चन,

मुनिजन भाव सुरंगी ॥ जि० ॥ २ ॥

गणधर सुरगुरु सुरपति सगरे,
जिन गुण को न कहंदी ॥ जि० ॥ ३ ॥
मैं मतिमंद ही बाल रमण ज्युं,
जिनगुण कथन करंदी ॥ जि० ॥ ४ ॥
तपगच्छ मुनिपति विजय सिंहवर,
सत्यविजय गणि नंदी ॥ जि० ॥ ५ ॥
कपूर क्षमा जिनोत्तम सद्गुरु,
पद्मरूप सुखकंदी ॥ जि० ॥ ६ ॥
कीर्त्तिविजय कस्तूर सुहंकर,
मणिविजय पद वंदी ॥ जि० ॥ ७ ॥
श्रीगुरु बुद्धि विजय महाराजा,
कुमति कुपंथ निकंदी ॥ जि० ॥ ८ ॥
शिखि युग अंक इंदु (१९४३) शुभ वर्षे,
पालिताणा सुरंगी ॥ जि० ॥ ९ ॥
विमला चल मंडन पद भेटी,
तन मन अधिक उमंगी ॥ जि० ॥ १० ॥
आतमराम आनंद रस पीनो,
जिन पूजत शिवसंगी ॥ जि० ॥ ११ ॥

॥ इति अष्टप्रकारी पूजा समाप्ता ॥

॥ अथ श्रीनवपदपूजा ॥



॥ प्रथमश्रीअरिहंतपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्री शंखेश्वर पासजी, पूरो वंछित आस ।
सिद्ध चक्र पूजा रचूं, जिम तूटे भव पास ॥ १ ॥
उपकारी जिन राजकी, पूजा प्रथम विधान ।
जो भवि साधे रंगसूं, अजर अमरकी खान ॥२॥
उत्पन्न ज्ञान सत रूप है, प्रतिहारज सोहंत ।
सिंहासन बैठे विभु, दे उपदेश महंत ॥ ३ ॥

(राग खमाच.)

जिन पूजन आनंद खानी ॥ जिन० अंचली ॥
संत अनंत प्रमोद अनंगं,
सत चित आनंद दानी ॥ जि० ॥ १ ॥
तीर्थंकर शुभ नाम कर्मके,
उदय कहे जिन वानी ॥ जि० ॥ २ ॥
घाति कर्मका नाश करीने,
अष्टादश मल हानी ॥ जि० ॥ ३ ॥

करे अघाति जीर्ण वसनसें,
तीर्थेश्वर पद ठानी ॥ ४ ॥ जि० ॥

ऐसे अर्हन् देव सुहंकर,
भयभंजन निर्वानी ॥ जि० ॥ ५ ॥

आतम आनंद पूरण स्वामी,
नमो देव मन मानी ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

शासनपति अरिहा नमो, धर्मधुरंधर धीर ।
देशना अमृत वर्षणी, निज वीरज वड़वीर ॥१॥
निर्मल ज्ञान अखय निधि, शुद्ध रमण निजरूप ।
थिरता चरण सुहंकरू, पूजो अर्हन् भूप ॥ २ ॥

(त्रिताला—लावणी-पीलू जिल्ला। महबूबजानी मेरा यह चाल.)

श्री अर्हन् स्वामी मेरा,
छिन नाहि भूलानारे ।
तुम पूजो भवि मन रंगे,
भव भय हि मिटाना ॥ श्री० ॥ १ ॥
भव तीजे वर तप करके,
सेवी निदानारे ।

जिन नाम कर्म शुभ बांधी,
हुए त्रिभुवन राना ॥ श्री० ॥ २ ॥
जिनके कल्याणक दिवसे,
नरके सुहानारे।
उद्योत हुए त्रिभुवनमें,
अतिशय गुण गाना ॥ श्री० ॥ ३ ॥
प्रभु तीन ज्ञान लेइ उपने,
जगमें सुभानारे।
लेइ दीक्षा भविजन तारे,
हुए केवल ज्ञाना ॥ श्री० ॥ ४ ॥
महा गोप सत्थ निर्यामक,
वलि महा महानारे।
येह उपमा जिनको छाजे,
ते त्रिभुवन भाना ॥ श्री० ॥ ५ ॥
प्रति हारज अड़ जस सोहे,
गुण पैंतीस वानारे।
प्रभु चौतिस अतिशय धारी,
महानंद भराना ॥ श्री० ॥ ६ ॥

भवि अर्हन् पदको पूजो,
निज रूप समानारे।
जिन आतम ध्याने ध्यावे,
तद् रूप मिलाना ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ काव्यम् । द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम् ।
नवपदावलिनाम सुभक्तितः,
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ द्वितीयसिद्धपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अलख निरंजन अचर विभु, अक्षय अमर अमार ।
महानंद पदवी वरी, अव्यय अजर उदार ॥ १ ॥
अनंत चतुष्टय रूप ले, धारी अचल अनंग ।
चिदानंद ईश्वर प्रभु, अटल महोदय चंग ॥ २ ॥

अष्ट कर्मको क्षय करी, फिर नहि जग अवतार ।
सिद्ध बुद्ध सतरूप ही, शिव रमणी भरतार ॥३॥

॥ लावणी त्रिताल ॥ चाल—मराठी ॥

सिद्ध स्वरूप जाने विनु चेतन,
मिटे नही जगका फेरा ।
सहु कुमत विहंडी,
छांड़दे ममता रंडीका डेरा ॥ सिद्ध० ॥१॥
त्रिभागोन ही चरम देहसे,
ज्ञानमय आतम केरा ।
निरावरण ही ज्योति,
निरावाध वगाहन विभु तेरा ॥ सि० ॥२॥
सकल कर्म मल दूर करीने,
पूरण अड़ गुण ले संगी ।
निज गुण पर्याये,
बोलते जिन मतमें ही सतभंगी ॥सि०॥३॥
स्व द्रव्य ही खेतर काल स्वभावें,
स्व पर सत्ता गिन ज्ञानी ।
निजगुण ही अनंते ।
शक्ति व्यक्ती कर मन मानी ॥ सिद्ध० ॥४॥

एक अनेक स आदि अनादि,
अंत रहित जिनवर वानी ।
निज आतम रूपे,
अज अमल अखंड़ित सुख खानी ॥ सि०५॥

॥ दोहा ॥

प्रदेशांतर फरसे नहि, एक समय गति जास ।
सदानंदमय आतमा, पावे शिवपुर वास ॥ १ ॥

॥ सिंध भैरवी कहरवा-गजल ॥

टुक खोज जरा मन लाय खरा,
सिद्ध और नहीं तुं और नहीं । टुक० अंचली ।
अति पूज खरा सिद्ध चक्रधरा,
निज कारण मान अभंग वरा ।
जब पूजा करे सब पाप झरे ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥
उपादान तुही सिद्ध रूप वुही,
है निमित्त खरो सिद्ध चक्र मुही ।
जब ध्याता ध्येय अरु ध्यान मिले ॥सि० २॥
बंधन छेद असंग लही,
गति कारण पूर्व पयोग कही ।
जब गति परिणामका राग गहे ॥ सि० ॥३॥

एक समय गति उर्द्ध करी,
थिर रूप भये सब विघ्न जरी ।
जब ज्योतिसे ज्योति मिले सुधरी ॥सि० ४॥
निर्मल सिद्ध शिलाथी सही,
एक जोयण लोकनो अंत कही ।
जब सादि अनंत स्वरूप गहे ॥ सि० ॥५॥
सुखकी उपमा जगमें नही,
तिण केवल ज्ञानी शके न कही ।
जब सहज समाधीके रंग पगे ॥ सि० ॥६॥
रूपातीत स्वभाव धरे,
शुद्ध केवल ज्ञानही दर्श वरे ।
जब आतमाराम आनंद भरे ॥ सिद्ध० ॥७॥

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम् ।
नवपदावलिनाम सुभक्तितः,
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सिद्धाय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

॥ तृतीयश्रीसूरिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

तीजे पद सूरि नमो, रवि जिम तेज प्रकाश ।
कलह कदाग्रह छोरिके, करे कुमतिका नाश ॥१॥

॥ कलिंगडा-जिनवर वचनं श्रुति अमृतं ॥

सूरिजन अर्चन सुरतरुकंद । सूरिजन० ॥ अं० ॥
तत्वबोध जिन आगम धारी,
सदा निवारी भवभय फंद ॥
षट वर्गे वर्गित गुण शोभे,
पंचाचार धरे निरधंद ॥ सू० ॥ १ ॥

सूत्रानुसारी दीए देशना,
भवि चकोर शशि करत आनंद ॥
चिदानंद रस स्वाद मगनता,
परभावे न खचे मुनि चंद ॥ सू० ॥२॥

निष्कामी निर्मल शुद्ध चिदघन,
दर्शन ज्ञान चरण शिवकंद ॥
साधे साध्य भविक जन बोहे,
गुण संपत निर्मल जिम चंद ॥ सू० ॥३॥

सहज समाधि संवर धारी,
गत उपाधि शक्ति अमंद ॥
बाह्य अभ्यंतर तप गुण भारी,
जारी मोह कर्मको कंद ॥ सू० ॥ ४ ॥

षट पंचाशत संपत सोहे,
खोहे नही सुर रमणी वृंद ॥
जिनशासन आधार सुहंकर,
आतम निर्मल सदाही आनंद ॥ सू० ॥५॥

॥ दोहा ॥

महा मंत्रके ध्यानसे, आचार्य पद लीन ।
पंच प्रस्थाने आतमा, अद्भुत निजगुण पीन ॥१॥

॥ काफी–दीपचंदी ॥ (कोयल टौंक रही मधुवनमें यह चाल.)

सूरिपद पूजन करो मन तनसे,
पाप कलंक नसे एक छिनमें ॥ सूरि० अं०॥

पांच आचार जे सूधा पाले,
भीज गए संजम इक रंगमें ।
सत्योपदेश करे भविजनको,
आचारज माने मोरे मनमें ॥ सू० ॥ १ ॥

वर छत्रीश गुणे करी शोभे,
युग प्रधान शोभे मुनिजनमें ।
जग बोहे न रहे खिण कोहे,
कर्म अरिको हणें इक रनमें ॥ सू० ॥२॥
सदा अप्रमत्त धर्म उपदेशें,
विकथा कषाय नहि निज मनमें ॥
अमल अकलुष अमाय अद्वेषी,
राग रहित जिम वर्षत घनमें ॥ सू० ॥३॥
सारण वारण नोदन करता,
प्रतिनोदन देता मुनिजनमें ।
पटधारी गच्छ थंभ आचारज,
जे मान्या सत भविजन मनमें॥सू० ॥४॥
अस्थमिए जिन सूरज केवल,
चंद गए दीपक सम तममें ।
भुवन पदारथ प्रकटन पटु जे,
आतमराम आनंद भवनमें ॥ सू० ॥५॥

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम् ।

नवपदावलिनाम सुभक्तितः,

शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सूरये जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥



॥ चतुर्थश्रीउपाध्यायपदपूजा. ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र अर्थ विस्तारणे, तत्पर श्री उवझाय ।

नही सूरि पिण सूरिसम, गणको अतिहि सहाय १

(राग खमाच-)

पाठकपद जिनवैन दैन मन समरस भीनोरे, । अं० ।

मोह ममता माया सब भंग,

सूत्र अर्थ दीए द्वादश अंग ।

मदन विहंडन धर्म रंग,

मद सब तज दीनोरे ॥ पाठक ॥ १ ॥

पंच वर्ग वर्गित गुण चंग,

वादि द्विप छेदन वली सिंघ ।

गणि गच्छ धारण थंभ संग,
सुर असुर पूजीनोरे ॥ पाठक ॥ २ ॥
दशविध जति धर्म धरी अंग,
चरण करण उपदेशक रंग ।
धार ब्रह्म नव गुप्ति संग,
जिन वच रस पीनोरे ॥ पा० ॥ ३ ॥
स्याद्वादसे तत्व तरंग,
निजगुण ले परगुण सब भंग ।
करे जिनंद शासन उतंग,
नर भव फल लीनोरे ॥ पा० ॥ ४ ॥
वाचन दान करण अति रंग,
षोडश उपमा योग अभंग ॥
दूर करे सब कर्म संग,
आतम पद लीनोरे ॥ पाठक ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

निकट होइ पढ़िये सदा, जिनवर वचन अभंग ।
सदानंद पाठक पढे, लाग्यो अविहड़ रंग ॥१॥

॥ राग विहाग. ॥

जिनंद मत पाठक पूज सुज्ञानी ॥ अंचली ॥

द्वादश अंग सिझाय करे जे,
    पारग धारक धामी ॥
सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते,
    पाठक नमुं सिर नामी ॥ जि० १ ॥

अर्थ सूत्रके दान विभागे,
    आचार्य उवझाय ॥
भव तीजें लहे शिवपद संपत,
    नमिये ते हर्षाय ॥ जि० ॥ २ ॥

मूर्ख शिष्य करे शुद्ध ज्ञानी,
    ध्यानी चिदघन संगी ॥
उपलको पल्लव सदगुनी करता,
    मोह मिथ्यात्व विरंगी ॥ जि० ॥ ३ ॥

राज कुमर सरिसा गण चिंतक,
    आचारज पद जोगी ॥
बावना चंदन रससम वचने,
    निज आतम सुखभोगी ॥ जि० ॥ ४ ॥

जिनशासनको प्रकट करे जग,
स्वाध्याय तप परवीना ॥
आतमाराम आनंदके ध्याता,
कदेइ नही मन दीना ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम् ।
नवपदावलिनाम सुभक्तितः,
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते पाठकाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥



॥ पंचम श्रीसाधुपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

साधु संजम धारता, दयातणा भंडार ।
इंद्रिय दम युत संजमी, नमो नमो हितकार ।१।

(राग-झिंद काफी । ताल दीपचंदी)

मुनिजन अर्चन शुद्ध मन कर रे,
करंरे करंरे करंरे करंरे ॥ मुनि० ॥अंचली॥
सूरिजन वाचक नित्य सेवा,
समिति गुप्ति शुद्ध धर रे ॥
कामभोग जल दूर तजीने,
ऊर्ध्व कमल जिम तररे तररे तररे तररे।मु०१।
बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि निवारी,
मुक्तिपंथ पग धर रे ॥
अंग अष्ट चित जोग समाधि,
पाप पंक सब झररे झररे झररे झररे ।मु० २।
सकल विषय विष दूर निवारी,
भव दव ताप सु हर रे ॥
शुद्ध स्वरूप रमणता रंगी,
निर्मम निर्मद वररे वररे वररे वररे ॥ मु० ३।
काउसग मुद्रा धीर ध्यानमें,
आसन सहज सुथिर रे ॥
तप तेजे दीपे दया दरियो,
त्रिभुवन वंधु सुगिररे गिररे गिररे गिररे मु०४

ऐसो मुनिपद पूज सुहंकर,
आतम आनंद भर रे ॥
शत्रु मित्र सम जन्म मरणको,
जगत मोक्ष इक कररे कररे कररे कररे॥मु०५

॥ दोहा ॥

क्षमा मुक्ति ऋजु नम्रता, सत्य अकिंचन शर्म ।
तप संजम लघु रमणता, ब्रह्मचर्य मुनि धर्म ॥१॥

(देश-ठुमरी आइ इंद्र नार कर कर शृंगार.)

चिदघन आनंद मुनिराज वंद,
सब कटत फंद भवि पूज रंग ॥
मनमें उमंग समता रस भीना ॥चिद० अं०॥
जिम तरु फूले चैत भृंग,
आतम संतोषें अधिक रंग ॥
विन पीड़े ले मकरंद चंग,
होके आनंद गोचर कर लीना ॥चिद० १
कषाय टार पण इंद्री रोध,
षट काय पार मुनि शुद्ध बोध ॥
संजम सतरे मन शुद्ध सोध,
मचे रणमें जोध मनमें नही दीना ॥चि० २

अठारे सहस्र शिलांग धार,
जयणा युत अचल आचार पार,
नव विध गुप्तिसे ब्रह्म कार,
आतम उजार भववन दव दीना ॥ चि० ३
जे द्वादश विध तप करत चंग,
दिन दिन शुद्ध संयम चढ़त रंग,
सोनाकी परे धरे परिख चंग,
चितमें अभंग संजम रस लीना चि० ॥४॥
देश काल अनुमान नंद,
संयम पाले मुनिराज चंद ॥
मिटे हर्ष शोक परमाद धंद,
आतम आनंद अनुभव रस पीना ॥ चि०५

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम् ।
नवपदावलिनाम सुभक्तितः,
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते साधवे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ षष्ठश्रीसम्यग्दर्शनपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित तत्त्वमें, रुचि लक्षण चित धार।
सम्यग् दर्शन प्रणमिए, भवदुःख भंजन हार. ।१।

(माढ़ । थारी गईरे अनादि निंद । यह चाल)

मिटगईरे अनादि पीर,
चिदानंद जागो तो सही ॥ अंचली ॥
विपरीत कदाग्रह मिथ्यारूप जे,
त्यागो तो सही ।
जिनवर भाषित तत्त्वरूचि,
ढ़िग लागो तो सही ॥ मि० ॥ १ ॥
दर्शन विना ज्ञान नही भविने,
मानो तो सही ।
विना ज्ञानके चरण न होवे,
जानो तो सही । मि० ॥ २ ॥

निश्चय करण रूप जस निर्मल,
शक्ति तो सही ।
अनुभव करत रूप सब छंड़ी,
व्यक्ति तो सही ॥ मि० ॥ ३ ॥
सत्ता शुद्ध निज धर्म प्रगट कर,
छानो तो सही ।
करणरुचि उछले बहु माने,
ठानो तो सही ॥ ॥ मि० ॥ ४ ॥
साध्य दृष्ट सर्व करणी कारण,
धारो तो सही
तत्त्व ज्ञान निज संपत मानी
कारो तो सही ॥ मि० ॥ ५ ॥
आत्माराम आनंदरस लीनो,
प्यारो तो सही ।
जिनवर भाषित सत्य मानकर,
सारो तो सही ॥ मि० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

देव धर्म गुरु तत्त्वकी, सद्दहणा परिणाम ।
सातों मलके मिट गये, सम्यग् दर्शन नाम ॥१॥

(परज । निश दिन जोऊं वाटडी यह चाल.)

सम्यग् दर्शन पूज ले जिम मिटे मन झोला ॥ अं० ।

मल उपशम खय उपशमे,
खयसे दृग खोला ।
त्रि विध भंग सम दर्शने,
जिनवर इम बोला । स० ॥ १ ॥
जिनधर्मे दृढ संगसे,
अनुभव रस घोला ।
निज पर सत्ता ज्ञानसें,
जिम कृमिरंग चोला । स० ॥ २ ॥
पांच वार उपशम लहे,
क्षय उपशम डोला ।
संख्यातीत सो जानीए,
क्षय इंदु अमोला । स० ॥ ३ ॥
जिस विन ज्ञान अज्ञान है,
वृत्ति तरु नवि मोला ।
सुख निर्वाण न भवी लहे,
समकित विन भोला । स० ४ ।

सड़सठ बोले अलंकर्यों,
ज्ञान चरण अंदोला।
भववन मिथ्या दहनको,
दावानल तोला। स० ५।

सब करणीका मूल है,
शिव पंथ अमोला।
दर्शन तेही ज आतमा,
आतम रंग रोला। स० ६।

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम्।
नवपदावलिनाम सुभक्तितः,
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये। १।

।मंत्रः। ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सम्यग्दर्शनाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ६॥

॥ सप्तमश्रीसम्यगज्ञानपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मिथ्या मोह कुपंथ ही, अज्ञ तिमिर करे दूर।
निज पर सत्ता सहु लहे, ज्ञान हि निर्मल सूर। १।

(भैरवी । लागी लागन कहो यह चाल.)

ज्ञान सुहंकर चिद्घन संगी,
सप्तभंगी मत सारेरे ॥ अंचली० ॥
शुद्ध ज्ञान मिथ्यात्व मिटेसे,
ज्ञानावरण विडारेरे ॥
षट द्रव्य नाना बोध स्वरूपे,
निज इच्छा सब वारे रे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥
गुरु सेवासे योग्यता प्रगटे,
हेय उपादेय कारेरे ॥
ज्ञेय अनंत स्वरूपें भासें,
दीप तिमिर जिम टारे रे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥
नित्यानित्य नाश अविनाशी,
भेदाभेद अभंगी रे ॥

एक अनेकही रूपी अरूपी,
स्यादवाद नय संगीरे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥
अर्पितानर्पित मुख्य गौणता,
साधन सिद्ध विरंगी रे ॥
वाच्यावाच्य सअंश निरंशी,
आनंद घन दुःख रंगी रे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥
विभाव स्वभावी शुद्ध स्वभावी,
वीतराग जड़ संगी रे ॥
संशय सर्व ही दूर निवा रे,
आतम समरस चंगी रे ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र संयुत सूचीवत्, कचवर पिंड मझार।
विनसे नही तिम श्रुतयुत, पामे भवको पार ।१।

(कंकण खोल देओ महाराज यह चाल.)

सबमें ज्ञानवंत वड़ वीर,
काटे सकल कर्म जंजीर ॥ अंचली० ॥
भक्षाभक्ष न जे विन जाने,
गम्यागम्य नही पीछाने,
कार्याकार्य न जाने कीर ॥ स० ॥ १ ॥

प्रथमे ज्ञान ही दया पिछाने,
अज्ञानी नर सो नही जाने,
ऐसे कहे सिद्धांते वीर ॥ स० ॥ २ ॥
श्रद्धा सकल क्रियाका मूल,
तिसका मूल ही ज्ञान अमूल,
सच्चा ज्ञान धरो मन धीर ॥ स० ॥ ३ ॥
पांचों ज्ञानमें श्रुत प्रधान,
स्व पर प्रकाश तिमिर मिटान,
जगमें अति उपगारी हीर ॥ स० ॥ ४ ॥
लोकालोक प्रकाशन हारा,
त्रिभुवन सिद्धिराज सुख भारा,
सत्‌चिद्‌ आतमराम गंभीर ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम् ।
नवपदावलिनाम सुभक्तितः,
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सम्यग् ज्ञानाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ अष्टमश्रीसम्यक्चारित्रपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सकल जन्म पूरण करे, नहीं विराधे लेश ।
आराधक चारित्रको, ए जिनवर उपदेश ॥ १ ॥

(वसंत-होरी)

वंदे कछु करले कमाई रे,
जाते नर भव सफल कराई,
वंदे कछु करले कमाई रे ॥ अंचली० ॥
ज्ञान तना फल चरण सुरंगा,
निराशंसता थाई ॥
आश्रव रोध भवांबुधि तरिये,
यानपात्र सुख दाई ॥ वंदे० ॥ १ ॥
धारो चरण नहीं मिले मोले,
रंक राज्य पद दाई ॥
वारह अंग पढे जस महिमा,
क्योंकर वरनी जाई ॥ वंदे० ॥ २ ॥
तत्त्व रमण जस मूल सुहंकर,
पर रमणा मिट जाई ॥

सकल सिद्धि अनुकूल हुए जब,
सम दम संयम पाई ॥ वंदे० ॥ ३ ॥
सामायिक आदि पंच भेद हैं,
दश विध धर्म सुहाई ॥
संवर समिति गुप्ति आदि ले,
ए जस नाम परजाई ॥ वंदे० ॥ ४ ॥
अकषाय अति उज्वल निर्मल,
मदन कदन चित्त लाई ॥
आतमाराम आनंदके दाता,
चारित्र पद मन भाई ॥ वंदे० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

देश सर्व विरति भली, गृही यति अभिराम ।
ते चारित्र सदा जयो, कीजे तास प्रणाम । १ ।

(राग-खमाच-ठुमरी त्रिताल-ब्रह्मज्ञान नहीं जानारे यह चाल.)

चारित्र मुज मन मानारे भविका ॥ चा० ॥ अं० ।
तृण परे जे सब सुख छंडी,
षट खंड केरा रानारे ।
चक्रवर्त्ति संयमसिरी वरिया,
चारित्र अखय सुख दानारे । चा० १ ।

रंक हुआ चारित्र आदरे,
इंद नरिंद पूजानारे ।
असरण सरण चारित्र ही वंदु,
सतचिद आनंद भरानारे । २ ।
बारा मास संयम पर्याये,
अनुत्तर सुख ही कमानारे ।
शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते ऊपर,
सो चारित्र महानारे । चा० ३ ।
चय ते अष्ट कर्मका संचय,
रिक्त करे सब थानारे ।
चारित्र नाम निर्युक्तिए भाष्यो,
ते वंदु गुण ठानारे । चा० ४ ।
चारित्र सोइ आतमा मानो,
निज स्वभाव रमानारे ।
मोह वने नहीं भ्रमण करत है,
तव तुं आतम रानारे । चा० ५ ।

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम् ।

नवपदावलिनाम सुभक्तितः,
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये । १ ।

।मंत्रः । ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सम्यक्
चारित्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥



॥ नवमश्रीसम्यकृतपपदपूजा. ॥

॥ दोहा ॥

कर्म द्रुम उन्मूलने, वर कुंजर अति रंग ।
तप समूह जयवंत ही, नमो नमो मन चंग ॥१॥

(रामकली. तेरो दरस भले पायो यह चाल.)

श्री तप मुज मन भायो आनंदकर ॥ श्री० ॥ अं० ॥
इच्छा रहित कषाय निवारी.
दुर्ध्यान सब ही मिटायो ।
बाह्य अभ्यंतर भेद सुहंकर,
निर्हेतुक चित्त ठायो । आ० १ ।
सर्व कर्मका मूल उखारी,
शिव रमणी चित्त लायो ।

रंक हुआ चारित्र आदरे,
इंद नरिंद पूजानारे।
असरण सरण चारित्र ही वंदु,
सतचिद आनंद भरानारे। २।
वारा मास संयम पर्याये,
अनुत्तर सुख ही कमानारे।
शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते ऊपर,
सो चारित्र महानारे। चा० ३।
चय ते अष्ट कर्मका संचय,
रिक्त करे सब थानारे।
चारित्र नाम निर्युक्तिए भाष्यो,
ते वंदु गुण ठानारे। चा० ४।
चारित्र सोइ आतमा मानो,
निज स्वभाव रमानारे।
मोह वने नहीं भ्रमण करत है,
तब तुं आतम रानारे। चा० ५।

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम्।

नवपदावलिनाम सुभक्तितः,

शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये । १ ।

।मंत्रः । ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सम्यक् चारित्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥



॥ नवमश्रीसम्यक्तपपदपूजा. ॥

॥ दोहा ॥

कर्म द्रुम उन्मूलने, वर कुंजर अति रंग ।
तप समूह जयवंत ही, नमो नमो मन चंग ॥१॥

(रामकली. तेरो दरस भले पायो यह चाल.)

श्री तप मुज मन भायो आनंदकर ॥ श्री० ॥ अं० ॥

इच्छा रहित कषाय निवारी,

दुर्ध्यान सब ही मिटायो ।

बाह्य अभ्यंतर भेद सुहंकर,

निर्हेतुक चित्त ठायो । आ० १ ।

सर्व कर्मका मूल उखारी,

शिव रमणी चित्त लायो ।

अनादि संतति कर्म उछेदी,
महानंद पद पायो । आ० २ ।
योग संयोग आहार निवारी,
अक्रियता पद आयो ।
अंतर मह्रूरत सर्व संवरी,
निज सत्ता प्रकटायो । आ० ३ ।
कर्म निकाचित छिनकमें जारे,
क्षमा सहित सुख दायो ।
तिस भव मुक्ति जाने जिनंदजी,
आदर्‌यो तप निरमायो । आ० ४ ।
आमोसही आदि सब लब्धि,
होवे जास पसायो ।
अष्ट महासिद्धि नव निधि प्रगटे,
सो तप जिनमत गायो । आ० ५ ।
शिवसुख फल सुर नरवर संपद,
पुष्प समान सुभायो ।
सो तप सुरतरु सम नित्य वंदु,
मन वंछित फल दायो । ६ ।

सर्व मंगलमें पहलो मंगल,
जिनवर तंत्र सु गायो ।
सो तप पद त्रिहूं कालमें नमिये,
आतमराम सहायो । आ० ७ ।

॥ दोहा ॥

इच्छा रोधन संवरी, परणति समता जोग ।
तप है सोइ ज आतमा, वरते निजगुण भोग ॥ १ ॥

(राग सोरठ.)

जिनजीने दीनी माने एक जरी,
एक भुजंग पंच विष नागन,
सूंघत तुरत मरी । जि० । अं० ।
समता संवर परगुण छारी,
समरस रंग भरी ।
अचल समाधि तपपद रमतां,
ममता मूर जरी । जि० १ ।
योग असंख ही जिनवर भाषित,
नवपद मूख्य करी ।
कर अवलंबन भवि मन शुद्धे,
कर्म जंजीर जरी । जि० २ ।

आगम नोआगम करी भेदे,
आतम रमण करी ।
सप्तनय सतभंगी अनघ वर,
घटमें ही ऋद्धि धरी । जि० ३ ।
ए नव पद शुद्ध अर्चन करके,
निज घटमें हि धरी ।
चिदानंद घन सहज विलासी,
भववन दाह करी । जि० ४ ।
सिरीपाल सिद्धचक्र आराधी,
तनमन रोग हरी ।
नव भवांतर शिव कमला ले,
आतमानंद भरी । ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

अखिलवस्तुविकासनभास्करं,
मदनमोहतमस्सुविनाशकम् ।
नवपदावलिनाम सुभक्तितः,
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये । १ ।

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सम्यक् तपसे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ कलश ॥

(जंगला—ताल कहरवा)

(भविनंदो जिनंद जस वरणीने यह चाल.)

भवि वंदो जिनंदमत करणीने । भ० । अं० ।
इम नवपद मंडल गुण वरणी,
च्यार न्यास दुःख हरणीने ॥ भ० ॥ १ ॥
सम्यक् सात नयें सव जाणी,
आदरी कुमति विहरणीने ॥ भ० ॥ २ ॥
श्री तपगच्छ नभोमणि वर मुनिपति,
विजयसिंह सूरि चरणीने ॥ भ० ॥ ३ ॥
सत्य कपूर क्षमा जिन उत्तम,
पद्मरूप अघ टरणीने ॥ भ० ॥ ४ ॥
कीर्त्तिविजय कस्तूर सुगंधी,
मणि तिमिर जग हरणीने ॥ भ० ॥ ५ ॥
श्री गुरु बुद्धि विजय महाराजा,
विजयानंद जिन सरणीने ॥ भ० ॥ ६ ॥
जीरा गाम तिहां संघ जयंकर,
सुख संपत उदय करणीने ॥ भ० ॥ ७ ॥

तिनके कथनसे रचना कीनी,

सुगम रीत अघ हरणीने ॥ भ० ॥ ८ ॥

वसु[८] युग[४] अंक[९] इंदु[१] शुभवर्षे,

पट्टी नगर सुख धरणीने ॥ भ० ॥ ९ ॥

रही चौमासा येह गुण गाया,

आतम शिववधू परणीने ॥ भ० ॥ १० ॥

॥ इति नवपदपूजा ॥

॥ सत्तरभेदी पूजा ॥



॥ दोहा ॥

सकल जिनंद मुनींदकी, पूजा सत्तर प्रकार ।
श्रावक शुद्ध भावें करे, पामे भवको पार ॥ १ ॥
ज्ञाता अंगे द्रौपदी, पूजे श्री जिनराज ।
रायपसेणी उपांगमें, हित सुख शिवफल ताज ॥२॥
न्हवण विलेपन वस्त्रयुग, वास फूल वरमाल ।
वर्ण चुन्न ध्वज शोभती, रत्नाभरण रसाल ॥ ३ ॥
सुमनगृह अति शोभतुं, पुष्पपगर मंगलीक ।
धूप गीत नृत्य नादसुं, करत मिटे सब भीक ॥४॥



॥ प्रथमा स्नपनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

शुचि तनु वदन वसन धरी, भरे सुगंध विशाल ।
कनक कलश गंधोदकें, आनी भाव विशाल ॥१॥
नमत प्रथम जिनराजको, मुख बांधी मुखकोष ।
भक्ति युक्तिसे पूजतां, रहे न रंचक दोष ॥ २ ॥

(खमाच ॥ ताल पंजाबी ठेको.)

मान मद मनसे परिहरता,
    करी न्हवण जगदीश ॥ मा० अं० ॥
समकितनी करनी दुःख हरनी,
    जिन पखाल मनमें धरता ।
अंग उपांग जिनेश्वर भाखी,
    पाप पड़ल जरता ॥ मा० ॥ १ ॥
कंचन कलश भरी अति सुंदर,
    प्रभु स्नान भविजन करता ॥
नरक वैतरणी कुमति नासे,
    महानंद वरता ॥ मा० ॥ २ ॥
काम क्रोधकी तपत मिटावे,
    मुक्तिपंथ सुख पग धरता ॥
धर्म कल्पतरु कंद सींचतां,
    अमृत घन झरता ॥ मा० ॥ ३ ॥
जन्म मरणका पंक पखारी,
    पुण्य दशा उदये करता ॥
मंजरी संपद तरु वर्द्धनकी,
    अक्षय निधि भरता ॥ मा० ॥ ४ ॥

मनकी तस मिटि सब मेरी,
पदकंज ध्यान हिये धरता ॥
आतम अनुभव रसमें भीनो,
भव समुद्र तरता ॥ मा० ॥ ५ ॥



॥ द्वितीया विलेपनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

गात्र लुही मन रंगसुं, महके अतिहि सुवास ॥
गंधकषायी वसनसुं, सकल फले मन आस ॥१॥
चंदन मृगमद कुंकुमें, भेली मांहि बरास ॥
रतन जड़ित कचोलीयें, करी कुमतिको नास ॥२॥
पग[१] जानु[२] कर[३] खंध[४]में, मस्तक[५] जिनवर अंग ॥
भाल[६] कंठ[७] उर[८] उदर[९]में, करे तिलक अति चंग ॥३॥
पूजक जन निज अंगमें, रचे तिलक शुभचार ॥
भाल कंठ उर उदरमें, तस मिटावनहार ॥ ४ ॥

(कुसरी-पंजाबी ठेको-माधुवनमें मेरे मावरीया-देशी)

करी विलेपन जिनवर अंगें,
जन्म सफल भविजन माने ॥ क० ॥ १ ॥

मृगमद चंदन कुंकुम घोली,
नव अंग तिलक करी थाने ॥ क० ॥२॥
चक्री नव निधि संपद् प्रगटे,
करम भरम सब क्षय जाने ॥ क० ॥३॥
मन तनु शीतल सब अघ टारी,
जिनभक्ति मन तनु ठाने ॥ क० ॥ ४ ॥
चौसठ सुरपति सुर गिरि रंगें,
करी विलेपन धन माने ॥ क० ॥ ५ ॥
जागी भाग्य दशा अब मेरी,
जिनवर वचन हिये ठाने ॥ क० ॥ ६ ॥
परम शिशिरता प्रभु तन करतां,
चित् सुख अधिके प्रगटाने ॥ क० ॥७॥
आतमानंदी जिनवर पूजी,
शुद्ध स्वरूप निज घट आने ॥ क० ॥८॥



॥ तृतीया वस्त्रयुगलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

वसनयुगल अति उज्ज्वलें, निर्मल अतिही अभंग।
नेत्रयुगल सूरि कहे, यही मतांतर संग ॥ १ ॥

कोमल चंदन चरचिये, कनक खचित वर चंग ॥
है पल्लव शुचि प्रभु शिरें, पहिरावे मन रंग ॥२॥
द्रौपदी शक्र सुरियाभनें, पूजे जिम जिनचंद ॥
श्रावक तिम पूजन करे, प्रगटे परमानंद ॥ ३ ॥
पाप भूहण अंग लूहणां, दीजें पूजन काज ॥
सकल करम मल क्षय करी, पामे अविचल राज ४

(सोरठ-पंजाबी ठेको-कुबजाने जादुडारा-देशी)

जिनदर्शन मोहनगारा,
जिने पाप कलंक पखारा ॥ जि० ॥अं०॥
पूजा वस्त्र युगल शुचि संगें,
भावना मनमें विचारा ।
निश्चय व्यवहारी तुम धर्में,
वरनुं आनंदकारा ॥ जि० ॥ १ ॥
ज्ञान क्रिया शुद्ध अनुभव रंगे,
करूं विवेचन सारा ।
स्व पर सत्ता धरुं हरुं सव,
कर्म कलंक पहारा ॥ जि० ॥ २ ॥
केवल युगल वसन अर्चितसे,
मांगत हुं निरधारा ।

कल्पतरु तुं वंछित पूरे,
चूरे करम कठारा ॥ जि० ॥ ३ ॥
भवोदधि तारण पोत मीला तुं,
चिद्घन मंगल कारा ।
श्री जिनचंद जिनेश्वर मेरे,
चरण शरण तुम धारा ॥ जि० ॥ ४ ॥
अजर अमर अज अलख निरंजन,
भंजन करम पहारा ।
आतमानंदी पाप निकंदी,
जीवन प्राण आधारा ॥ जि० ॥ ५ ॥



॥ चतुर्थी गंधपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चौथी पूजा वासकी, वासित चेतन रूप ॥
कुमति कुगंधी मिटी गइ, प्रगटे आतमरूप ॥१॥
सुमति अति हर्षित भइ, लागी अनुभव वास ।
वास सुगंधे पूजतां, मोह सुभटको नास ॥ २ ॥
कुंकुम चंदन मृगमदा, कुसुम चूर्ण घनसार ।
जिनवर अंगें पूजतां, लहियें लाभ अपार ॥ ३ ॥

(राग जंगलो–अब मोहे डागरीया देशी)

अब मोहे पार उतार जिनंदजी
अब मोहे पार उतार ।
चिदानंद घन अंतरजामी,
अब मोहे पार उतार ॥ अंचलि ॥
वासखेपसें पूजन करतां,
जनम मरण दुःख टार ॥ जि० ॥
निजगुण गंध सुगंधी महके,
दहे कुमति मद मार ॥ जि० ॥ १ ॥
जिन पूजत ही अति मन रंगें,
भंगे भरम अपार ॥ जि० ॥
पुद्गल संगी दुर्गंध नाठो,
वरते जय जयकार ॥ जि० ॥ २ ॥
कुंकुम चंदन मृगमद मेली,
कुसुम गंध घनसार ॥ जि० ॥
जिनवर पूजन रंगें राचे,
कुमति संग सब छार ॥ जि० ॥ ३ ॥
विजय देवता जिनवर पूजें,
जीवाभिगम मझार ॥ जि० ॥

श्रावक तिम जिन वासें पूजें,
गृहस्थ धर्मको सार ॥ जि० ॥ ४ ॥
समकितकी करणी शुभ वरणी,
जिन गणधर हितकार ॥ जि० ॥
आतम अनुभव रंग रंगीला,
वास यजनका सार ॥ जि० ॥ ५ ॥



॥ पंचमी पुष्पारोहणपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मन विकसे जिन देखतां, विकसित फूल अपार।
जिन पूजा ए पंचमी, पंचमी गति दातार॥ १॥
पंच वरणके फूलसें, पूजे त्रिभुवन नाथ ।
पंच विघन भवि क्षय करी, साधे शिवपुर साथ ॥२॥

(कहेरवा-ठुमरी-पास जिनंदा प्रभु, मेरे मन वसीया-देशी)

अर्हन् जिनंदा प्रभु मेरे मन वसीया ॥ अं० ॥
मोगर लाल गुलाव मालती,
चंपक केतकी निरख हरसीया ॥ अ० ॥ १ ॥
कुंद प्रियंगु वेलि मचकुंदा,
बोलसिरी जाइ अधिक दरसीया ॥ अ० ॥ २ ॥

जल थल कुसुम सुगंधी महके,
जिनवर पूजन जिम हरि रसीया ॥ अ० ॥ ३ ॥
पंच वाण पीड़े नहीं मुझको,
जव प्रभु चरणे फूल फरसीया ॥ अ० ॥ ४ ॥
जड़ता दूर गई सव मेरी,
पांच आवरण उखार धरसीया ॥ अ० ॥ ५ ॥
अवर देवको आक धत्तूरा,
तुमरे पंच रंग फूल वरसीया ॥ अ० ॥ ६ ॥
जिन चरणे सहु तपत मिटत है,
आतम अनुभव मेघ वरसीया ॥ अ० ॥ ७ ॥

॥ षष्ठी पुष्पमालापूजा ॥

॥ दोहा ॥

छट्ठी पूजा जिन तणी, गूंथी कुसुमकी माल ॥
जिन कंठे थापी करी, टालियें दुःख जंजाल ॥ १ ॥
पंच वरण कुसुमें करी, गूंथी जिन गुण माल ॥
वरमाला ए मुक्तिकी, वरे भक्त सुविशाल ॥ २ ॥

(राग जंगलो ॥ ताल दीपचंदी ॥)

कुसुममालसें जो जिन पूजें,
कर्म कलंक नसे भवि तेरे ॥ कु० अं० ॥

नाग पुन्नाग प्रियंगु केतकी,
चंपक दमनक कुसुम घनेरे ॥
मल्लिका नव मल्लिका शुद्ध जाति,
तिलक वसंतिक सब रंग है रे ॥ कु० ॥ १ ॥
कल्प अशोक बकुल मगदंती,
पाडल मरुक मालती लेरे ॥
गूंथी पंच वरणकी माला,
पाप पंक सब दूर करे रे ॥ कु० ॥ २ ॥
भाव विचारी निजगुण माला,
प्रभुसें मांगे अरज करे रे ॥
सर्व मंगलकी माला रोपें,
विघन सकल सब साथ जरे रे ॥ कु० ॥ ३ ॥
आतमानंदी जगगुरु पूजी,
कुमति फंद सब दूर भगे रे ॥
पूरण पुण्यें जिन वर पूजें,
आनंदरूप अनूप जगे रे ॥ कु० ॥ ४ ॥

सप्तमी अंगरचनापूजा ॥

॥ दोहा ॥

पांच वरणके फूलकी, पूजा सातमी मान ॥
प्रभु अंगें अंगी रची, लहियें केवलज्ञान ॥ १ ॥
मुक्तिवधूकी पत्रिका, वरणी श्री जिनदेव ॥
सुधी तत्व समजे सही, मूढ़ न जाणे भेव॥२॥

(तुम दीनके नाथ दयाल लाल ॥ ए देशी)

तुम चिदघन चंद आनंद लाल,
तोरे दर्शन की बलिहारी ॥ तु० ॥१॥
पंचवरण फूलोंसें अंगीयां,
विकसें ज्यूं केसर क्यारी ॥ तु० ॥२॥
कुंद गुलाब मरुक अरविंदो,
चंपक जाति मंदारी ॥ तु० ॥ ३ ॥
सोवन जाती दमनक सोहे,
मन तनु तजित विकारी ॥ तु० ॥४॥
अलख निरंजन ज्योति प्रकासे,
पुदगल संग निवारी ॥ तु० ॥ ५ ॥
सम्यग् दर्शन ज्ञानस्वरूपी.
पूर्णानंद विहारी तु० ॥ ६ ॥

आतम सत्ता जबही प्रगटे,
तब ही लहे भव पारी ॥ तु० ॥ ७ ॥



अष्टमी चूर्णपूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनपति पूजा आठमी, अगर भला घन सार ॥
सेलारस मृगमद करी, चूरण करी अपार ॥१॥
चुन्नारोहण पूजना, सुमति मन आनंद ॥
कुमति जन खीजे अति, भाग्यहीन मतिमंद ॥२॥

(जोगीयो–नाथ मैंनुं छडके गढ़ गिरनार गयो री देशी)

करम कलंक दह्यो री,
नाथ जिन जजके ॥ करम० ॥ अं० ॥
अगर सेलारस मृगमद चूरी,
अति घनसार मह्यो री ॥ ना० ॥ १ ॥
तीर्थंकर पद शांति जिनेश्वर,
जिन पूजीने ग्रह्यो री ॥ ना० २ ॥
अष्ट करम दल उदभट चूरी,
तत्वरमणको लह्यो री ॥ ना० ॥ ३ ॥
आठो ही प्रवचन पालन शूरा,
दृष्टि आठ रह्यो री ॥ना० ॥ ४ ॥

श्रद्धा भासन रमणता प्रगटे,
श्री जिनराज कह्यो री ॥ ना० ॥ ५ ॥
आतम सहजानंद हमारा,
आठमी पूजा चह्यो री ॥ ना० ॥ ६ ॥

॥ नवमी ध्वजपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पंचवरण ध्वज शोभती, घूंघरिको घमकार ॥
हेम दंड मन मोहनी, लघू पताका सार ॥ १ ॥
रणझण करती नाचती, शोभित जिनघर शृंग ॥
लहके पवन झकोरसे, वाजत नाद अभंग ॥ २ ॥
इंद्राणी मस्तक लई, करे प्रदक्षिणा सार ॥
सधवा तिम विधि साचवे, पाप निवारणहार ॥ ३ ॥

(ठुमरी पंजाबी ठेको आई इंद्र नार देखो)

आइ सुंदर नार, कर कर सिंगार,
ठाडी चैत्य द्वार, मन मोद धार,
प्रभु गुण विचार, अघ सब क्षयकीनो ॥ आ० ॥ १ ॥
जोजन उतंग, अति सहस चंग,
गइ गगन लंघ, भवि हरख संग ॥
सब जग उतंग, पद छिनकर्म लीनो ॥ आ० ॥ २ ॥

जिम ध्वज उतंग, तिम पद अभंग,
जिन भक्तिरंग, भवि मुक्ति मंग,
चिद्‌घन आनंद, समतारस भीनो ॥ आ० ॥ ३ ॥
अब तार नाथ, मुज कर सनाथ,
तज्यो कुगुरु साथ, मुज पकड़ हाथ,
दीनाके नाथ, जिनवच रस पीनो ॥ आ० ॥ ४ ॥
आतम आनंद, तुम चरण वंद,
सब कटत फंद, भयो शिशिर चंद ॥
जिन पठित छंद, ध्वजपूजन कीनो ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ दशमी आभरण पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शोभित जिनवर मस्तकें, रयण मुकुट झलकंत ॥
भाल तिलक अंगद भुजा, कुंडल अति चमकंत ।१॥
सुरपति जिन अंगें रचें, रत्नाभरण विशाल ॥
तिम श्रावक पूजा करे, कटे करम जंजाल ॥२॥

(जंगलो, ताल दादरो ॥ अंग्रेजी वाजेकी चाल)

आनंद कंद पूजतां जिनंद चंद हुं ॥ अं० ॥
मोती ज्योति लाल हीर हंस अंक ज्युं ।
कुंडल सुधार करण मुकुट धार तुं ॥ आ० ॥१॥

सूर चंद कुंडलें शोभित कान दूं ॥
अंगद कंठ कंठलो मुनींद तार तुं ॥आ०॥२॥
भाल तिलक चंग रंग खंग चंग ज्युं ॥
चमक दमक नंदनी कंदर्प जीत तुं ॥ आ०॥३॥
व्यवहार भाष्य भाखीयो जिनंद बिंब शुं ॥
करे सिंगार फार कर्म जार जार तुं ॥ आ०॥४॥
वृद्धि भाव आतमा उमंग कार तुं ॥
निमित्त शुद्ध भावका पियार कार तुं ॥आ०॥५॥



॥ एकादशी पुष्पगृहपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पुष्पघरो मन रंजनो, फूले अदभुत फूल ॥
महके परिमल वासना, रहके मंगलमूल ॥ १ ॥
शोभित जिनवर वीचमें, जिम तारामें चंद ॥
भवि चकोर मन मोदसे, निरखी लहे आनंद ॥२॥

(खमाच, पंजाबीटप्पो. शांति वदन फल देख नयन देशी)

चंदवदन जिन देख नयन,
मन अमीरस भीनोरे ॥ अंचलि ॥
राय वेल नव मालिका कुंद,

मोगर तिलक जाति मचकुंद ॥
केतकी दमनक सरस रंग,
चंपक रस भीनो रे ॥ चं० ॥ १ ॥
इत्यादिक शुभ फूल रसाल,
घर विरचे मन रंजन लाल ॥
जाली झरोखा चितरी शाल,
सुर मंडप कीनोरे ॥ चं० ॥ २ ॥
गुच्छ झुमखां लंबां सार,
चंदुआ तोरण मनोहार ॥
इंद्रभुवनको रंगधार,
भव पातक छीनोरे ॥ चं० ॥ ३ ॥
कुसुमायुधके मारन काज,
फूलघरे थापे जिनराज ॥
जिम लहियें शिवपुरको राज,
सब पातक खीनोरे ॥ चं० ॥ ४ ॥
आतम अनुभव रसमें रंग,
कारण कारज समझ तुं चंग ॥
दूर करो तुम कुगुरु संग,
नरभव फल लीनोरे ॥ चं० ॥ ५ ॥

॥ द्वादशी पुष्पवर्षणपूजा ॥

॥ दोहा ॥

बादल करी वर्षा करे, पंचवरण सुर फूल ॥
हरे ताप सब जगतको, जानुदघन अमूल ॥१॥

॥ अडिल छंद ॥

फूल पगर अति चंग, रंग बादर करी,
परिमल अति महकंत, मिले नर मधुकरी ॥
जानुदघन अति सरस, विकच अधो बींट है ।
बरसे बाधा रहित, रचे जिम छींट है ॥ १ ॥

(बसंत-दीपचंदी-साचा साहिब मेरा चिंतामणी स्वामी-देशी)

मंगल जिन नामें आनंद भविको घनेरा । अं०।
फूल पगर बदरी झरी रे,
हेठ बींट जिनकेरा । मं० ॥ १ ॥
पीड़ा रहित ढिग मधुकर गुंजे,
गावत जिन गुण तेरा । मं० ॥ २ ॥
ताप हरे तिहुं लोकका रे,
जिन चरणों जस डेरा ॥ मं० ॥ ३ ॥
अशुभ करम दल दूर गये रे,
श्री जिन नाम रटेरा ॥ मं० ॥ ४ ॥

आतम निर्मल भाव करीने,
पूजे मिटत अंधेरा ॥ मं० ॥ ५ ॥

॥ त्रयोदशी अष्टमंगलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्तिक दर्पण कुंभ है, भद्रासन वर्धमान ॥
श्रीवछ नंदावर्त्त है, मीनयुगल सुविधान ॥ १ ॥
अतुल विमल खंडित नहीं, पंच वरण के साल ॥
चंद्र किरण सम उज्जलें, युवती रचे विशाल ॥२॥
अति सलक्षण तंदुलें, लेखी मंगल आठ ॥
जिनवर अंगें पूजतां, आनंद मंगल ठाठ ॥ ३ ॥

(श्रीराग–जिन गुण गानं श्रुति अमृतं देशी)

मंगलपूजा सुरतरुकंद ॥ अंचलि ॥
सिद्धि आठ आनंद प्रपंचे,
आठ करमका काटे फंद ॥ मं० ॥ १ ॥
आठों मद भये छिकनमें दूरे,
पूरे अड गुण गये सब धंद ॥ मं० ॥ २ ॥
जो जन आठ मंगलसुं पूजें
तस घर कमला केलि करंद ॥ मं० ॥ ३ ॥

आठ प्रवचन सुधा रस प्रगटे,
सूरि संपदा अतिही लहंद ॥ मं० ॥ ४ ॥
आतम अड़गुण चिदघन राशि,
सहज विलासी आतम चंद ॥ मं० ॥ ५ ॥



॥ चतुर्दशी धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मृगमद अगर सेलारस, गंधवट्टी घनसार ।
कृष्णागर शुद्ध कुंदरु, चंदन अंबर भार ।१।
सुरभि द्रव्य मिलायके, करें दशांगज धूप॥
धूपदानमें ले करी, पूजे त्रिभुवनभूप ॥ २॥

(राग पीलु ॥ ताल–दीपचंदी)

मेरे जिनंदकी धूपसें पूजा,
कुमति कुगंधी दूर हरी रे ॥ मेरे० ॥
रोग हरे करे निजगुण गंधी,
दहे जंजीर कुगुरुकी बंधी,
निर्मल भाव धरे जग धंदी,
मुजे उतारो पार, मेरे करतार,
के अघ सब दूर करीरे ॥ मे० ॥ १ ॥

ऊर्ध्व गति सूचक भवि केरी,
परम ब्रह्म तुम नाम जपेरी,
मिथ्या वास दुखरास झरे री,
करो निरंजन नाथ, मुक्तिका साथ,
के ममता मूर जरीरे ॥ मे० ॥२॥
धूपसें पूजा जिनवर केरी,
मुक्तिवधू भइ छिनकमें चेरी,
अव तो क्यों प्रभु कीनी देरी,
तुमही निरंजन रूप, त्रिलोकी भूप,
के विपदा दूर करी रे ॥ मे० ॥ ३ ॥
आतम मंगल आनंद कारी,
तुमरी चरण सरण अव धारी,
पूजे जेम हरि तेम आगारी,
मंगल कमला कंद, शरदका चंद,
के तामस दूर हरीरे ॥ मे० ॥ ४॥

॥ पंचदशी गीतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

ग्राम भले आलापिने, गावे जिनगुण गीत ।
भावे सुधी भावना, जावे परम पुनीत ॥ १ ॥

फल अनंत पंचाशके, भाखे श्री जगदीश ।
गीत नृत्य शुध नादसे, जो पूजें जिन ईश ॥ २ ॥
तीन ग्राम स्वर सातसे, मूरछना इक वीस ।
जिन गुण गावें भक्तिसुं, तार तीस उगणीस ॥३॥

(राग श्रीराग–ठेको पंजाबी)

जिन गुण गावत सुरसुंदरी ॥ अंचलि ॥
चंपक वरणी सुर मनहरणी,
चंद्रमुखी शृंगार धरी ॥ जि० ॥ १ ॥
ताल मृदंग वंसरी मंडल,
वेणु उपांग धुनि मधुरी ॥ जि० ॥ २ ॥
देव कुमार कुमारी आलापे,
जिनगुण गावे भक्ति भरी ॥ ३ ॥
नकुल मुकुंद वीण अति चंगी,
ताल छंद अयति सिमरी ॥ जि० ॥ ४ ॥
अलख निरंजन ज्योति प्रकाशी,
चिदानंद सत्‌रूप धरी ॥ जि० ॥ ५ ॥
अजर अमर प्रभु ईश शिवंकर,
सर्व भयंकर दूर हरी ॥ जि० ॥ ६ ॥

आतम रूप आनंद घन संगी,
रंगी निज गुण गीत करी ॥ जि० ॥७॥



॥ षोडशी नाटकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

नाटक पूजा सोलमी, सजी सोले श्रृंगार ।
नाचे प्रभुके आगलें, भव नाटक सब टार ॥१॥
देव कुमर कुमरी मिली, नाचे इक शत आठ॥
रचे संगीत सुहावना, बत्तिस विधका नाट ॥२॥
रावण ने मंदोदरी, प्रभावती सुरियाभ ॥
द्रौपदी ज्ञाता अंगमें, लियो जन्मको लाभ ॥३॥
टारो भव नाटक सवी, हे जिन दीन दयाल !
मिल कर सुर नाटक करे, सुघर बजावे ताल ॥४॥

(राग कल्याण ॥ ताल दादरो)

नाचत सुर वृंद छंद, मंगल गुन गारी ॥अं०॥
कुमर कुमरी कर संकेत,
आठ शत मिल भ्रमरी देत ॥
मंद्र तार रण रणाट,
घुंघुरु पग धारी ॥ ना० ॥ १ ॥

वाजत जिहां मृदंग ताल,
धप मप धुधुम किट धमाल ॥
रंग चंग द्रंग द्रंग,
त्रौं त्रौं त्रिक तारी ॥ ना० ॥ २ ॥
तता थेइ थेइ तान लेत,
मुरज राग रंग देत ॥
तान मान गान जान,
किट नट धुनि धारी ॥ ना० ॥ ३ ॥
तुं जिनंद शिशिर चंद,
मुनिजन सब तार वृंद ॥
मंगल आनंद कंद,
जय जय शिवचारी ॥ ना० ॥ ४ ॥
रावण अष्टापद गिरींद,
नाच्यो सब साज संग ॥
बांध्यो जिन पद उतंग,
आतम हितकारी ॥ ना० ॥ ५ ॥

॥ सप्तदशी वाद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

तत वितत घन झूसरे, वाद्य भेद ए चार ।
विविध ध्वनि कर शोभती, पूजा सतरमी सार १
समवसरणमें वाजिया, नाद तणा झंकार ॥
ढोल दमामा दुदुंभी, भेरी पणव उदार ॥२॥
वेणू वीणा किंकिणी, षड् भ्रामरी मरदंग ॥
झल्लरी भंभा नादसुं, शरणाई मुरजंग ॥ ३ ॥
पंच शब्द वाजे करी, पूजे श्री अरिहंत ।
मनवांछितफल पामियें, लहियें लाभ अनंत ॥ ४ ॥

(जंगलो–मन मोह्या जंगलकी हरणीने–एदेशी)

भवि नंदो जिनंद जस वरणीने ॥ अं० ॥
वीण कहे जग तुं चिरनंदी,
धन धन जग तुम करणीने ॥ भ० ॥१॥
तुं जग नंदी आनंद कंदी,
तबली कहे गुण वरणीने ॥ भ० ॥ २ ॥
निर्मल ज्ञान वचन मुख साचे,
तूण कहे दुःख हरणीने ॥ भ० ॥ ३ ॥

कुमति पंथ सब छिनमें नासे,
जिनशासन उदे धरणीने ॥ भ० ॥ ४ ॥
मंगल दीपक आरति करनां,
आतम चित्त शुभ भरणीने ॥ भ० ॥५॥



॥ अथ कलश ॥

॥ रेखता ॥

जिनंद जस आज में गायो,
गयो अघ दूर मो मनको
शत अठ काव्य हूं करके,
थुण सब देव देवनको ॥ जि० ॥१॥
तप गच्छ गगन रवि रूपा,
हुआ विजयसिंह गुरु भूपा ।
सत्य कर्पूर विजय राजा,
क्षमा जिन उत्तमा ताजा ॥ जि० ॥२॥
पद्म गुरु रूप गुण भाजा,
कीर्ति कस्तूर जग छाजा ॥
मणि बुद्धि जगतमें गाजा,
मुक्ति गणि संप्रति राजा ॥ जि० ॥ ३ ॥

विजय आनंद लघु नंदा,
निधि शिखी अंक है चंदा (१९३९)॥
अंबाले नगरमें गायो
निजातम रूप हूं पायो ॥ जि० ॥४॥

॥ इति सत्तरभेदी पूजा ॥



॥ अथ विंशतिस्थानक पूजा ॥



॥ प्रथमा अरिहंतपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

समरस रसभर अघहर, करम भरम सब नास ॥
कर मन मगन धरम धर, श्रीशंखेश्वर पास ॥१॥
वस्तु सकल प्रकाशिनी, भासिनी चिद्‌घनरूप ॥
स्याद्‌वाद मत काशिनी, जिनवाणी रसकूप ॥२॥
छट्ठे अंग आवश्यकें, वीश निमित्त विधान ॥
ते साधे जिनपद लहे, अजर अमरकी खान ॥३॥
जिन गणधर वाणी नमी, आणी भाव उदार ॥
विंशति पद पूजन विधि, कहिसुं विधि विस्तार ॥४॥

विंशति तप पद सारिखी, करणी अवर न कोय ॥
जो भविसाधें रंगसुं, अर्हन्रूपी होय ॥ ५ ॥
क्रमसें पीठ त्रिकोपरि, थापी जिनवर वीश ॥
सामग्री सहु मेलके, पूजें त्रिभुवन ईश ॥ ६ ॥
एक एक पद पूजीयें, पंच अष्ट सत्तार ॥
द्रव्यार्चनविधि जाणियें, इग विस विधि विस्तार ७

(धन्याश्री-दो नयणांदा मारया मरजांदा परदेशीडा ए देशी)

अरिहंत पद मनरंग,
चिदानंद अरिहंतपद० ॥ अंचलि ॥
चिदानंदघन मंगलरूपी,
मिथ्या तिमिर दिणंद ॥ चि० १ ॥
चौतिस अतिशय पंतिस वाणी,
गुण वारे सुखकंद ॥ चि० २ ॥
महागोप महामाहण कहियें,
काटे भव भव फंद ॥ चि० ३ ॥
निर्यामक सत्थवाह भणीजें,
भवि चकोर मन चंद ॥ चि० ४ ॥
चार निक्षेप रूप जग रंजन,
भंजन करम नरिंद ॥ चि० ॥ ५ ॥

विजय आनंद लघु नंदा,
निधि शिखी अंक है चंदा (१९३९)॥
अंबाले नगरमें गायो
निजातम रूप हूं पायो ॥ जि० ॥४॥

॥ इति सत्तरभेदी पूजा ॥

॥ अथ विंशतिस्थानक पूजा ॥

॥ प्रथमा अरिहंतपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

समरस रसभर अघहर, करम भरम सब नास ॥
कर मन मगन धरम धर, श्रीशंखेश्वर पास ॥१॥
वस्तु सकल प्रकाशिनी, भासिनी चिद्‌घनरूप ॥
स्याद्‌वाद मत काशिनी, जिनवाणी रसकूप ॥२॥
छट्ठे अंग आवश्यकें, वीश निमित्त विधान ॥
ते साधे जिनपद लहे, अजर अमरकी खान ॥३॥
जिन गणधर वाणी नमी, आणी भाव उदार ॥
विंशति पद पूजन विधि, कहिसुं विधि विस्तार ॥४॥

विंशति तप पद सारिखी,करणी अवर न कोय ॥
जो भविसाधें रंगसुं, अर्हन्रूपी होय ॥ ५ ॥
क्रमसें पीठ त्रिकोपरि, थापी जिनवर वीश ॥
सामग्री सहु मेलके, पूजें त्रिभुवन ईश ॥ ६ ॥
एक एक पद पूजीयें, पंच अष्ट सत्तार ॥
द्रव्यार्चनविधि जाणियें, इग विस विधि विस्तार ७

(धन्याश्री-दो नयणांदा मारया मरजांदा परदेशीडा ए देशी)

अरिहंत पद मनरंग,
चिदानंद अरिहंतपद० ॥ अंचलि ॥
चिदानंदघन मंगलरूपी,
मिथ्या तिमिर दिणंद ॥ चि० १ ॥
चौतिस अतिशय पेंतिस वाणी,
गुण बारे सुखकंद ॥ चि० २ ॥
महागोप महामाहण कहियें,
काटे भव भव फंद ॥ चि० ३ ॥
निर्यामक सत्थवाह भणीजें,
भवि चकोर मन चंद ॥ चि० ४ ॥
चार निक्षेप रूप जग रंजन,
भंजन करम नरिंद ॥ चि० ॥ ५ ॥

अवर देव वामा वश कीने,
तुं निकलंक महिंद ॥ चि० ६ ॥
ज्ञायक नायक शुभगति दायक,
तुं जिन चिद्घन वृंद ॥ चि० ७ ॥
देवपाल श्रेणिक पद साधी,
अरिहंत पद निपजंद ॥ चि० ८ ॥
सर्व शिवंकर ईश निरंजन,
गत कलिमल सब धंद ॥ चि० ९ ॥
जिनके पंच कल्याणक जगमें,
करे उद्योत अमंद ॥ चि० १० ॥
आतम निर्मल भाव करीने,
पूजें त्रिभुवन इंद ॥ चि० ११ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

अतिशयादिगुणाऽधिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते अर्हते जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ द्वितीया सिद्धपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

तनु त्रिभाग दूरें करी, घन स्वरूप अघनाश ॥
ज्ञान स्वरूपी अगम गति, लोकालोक प्रकाश १
अक्षर अमर अगोचरा, रूप रेख विन लाल ॥
जे पूजें सो भवि लहे, अर्हन् पद उजमाल ॥२॥

॥ पीलु–ताल दीपचंदी ॥

(कान्हा मैं नहि रहना रे, तुमचे रे संग चलुं–देशी)

सिद्ध अचल आनंदी रे,
ज्योतिमें ज्योति मिली ॥ अंचलि ॥
अज अलख अमूरति रे,
निज गुण रंग रली ॥ सि० ॥ १ ॥
शिव अजर अनंगी रे,
करमको कंद दली ॥ सि० ॥ २ ॥
समय एकमें त्रिपदी रे,
नास थिर आविर वली ॥ सि० ॥ ३ ॥
ऋजु एक समय गतिका रे,
अनंत चतुष्टय मिली ॥ सि० ॥ ४ ॥

गुण एक त्रिश धारी रे,
निर्मल पाप गली ॥ सि० ॥ ५ ॥
त्रिहुं कालके देवा रे,
सब सुख मेल मिली ॥ सि० ॥ ६ ॥
गुणानंत करीजें रे,
वर गित वरग वली ॥ सि० ॥ ७ ॥
नभ एक प्रदेशे रे,
सब सुख पुंज भिलि ॥ सि० ॥ ८ ॥
लोकालोक न मावे रे,
जिनवर तंत्र चली ॥ सि० ॥ ९ ॥
बंधन छेद असंगा रे,
पूर्व प्रयोग फली ॥ सि० ॥ १० ॥
गति करण निदाना रे,
सुमति संग भली ॥ सि० ॥ ११ ॥
हस्तिपाल आराधी रे,
जिनपद सिद्ध तुली ॥ सि० ॥ १२ ॥
प्रभु आतमानंदी रे,
पूजत कुमति टली ॥ सि० ॥ १३ ॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाद्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सिद्धाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥



॥ तृतीया प्रवचनपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

त्रिजे प्रवचन पूजीयें, करी कुमतिसंग दूर ॥
मिथ्या मत टाली सवे, जन्म मरण दुःख चूर ॥१॥
भाव रोगकी ओषधि, अमृत सिंचनहार ॥
भव भय ताप निवारिणी, अरिहंत पद फलकार २

॥ राग [illegible] ॥

प्रवचन पद भवपार उतारे,
पूजो भवि मन रंग रे ॥ प्रव० ॥ अंचलि ॥

प्रवचन अमृत रस भरी ध्यानें,
चिद्घन रंग रंगील रे ॥
कुमति जाल सब छिनकमें जारे,
प्रगटे अनुभव लील रे ॥ प्र० ॥ १ ॥
तीनसो साठ तीन मतधारी,
जगमें तिमिर अज्ञान रे
जयो जिनवचन सूर तम नाशक,
भासक अमल निधान रे ॥ प्र० ॥ २ ॥
सप्तभंगी नय सप्त सुहंकर,
युक्त मान दोय सार रे ॥
षड्भंगी उत्सर्गादिककी,
अड़ पक्ष सम्यक कार रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥
प्रवचनाधार संघ जग साचो,
जिन पूजें भव पार रे ॥
अरिहंत धर्म कथानक अवसर,
करत प्रथम नमोकार रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥
प्रवचन अमृत जलधर वरसे,
भवि मन अधिक उल्लास रे ॥

कुमति कुपंथ अंधजन जे ते,
सूकत जैसे जवास रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥
संभव नर पति प्रवचन साधी,
तीर्थंकर पद थान रे ॥
पंच अंग ताली सदगुरुकी,
प्रवचन संघ निधान रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥
आतम अनुभव रत्न सुहंकर,
अचर अनघ पद खान रे ॥
जो भवि पूजें मन तन सूधें,
अरिहंत पदका निदान रे ॥प्र० ॥७॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाधिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते प्रवचनाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ चतुर्थी सूरिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चोथे पद सूरि नमो, चरण करण पद धार ॥
सारण वारण नोदना, प्रतिनोदन करतार ॥ १॥
षट् त्रिंशत गुण शोभता, संपत षट् पंचास ॥
मेढी सम जिनशासने, भवि पूजें सुखरास ॥२॥

(काफी–चाल होरीकी–ताल दीपचंदी)

अपने रंगमें रंगदे, हेरी हेरी लाला,
अपने रंगमें रंगदे ॥ अंचलि ॥
पांच आचार अखंडित पाले,
जन्म मरण दुःख भंग दे ॥ हेरी० ॥ १ ॥
पंच प्रस्थान जे मंत्रराजके,
स्मरण करे मन रंग दे ॥ हेरी० ॥ २ ॥
आठ प्रमाद तजें उपदेशें,
शिवरमणी सुख मंग दे ॥ हेरी० ॥ ३ ॥
चार अनुयोग सुधारस धारे,
धरम करम उमंग दे ॥ हेरी० ॥ ४ ॥
सात हि विकथा दूर निवारी,
मोह सुभट संग जंग दे ॥ हेरी० ॥ ५ ॥

श्रुतके सातो अंग रंगीले,
मुझ हृदयेमें टंग दे ॥ हेरी० ॥ ६ ॥
पुरुषोत्तम नृप जिनपद लीनो,
आतमराम सिवंग दे ॥ हेरी ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सूरये जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ पंचमी स्थविरपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

परम संगी रंगी नहीं, ज्ञायक शुद्ध स्वरूप ॥
भवि जन मन थिर करनको,
जय जय थिविर अनूप ॥ १ ॥

॥ चतुर्थी सूरिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चोथे पद सूरि नमो, चरण करण पद धार ॥
सारण वारण नोदना, प्रतिनोदन करतार ॥ १ ॥
षट् त्रिंशत गुण शोभता, संपत षट् पंचास ॥
मेढी सम जिनशासने, भवि पूजें सुखरास ॥ २ ॥

(काफी-चाल होरीकी-ताल दीपचंदी)

अपने रंगमें रंगदे, हेरी हेरी लाला,
अपने रंगमें रंगदे ॥ अंचलि ॥
पांच आचार अखंडित पाले,
जन्म मरण दुःख भंग दे ॥ हेरी० ॥ १ ॥
पंच प्रस्थान जे मंत्रराजके,
स्मरण करे मन रंग दे ॥ हेरी० ॥ २ ॥
आठ प्रमाद तजें उपदेशें,
शिवरमणी सुख संग दे ॥ हेरी० ॥ ३ ॥
चार अनुयोग सुधारस धारे,
धरम करम उमंग दे ॥ हेरी० ॥ ४ ॥
सात हि विकथा दूर निवारी,
मोह सुभट संग जंग दे ॥ हेरी० ॥ ५ ॥

श्रुतके सातो अंग रंगीले,
मुझ हृदयेमें टंग दे ॥ हेरी० ॥ ६ ॥
पुरुषोत्तम नृप जिनपद लीनो,
आतमराम सिवंग दे ॥ हेरी ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सूरये जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥



॥ पंचमी स्थविरपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

परम संगी रंगी नही, ज्ञायक शुद्ध स्वरूप ॥
भवि जन मन थिर करनको,
जय जय थिविर अनूप ॥ १ ॥

(जंगलो झींझोटी-ताल पंजाबी ठेको, चाल ठुमरीकी)

थिविर सुहंकर पदकज पूजी,
तीर्थंकर पद सुख गतियांरे ॥ थि० ॥ १ ॥
डिगमिग डिगमिग मन चंचल है,
धरम करे फिर चित्त रतियांरे ॥ थि० ॥ २ ॥
सूत्र थिविर वय व्रत परिणामें,
जाने समवायांग वतियांरे ॥ थि० ॥ ३ ॥
साठ वरस व्रत वरस वीसमे,
थिर परिचित्त शुद्ध बुद्ध मतियांरे ॥ थि० ॥ ४ ॥
दशविध अंग तीसरे वरने,
थिविर ग्रहे इह जिन व्रतियांरे ॥ थि० ॥ ५ ॥
वंदन पूजन नमन करन मति,
भक्ति करे शुद्ध पुण्य रतियां रे ॥ थि० ॥ ६ ॥
पद्मोत्तर नृप ए पद सेवी,
आतम अरिहंत पद वतियांरे ॥ थि० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाधिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥

निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते स्थविराय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ षष्ठी पाठकपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

स्याद्वाद नय पंथमें, पंचानन वल पूर ॥
दुर्नयवादी वृंदको, करे छिनकमें दूर ॥ १ ॥
पठन करावे शिष्यको, स्व पर सत्ता नूर ॥
मिथ्या तिमिर विनाशने, जय जय पाठक सूर ॥२॥

॥ खमाच पंजाबी ठेको ॥

(वीत रागको देख दरस दुविधा मोरी मिटगइ रे देशी)

पाठक पद सुख चेन देन,
वच अमी रस भीनोरे ॥ पाठक० ॥ अंचली ॥
स्व पर रूप विकासी चंद,
अनुभव सुर तरु केरो कंद ॥
स्यादवाद मुख उचरे छंद,
जिन वचरस पीनो रे ॥ पा० ॥ १ ॥

कुमति पंथ तम नाशक सूर,
सुमति कंद वर्द्धन घन पूर ॥
दे उपदेश संत रसभूर,
अघ सब क्षय कीनो रे ॥ पा० ॥२॥
त्रीजे भव शिवरमणी चंग,
चरण करण उपदेशक रंग ॥
कर्म निकंदन करण भंग,
सुर असुर पूजीनो रे ॥ पा० ॥ ३ ॥
हय गय वृषभ सिंह सम कीन,
इंद्र उपेंद्र चक्री दिन ईन ॥
चंद्र भंडारी उपमा दीन,
नग मेरु करीनो रे ॥ पा० ॥४॥
जंबू सीता सरिता वखान,
चरम जलधि तिम गुण मणि खान॥
षोडश उपमा करी विधान,
वहुश्रुत जस लीनो रे ॥ पा० ॥ ५ ॥
अवगुण चौदें दूर करीन,
पन्नर गुणकारी शिष्य पीन ॥

सरस वचन जिम तंत्री वीन,
निजगुण सब चीनो रे ॥ पा० ॥ ६ ॥
महेंद्रपाल पद सेवी सार,
तीर्थंकर पद लीनो धार ॥
मदन भरमको जार जार,
आतमरस भीनो रे ॥ पा० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते पाठकाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ सप्तमी साधुपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

तजी विभाव स्वभावता, रमता समता संग ॥
विशदानंद स्वरूपता, लाग्यो अविहड रंग ॥१॥

माने जग त्रिहुं कालमें, मुनि कहियें तस नाम ॥
साधे शुद्धानंदता, साधु नाम अभिराम ॥ २ ॥

(जंगलो—तालदादरा-अंग्रेजी वाजाकी चाल)

मुनींद चंद ईश मेरे, तार तार तार ॥
ज्ञानके तरग भंग, सात जान कार ॥ मु० १ ॥
संतके महंत मुनि, साध ऋषि धार ॥
यति व्रती संजमी है, जगत्‌को आधार ॥ मु०२॥
नव विध भाव लोच, केश दश कार ॥
अनंग रंग भंग संग, सुमति चंग नार ॥ मु० ३॥
सप्त चाली दोष टाली, लेत है आहार ॥
सात विश गुण धार, आतमा उजार ॥ मु० ४ ॥
पंच ही प्रमादके, कल्लोल लोल भार ॥
संसार नीरनिधि पोत, ज्योति ज्ञान सार ॥मु ०५॥
पार करे संत अंत, कर्मका निहार ॥
ब्रह्मचर्य धार वाड, नव रंग लार ॥ मु० ६ ॥
वीरभद्र साधु सेवे, जिन पद सार ॥
आतमा उमंग रंग, कुगुरु संग छार ॥ मु० ॥७॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते साधवे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥



॥ अष्टमी ज्ञानपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

निज स्वरूपके ज्ञानसे, परसंग संगत छार ॥
ज्ञान आराधक प्राणिया, ते उतरे भवपार ॥ १ ॥

॥ भैरवी पंजाबी ठेको ॥

(लागी लगन कहो कैसे छूटे, प्राणजीवन प्रभु प्यारेसें–देशी)

ज्ञान सुहंकर चिद्घन संगी,
रंगी जिन मत सारेमें ॥ रंगी० ॥ ज्ञान० १ ॥
पांच एकावन भेद ज्ञानके,
जडता जग जन टारेमें ॥ जड० ॥ ज्ञान० ॥ २ ॥

माने जग त्रिहुं कालमें, मुनि कहियें तस नाम ॥
साधे शुद्धानंदता, साधु नाम अभिराम ॥ २ ॥

(जंगलो—तालदादरा-अंग्रेजी वाजाकी चाल)

मुनींद चंद ईश मेरे, तार तार तार ॥
ज्ञानके तरग भंग, सात जान कार ॥ मु० १ ॥
संतके महंत मुनि, साध ऋषि धार ॥
यति व्रती संजमी है, जगत्को आधार ॥ मु०२॥
नव विध भाव लोच, केश दश कार ॥
अनंग रंग भंग संग, सुमति चंग नार ॥ मु०३॥
सप्त चाली दोष टाली, लेत है आहार ॥
सात विश गुण धार, आतमा उजार ॥ मु० ४ ॥
पंच ही प्रमादके, कल्लोल लोल भार ॥
संसार नीरनिधि पोत, ज्योति ज्ञान सार ॥मु ०५॥
पार करे संत अंत, कर्मका निहार ॥
ब्रह्मचर्य धार वाड, नव रंग लार ॥ मु० ६ ॥
वीरभद्र साधु सेवे, जिन पद सार ॥
आतमा उमंग रंग, कुगुरु संग छार ॥ मु० ॥७॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाऽधिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते साधवे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥



॥ अष्टमी ज्ञानपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

निज स्वरूपके ज्ञानसे, परसंग संगत छार ॥
ज्ञान आराधक प्राणिया, ते उतरे भवपार ॥ १॥

॥ भरवी पंजाबी ठेको ॥

(लागी लगन कहो कैसे छूटे, प्राणजीवन प्रभु प्यारेसें-देशी)

ज्ञान सुहंकर चिद्घन संगी,
रंगी जिन मत सारेमें ॥ रंगी० ॥ ज्ञान० १॥
पांच एकावन भेद ज्ञानके,
जडता जग जन टारेमें ॥ जड॥ ज्ञान०॥२॥

भक्ष अभक्ष विवेचन कीनो,

कुमति रंग सब छारेमें ॥ कुम० ॥ज्ञा०॥३॥

प्रथम ज्ञानने पीछे अहिंसा,

करम कलंक निवारेमें ॥ कर० ॥ज्ञान०॥४॥

सदसद् भाव विकाशी ज्ञानी,

दुर्नय पंथ विसारेमें ॥ दुर्न० ॥ ज्ञान०॥५॥

अज्ञानीकी करणी ऐसी,

अंक विना शून्य सारेमें ॥अंक०॥ ज्ञान०॥६॥

मति श्रुत अवधि मनःपर्यव है,

केवल सर्व उजारेमें ॥ केव० ॥ ज्ञान०॥७॥

अज्ञानी वर्ष एक कोटिमें,

करम निकंदन भारेमें ॥ कर० ॥ ज्ञान०॥८॥

ज्ञानी श्वासोश्वास एकमें,

इतने करम विदारेमें ॥ इत० ॥ ज्ञान० ॥९॥

भरतेश्वर मरुदेवी माता,

सिद्धि वरे दुःख जारेमें॥सिद्धि०॥ज्ञान०॥१०

देश विराधक सर्वाराधक,

भगवती वीर उचारेमें ॥भग०॥ज्ञान०॥११॥

जयंत नरेश्वर यह पद साधी,
आतम जिनपद धारेमें ॥ आ० ॥ ज्ञा० ॥१२॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाविधवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते ज्ञानपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ नवमी दर्शनपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

तत्व पदारथ नव कहे, महावीर भगवान ॥
जो सरधे सदभावसे, सम्यग्दर्शी जान ॥ १ ॥
श्रद्धा विन नही ज्ञान है, तदविन चरण न होय ।
चरण विना मुक्ति नही, उत्तरज्झयणे जोय ॥ २ ॥

॥ परज मारू-ताल दीपचंदी ॥
(निशदिन जोवुं वाटडी, घेर आवो मेरे ढोला-देशी)

दर्शन पद मनमें वस्यो, तब सब रंग रोला ॥
जगमें करणी लाख हैं, एक दर्श अमोला ॥द०॥१॥

दर्शन विन करणी करी, एक कौड़ी न मोला ॥
देव गुरू धर्म सार है, इनका क्या मोला ॥ द० ॥२॥
दर्शन मोहनी नाससे, अनुभव रस घोला ॥
जिन दर्शन पूजन करें, एही दर्श कल्लोला॥द०॥३॥
सम संवेग निर्वेदता, अस्ति करुणा तंबोला ॥
इन लक्षणसे मानीयें, समकित रस चोला ॥द०॥४॥
अंतर्मुहूरत फरसीयें, दर्शन सुख डोला ॥
निश्चय मुक्ति पामीयें, जिनवर एम बोला । द० ॥५॥
इग दुग ती चउ सर दसे, सतसठ भेद तोला॥
दर्शन पायो सिज्जंभवे, देखी प्रतिमा अमोला द० ६
हरि विक्रम नृप सेवना, अंतर दृग खोला ॥
आतम अनुभव रंगमें, मिटे मनका झोला॥द०॥७॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाढ्यवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते दर्शनपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ दशमी विनयपदपूजा ॥

गुण अनंतको कंद है, विनय भुवन सिंगार ॥
विनयमूल जिनधर्म है, विनयिक धन अवतार ॥१॥
पांच भेद दस तेरसा, बावन छासठ मान ॥
आगममें विनय तणा, भेद कह्या भगवान ॥२॥

(जंगलो-ताल दीपचंदी, एकेली जानसे में तो दुःख सह्योरी, देशी)

सखी मैं तो विनय पिछाना री,
अनंते कालसे मैं तो विनय० ॥ अंचली ॥
तीर्थंकर सिद्ध कुल गण संघा,
किरिया धर्म सुज्ञाना री ॥स०॥ अ० ॥२॥
ज्ञानी सूरि थिविर पाठक गणि,
पद तेरां विधाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ ३ ॥
अनाशातना भक्ति सुहंकर,
अतिमान गुण गानारी ॥ स० ॥ अ० ॥४॥
दोय सहसने चिहुत्तर अधिके,
वंदन देव विधाना री ॥ स० ॥ अ० ॥५॥
चारसो बावन गुरुवंदन विधि,
विनयी जन चित्त आना री ॥स०॥अ०॥६॥

जिनवंदन हि तप अति भारी,

दुर्गति नाश कराना री ॥ स० ॥अ०॥७॥

श्रद्धा भासन तत्व रमणता,

विनयी कारज गाना री ॥ स० ॥अ०॥८॥

धन्ना एह पद विधिसुं सेवी,

आतमरंग भराना री ॥ स० ॥ अ० ॥९॥

॥ काव्यं ॥

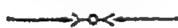
अतिशयादिगुणाऽधिवदान्यकं,

जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥

निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,

कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १० ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते विनयपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १० ॥



॥ एकादशी चारित्रपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चरण शरण भवजल तरण, चरण शरण सुख सार ।

रंक महंत करे सही, सुर नर सेवाकार ॥ १ ॥

ीन जगतपति पद दिये, इंद्रादिक गुण गाय ॥
ालिमल पंक पखारना, जय जय संयम राय ॥२॥

(सोरठ–ताल रूपक, लगीलो नाभी नंदनशुं, देशी)

वरण पद मनरंग रे जीया ॥ च० ॥ अंचलि ॥
आठ कर्मको संचयको जे, रिक्त करे भय भंग।
चारित्र नाम निरुक्तें मान्यो,
शिव रमणी को संग रे जीया ॥ च० ॥१॥
पद् खंडकेरो राज्य जेहने, रमणी भोग उतंग ॥
चक्री संजम रसमें लीनो,
चिदघनराज अभंग रे जीया ॥ च० ॥ २ ॥
चारे कषाय जरे जब नीके, प्रगटे संयम चंग ॥
आठ कषाय गये अणुविरती,
चारित्र मोह विरंग रे जीया ॥ च० ॥ ३ ॥
वर्ष संयमके सुखकी श्रेणि, अनुत्तर सुर सुख चंग ॥
तत्व रमणता संयम विन नहीं,
समर अमर अनंग रे जीया ॥ च० ॥ ४ ॥
वरुण देव संयम पद साधी, अरिहंत रूप असंग ॥
आतमानंदी सुरनर वंदी,
प्रगट्यो ज्ञान तरंग रे जीया ॥ च० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते चारित्रपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥



॥ द्वादशी ब्रह्मचर्यपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

कामकुंभ सुरतरु मणि, सब व्रत जीवन सार ॥
कामित फलदायक सदा, भव दुःख भंजनहार॥१॥
तारागणमें उडुपति, सुरगणमें जिम इंद ॥
विरति सकल मुख मंडना, जय जय ब्रह्म थिरिंद २

(सोरठी-तालदीपचंदी-श्याम नेक दया मोंसें न करी, देशी)

श्याम ब्रह्म सुहंकर लखरी ॥ श्याम० ॥ अंचलि ॥
कुमति संग सब शुध बुध भूली,
अनुभव रस अब चखरी ॥ श्याम० ॥१॥

नव वाडें शुद्ध ब्रह्म आराधे,
अजर अमर तुं अलखरी ॥ श्याम० ॥२॥
औदारिक सुर कामजालसे,
अपने आपको रखरी ॥ श्याम० ॥ ३ ॥
सिंहादिक पशु भय सब नाशे,
ब्रह्मचर्य रस चखरी ॥ श्याम० ॥ ४ ॥
विजयशेठ विजया गुणवंती,
सुदर्शन काम कखरी ॥ श्याम० ॥ ५ ॥
दशमे अंगे बत्रीश उपमा,
ब्रह्मचर्यकी दखरी ॥ श्याम० ॥ ६ ॥
आतम चंद्रवरम नरवर ज्युं,
अरिहंत पद सुख अखरी ॥ श्याम० ॥७॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते ब्रह्मचर्याय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ त्रयोदशी क्रियापदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चिद् विलास रस रंगमें, करे क्रिया भवि चंग॥
करम निकंदन यश भरे, उछले ज्ञान तरंग ॥ १ ॥
आगम अनुसारी क्रिया, जिनशासन आधार ॥
प्रवर ज्ञान दर्शन लहे, शिवरमणी भरतार ॥२॥

(माढ. फलवृद्धि पारस नाथ, प्रभुको पूजो तो सही ॥ देशी)

थारी गइरे अनादि निंद, जरा टूक जोवो तो सही ।
जोवो तो सही,मेरा चेतन जोवो तो सही ।था० अं.
ज्ञान संग किरिया दुःखहरणी,
नेवो तो सही,मेरा चेतन नेवो तो सही ॥
एह धर्म शुक्ल शुद्ध ध्यान हृदयमें,
पोवो तो सही । पोवो० मे० ॥ था० ॥ १ ॥
आर्त्त रौद्रकी पणवीस किरिया,
खोवो तो सही, मेरा चेतन खोवो तो सही ।
अनुभव सम रस सार जरा तुम,
टोवो तो सही ॥ टोवो० मे० । था० ॥ २ ॥
अड दिठी सम्मत जोगकी किरिया,
ढोवो तो सही, मेरा चेतन ढोवो तो सही ।

प्रथम चार तजी चार ग्रही पर,
होवो तो सही, होवो० मे० था० ॥ ३ ॥
समकितकी करणी दुःख हरणी,
लेवो तो सही, मेरा चेतन लेवो तो सही ।
ठुक दुर्नय पंथ विडार ज्ञान रस,
गोवो तो सही ॥ गोवो० मे० ॥ था० ॥ ४ ॥
अंतर तत्व विपय मन प्रीति,
छोवो तो सही, मेरा चेतन छोवो तो सही ।
एह ज्ञान क्रिया निज गुण रंग राची,
थोवो तो सही, थोवो० मे० ॥ था० ॥ ५ ॥
अशुभ ध्यानके थानक त्रेशठ,
खोवो तो सही, मेरा चेतन खोवो तो सही ।
पुण्यानुवंधी पुण्य वीज ठुक;
वोवो तो सही ॥ वोवो० मे० ॥ था० ॥ ६ ॥
क्रोध मान माया जडता संग,
धोवो तो सही, मेरा चेचन धोवो तो सही ।
एह हरिवाहन आतम रस चाखी,
मेवो तो सही ॥ मेवो० मे० ॥ था० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते क्रियापदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १३ ॥



॥ चतुर्दशी तपःपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

उपशम रस युत तप भलो, काम निकंदन हार ॥
कर्म तपावे चीकणां, जयजय तप सुखकार ॥ १ ॥

(राग विहाग ॥ ताल दीपचंदी)

युं सुधरे रे सुज्ञानी अनघ तप ॥ युं० ॥ अंचलि ॥
कर्म निकाचित छिनकमें जारे,
निर्दंभ तप मन आनी ॥ अनघतप युं० ॥ १ ॥
अर्जुनमाली दृढ परिहारी,
तपसुं धरे शुभ ध्यानी ॥ अनघतप युं० ॥ २ ॥

लाख अग्यारह अस्सी हजारा,
पंच सयां गिन ज्ञानी ॥ अनघतप युं० ॥ ३ ॥
इतने मास उमंग तप कीनो,
नंदन जिनपद ठानी ॥अनघतप युं० ॥ ४ ॥
संवत्सर गुणरत्न जपीनो,
अतिमुक्त सुख खानी ॥ अनघतप युं० ॥५॥
चौद सहस मुनिवरमें अधिको,
धन धन्नो जिनवानी ॥ अनघतप युं० ॥ ६ ॥
कनक केतु तप शुद्ध पद सेवी,
आतम जिनपद दानी ॥ अनघतप युं० ॥७॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते तपःपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १४ ॥

———)-०-(———

॥ पंचदशी दानपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

दानें भव संकट मिटे, दानें आनंद पूर ॥
दानें जिनवर पद लहे, सकल भयंकर चूर ॥१॥
अभय सुपातर दान दें, निस्तारिया संसार ॥
मेघ सुमुख वसुमति धना, कहत न आवे पार ॥२॥

(जंगलो·ठेको पंजाबी ॥ रच्यो सिरिवृंदावन, रास तो गोविंद-देशी)

दान तो अभंग दीजे मन धरी रंग ॥ दा० अं० ॥
खान तो अमर अज, सुख तो अभंग ॥
गौतम रतन सम, पात्र सुरंग ॥ दा० ॥ १ ॥
कनक समान मुनि, पात्र उतंग ॥
देशविरति पात्र रौप्य, मध्यम सुमंग ॥ दा० ॥
समदर्शी जीव मानो, जघन तरंग ॥
कांस्य पात्र पात्रसम, सुख दे निरंग ॥ दा० ॥२॥
शालिभद्र कृतपुन्ना, धन्ना शुभचंद ॥
दानसे अनंत सुख, कहत जिनंद ॥ दा० ॥ ४ ॥
दानसे हरिवाहन लीनो, जिनपद संग ॥
आतम आनंद कंद, सहज उमंग ॥ दा० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाढिधवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते दानपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १५ ॥

॥ षोडशी वैयावृत्त्यपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

वैयावच्च पद सोलमें, अखिल विमल गुण खान,
अप्रतिपाति पद खरो, आगम कथित निदान ॥१॥
म सूरि पाठक मुनि, बालक वृद्ध गिलान ॥
पी संघ जिनचैत्यका, वैयावच्च विधान ॥ २ ॥

॥ जंगलो झीझोटी-पंजाबी ठेको ॥
(गिरनारीथी पाहाडीपर फतेगुजरी-ठेको)

शुद्ध वैयावच्च कर जिन पद वर री ॥ शुद्ध० ॥ अं० ॥
तीर्थंकर केवली मनपर्यव,
अवधि चतुर्दश पुव्वधरी ॥ शुद्ध० ॥१॥

१. पूजा०

दश पूर्वी उत्कृष्ट चरणधर,
लब्धिमंत ए जिन सगरी ॥ शुद्ध॥२॥
जिनमंदिर जिन चैत्य करावें,
पूजा करें मन तनु सुधरी॥शुद्ध०॥३॥
दशमे अंगे जिनवर भाखे,
कुमति कुसंग सब दुर भगरी ॥ शुद्ध० ॥४॥
नव पद शेष सूरीश्वर आदि,
वैयावृत्य कर उठ जगरी ॥ शुद्ध० ॥ ५ ॥
शत पंच मुनिकी वैयावच्च करके,
भरत बाहुबल शिव मगरी ॥ शुद्ध०॥६॥
नृप जिमूतकेतु पद साधि,
आतमजिन पद रस गगरी ॥ शुद्ध०॥७॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय

जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वैयावृत्याय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १६ ॥



॥ सप्तदशी समाधिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

निजातम गुण रमणता, इंद्रिय तजी विकार ॥
थिर समाधि संतोषमें, भवदुःख भंजनहार ॥१॥

(जंगलो झींजोटी-पंजाबी ठेको मानोने चेतनजी मारी वात देशी)

राचो रे चेतनजी मन शुद्ध लाग ॥ राचो०
धारो धारो समाधि केरो राग ॥ राचो ॥१॥
या संग नाश कह्यो भववनको,
अब क्यूं सरको भाग ॥ राचो ॥०२ ॥
द्रव्य समाधि भाव समाधि,
सुमति केरो सुहाग ॥ राचो० ॥ ३ ॥
अशन वसनसे भक्ति संघकी,
द्रव्य समाधि अथाग ॥ राचो० ॥ ४ ॥
सारण वारण चोयण करनी,
द्वितीय समाधि जाग ॥ राचो० ॥ ५ ॥

सकल संघको दुविध समाधि,
निपजावे महाभाग ॥ राचो० ॥६॥
पंच समिति तीन गुप्ति धरे नित,
निश दिन धरत विराग ॥ राचो०॥७॥
चार निक्षेप नय सतभंगी,
कारण पंच निराग ॥ राचो० ॥८॥
चार प्रमाण द्रव्य षट् मानें,
नव तत्त्व दिलमें चिराग ॥राचो०॥९॥
सामायिक नव द्वार विचारी,
निज सत्ताको विभाग ॥ राचो०॥१०॥
पुरंदर नृप ए पद सेवी,
आतम जिनपद माग ॥ राचो० ॥११॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाढ्यवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते समाधिपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १७ ॥

॥ अष्टादशी अभिनवज्ञानपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान अपूरव ग्रहण कर, जागे अनुभव रंग ॥
कुमति जाल सब जार के, उछले तत्त्वतरंग ॥१॥
पद अढारमे पूजियें, मन धरि अधिक उमंग ॥
ज्ञान अपूरव जिन कहे, तजी कुगुरुको संग ॥१॥

(वरवो-ताल ठुमरी-मन मोह्या जंगलकी हरणी ने-देशी)

भवि वंदो अपूर्व ज्ञानतरणिने ॥ भवि॥अंचलि॥
कुमति घूक सब अंध हुए हैं,
भूलें जडमति करणी ने ॥ भवि०॥१॥
ज्ञान अपूरव जबही प्रगटे,
शुद्ध करे चित्त धरणी ने ॥ भवि० ॥२॥
निर्युक्ति शुद्ध टीका चूरणी,
मूल भाष्य सुख भरणीने ॥ भवि० ॥३॥
संप्रदाय अनुभव रस रंगें,
कुमति कुपंथ विहरणीने ॥ भवि० ॥ ४ ॥
सदगुरुकी ये तालिका नीकी,
रतन संदूख उघरणीने ॥ भवि० ॥ ५ ॥

इन विन अर्थ करे सो तस्कर,
काल अनंता मरणीने ॥ भवि० ॥ ६ ॥
सम्मति कर्म्म ग्रंथ रत्नाकर,
छेद ग्रंथ दुःख हरणीने ॥ भवि० ॥ ७ ॥
द्वादशार वली अंग उपांग,
सप्त भंग शुद्ध वरणीने ॥ भवि० ॥ ८ ॥
इत्यादिक भवि ज्ञान अपूरव,
पठन करें धरे चरणीने ॥ भवि० ॥ ९ ॥
सागरचंद जिनंदपद पायो,
आतम शिववधू परणीने ॥ भवि० ॥१०॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽभिनवज्ञानाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १८ ॥

॥ एकोनविंशी श्रुतपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पाप तापके हरणको, चंदन सम श्रुत ज्ञान ॥
श्रुत अनुभव रस राचियें, माचियें जिन गुण तान ॥
इगुण वीस पद पूजियें, जिनवर वचन अभंग ॥
तीर्थंकर पद भवि लहे, छार कुमतिको संग ॥२॥

(श्याम कल्याण-श्रीराधा राणी दे डारो ने.वांसरी हमारी-देशी)

श्री चिदानंद विडारो ने
कुमति जो मेरी ॥ श्री० ॥ अंचलि ॥
दुषम कालमें कुमति अंधेरो,
प्रगट करे सव चोरी ॥ श्री० ॥ १ ॥
वत्तीस दोष रहित श्रुत वांचे,
आठ गुणें करी जोरी ॥ श्री० ॥ २ ॥
अरिहंत गणधर भाषित नीको,
श्रुत केवली वल फोरी ॥ श्री० ॥ ३ ॥
प्रत्येक वुद्ध दश पूरवधर,
श्रुत हरे भवको री ॥ श्री० ॥ ४ ॥
आठ आचार जो कालादिक हे,
साधे करम निचोरी ॥ श्री० ॥ ५ ॥

चारोहि अनुयोग गुरुगम वांचे,
टूटे कूपंथकी दोरी ॥ श्री० ॥ ६ ॥
चौद भेद श्रुत वीस भेद है,
अंग पयन्ना कोरी ॥ श्री० ॥ ७ ॥
रत्न चूड़नृप ये पद सेवी,
आतम जिनपद हो री ॥ श्री० ॥८॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाऽधिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते श्रुतपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १९ ॥



॥ विंशतितमतीर्थपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनमतकी परभावना, करे प्रभावक आठ ॥
श्रावक धन खरची करें, रथयात्रादिक ठाट ॥१॥

प्रावचनी अरु धर्मकथी, वादी निमित्त सुज्ञान॥
तपी सिद्ध विद्या कवि, आठ प्रभावक जान ।२॥

(राग पीलू-ताल दीपचंदी)

तीर्थ उजारो अब करीयें, भविक वृंद ॥
दाख्यो रे जिनंदपद आनंद भरे री ॥ ती० ॥ अं०
तीर्थ प्रकार दोय, थावर जंगम जोय ॥
सिद्धगिरि आदि जोय, दर्श करे री ॥ ती०॥१॥
शिखर संमेत चंपा, पावापुरी दुःख कंपा ॥
अष्टापद रैवत जिनंद, शिव वरे री ॥ तीर्थ०॥२॥
इत्यादि जिन स्थान, जनम विरत ज्ञान ॥
समज सुजान ठान, भक्ति खरे री ॥ तीर्थ०॥३॥
थावर तीर्थ रंग, मन धरी अति चंग ॥
संघ काढी महानंद, धर्म सुधरेरी ॥ तीर्थ० ॥४॥
संघकी भक्ति करी, जयजयकार जग करी ॥
पावना प्रभावनासे, उन्नति करे री ॥ तीर्थ०॥५॥
भरत सागर सेन, महापद्म हरिषेण ॥
संप्रति कुमारपाल, वस्तुपाल नरे री ॥तीर्थ०॥६॥
रयण पंच रंग करी, कंचनको थाल भरी ॥
तीर्थ वधावो गुण, गावो चित्त खरेरी। तीर्थ०।७।

आतम आनंद पूर, करम कलंक चूर ॥
मेरुप्रभ जिन पद, सुखमें वरे री ॥ तीर्थ० ॥८॥

॥ काव्यं ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं,
जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं,
कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाण श्रीमते तीर्थपदाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २० ॥

॥ अथ कलश ॥

(राग धनाश्री–पंजाबी ठेको)

शुद्ध मन करो रे आनंदी,
विंशति पद शुद्ध ॥ अंचलि ॥
विंशति पद पूजन करी विधिसुं,
उजमण करो चित्त रंगी ॥ विं० ॥ १ ॥
ए सम अवर न करणी जगमें,
जिनवर पद सुख चंगी ॥ विं० ॥ [illegible] ॥
तपगच्छ गगनमें दिनमणि सा[illegible]
विजयसिंह [illegible] ०

सत्य कपूर क्षमा जिन उत्तम,
पद्म रूप गुरु जंगी ॥ विं० ॥ ४ ॥
कीर्ति विजय गुरु समरस भीने,
कस्तूर मणि हैं निरंगी ॥ विं० ॥ ५॥
श्री गुरु वुद्धि विजय महाराजा,
मुक्तिविजय गणि चंगी ॥ विं० ॥६॥
तस लघु भ्राता आनंद विजयें,
गाई विंशति पद भंगी ॥ विं० ॥७॥
खं युग अंक इंदु (१९४०) वत्सरमें,
वीकानेर सुरंगी ॥ विं० ॥ ८ ॥
आतमाराम आनंद पद पूजो,
मन तन होय एक रंगी ॥ विं०॥९॥

॥ इति विंशतिस्थानकपूजा ॥

इति जैनाचार्य श्री १०८ श्रीमद्विजयानंद सूरि-
(आत्मारामजी) विरचित पूजासंग्रहः
समाप्तस्तत्समाप्तौ च समाप्तोयमात्मानन्द-
पूजासंग्रहे प्रथमो भागः ॥

॥ अथ द्वितीयो भागः ॥

"मुनिमहाराज श्रीवल्लभविजय विरचित"

॥ पूजासंग्रह ॥

॥ ॐ नमः पंचपरमेष्ठिने ॥

"अथ पंचपरमेष्ठिपूजा"

॥ दोहा ॥

जिनवर वाणी भारती, सरसती करी सुपसाय;
विघन निवारी कीजियें, रचनासें सु सहाय ॥१॥
नमन करी शुभ भावसे, परमेष्ठी भगवान;
परमेष्ठि पूजा रचूं, परमेष्ठिको निदान. ॥ २ ॥
तिष्ठे परम पदे सदा, तिण परमेष्ठी नाम;
परमेष्ठि पंचक नमों, पंचम गतिको धाम. ॥ ३ ॥
अरिहंत सिद्ध तथा गणि, चौथे पद उवज्झाय;
पंचम पद अनगारको, नमियें मन वच काय.॥४॥
द्वादश गुण अरिहा प्रभु, अड गुण सिद्ध मनाय;
सूरि गुण षट्त्रिंश है, पणवीस श्री उवज्झाय.॥५॥

सत्तावीस गुण साधुके, अष्टोत्तर शत जान;
गुणियन के गुण गानसे, गुणीयन गुण सन्मान. ॥६
अरिहंत पदको अ ग्रही, अशरीरीको अकार;
आ लीजे आचार्यको, संधिसें आकार. ॥ ७ ॥
उपाध्याय उ आदिको, संधिसे ओकार
मुनिपदको म मेलके, नमियें नित्य ॐकार. ॥८॥
नमन कियो इन पंचको, टारे सब अघवृंद;
मंगलमें मंगल वड़ो, वयण मुनि गणि इंद. ॥९॥
स्नपन विलेपन पुष्पसे, धूप दीप मनोहार;
फल अक्षत नैवेद्यसे, पूजा अष्ट प्रकार. ॥ १० ॥
अष्टोत्तर शत गुण प्रति, सामग्री विस्तार;
भिन्न भिन्न संक्षेपसे, निज शक्ति अनुसार. ॥११॥

॥ अथ प्रथमार्हत्परमेष्ठिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्ट कर्म अरिभूतको, हनन करे अरिहंत;
भाव अरिहंत भावसे, भाव अरिको अंत. ॥ १ ॥
वंदन पूजन योग्य है, योग्य नमन सत्कार;
सिद्धि गमन अरिहा नमुं, अरिहंत मंगलकार. ॥२॥

(राग सारंग.)

मन मगन परमेष्ठि ध्यानमें,
ध्यानमें गुणगण गानमें—मन० अंचलि ॥
भव तीजे वीस थानक तप करी,
जिन पदके रे निदानमें;
चउद सुपन सूचित प्रभु जन्मे,
उंचे शुभ खानदानमें. मन० ॥ १ ॥
दान देई संवच्छरी दीक्षा,
कर्म खपी ब्रह्म ज्ञानमें;
तीर्थ चलावे वैसी सुर किये,
समवसरण मैदानमें. मन० ॥ २ ॥
सम्यग दर्शन निर्मल कारण,
शुद्धालंबन जानमें;
जिन अरिहा महा माहन शंभू,
सार्थ वाह भव वानमें. मन० ॥ ३ ॥
निरंजन निर्दोष शिवंकर,
अजरामर सुख खानमें;
महागोप जिनवर जगनायक,
पूजन आनंद थानमें. मन० ॥ ४ ॥

चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी,
गुण अतिशय भगवानमें;
आतम लक्ष्मी चिद्घन सोहे,
वल्लभ हर्ष अमानमें. मन० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

द्वादश गुण धारक प्रभु, सिमरुं मन वच काय;
गुण धारी गुणियन वनुं, आतम निर्मल थाय. ॥१॥

(राग माढ. तोरे गमका तराना—चाल.)

निर्मल मन धारी पाप निवारी परमेष्ठी भगवान;
सिमरुं सयवारी वार हजारी जाउं वलिहारी
परमेष्ठी भगवान. निर्मल० अंचलि ॥

पाडि हेर अड देव किये जस, मूल अतिशय चार;
द्वादश गुणधारी परमेष्ठी,
अरिहंत जय जय काररे—सिमरुं०॥१॥

ज्ञानातिशय पूजातिशय, वाचातिशय सार;
अपाय अपगम चौथा मानुं,
जानुं पुण्य प्रकाररे—सिमरुं० ॥ २ ॥

तरुअशोक सुमन सुर वृष्टि, दिव्य ध्वनि मनोहार;

दुंदुभि छत्र सिंहासन चामर,
भामंडल चमकाररे—सिमरुं ॥ ३ ॥
परमेष्ठी परमातम अर्हन् , जगजीवन हितकार;
आतम लक्ष्मी निजगुण प्रगटे,
वल्लभ हर्ष अपाररे—सिमरुं० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥

सुखकरं शिवदं भवतारकं ।
जननमृत्युजराविनिवारकम् ॥
अघहरं सुरराजगणैर्नुतं ।
जिनवरं परमेष्ठिपदं यजे ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हत्परमेष्टिने जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

☞ सूचना—स्नात्रिलोग अभिषेक करके अष्ट द्रव्यसे विधि पूर्वक पूजन कर अंगरचना करे वहांतक और भाई नीचेका गीत पढे. प्रत्येक पूजामें इसीतरह समझ लेना.

॥ गीत ॥

॥ दोहा ॥

पूजक पूजन से बने, पूज्य बराबर धार;
पूजा फल पूजा करें, पावे भवोदधि पार. ॥१॥

(चाल— वलिहारी.)

वलिहारी वलिहारी वलिहारी, जगदीश अंतर्यामी,
अर्हन् पदसेवा सेवक तारणीजी । वलि० अंचलि ॥
दोष रहित स्वामी, एक अनेक नामी,
मूल अनामी निज गुण धारी, जगदीश० ॥ १ ॥
कोई सिद्धांत भावे, कोई भी नाम गावे,
यदि न दोष लेश भारी, जगदीश० ॥ २ ॥
हरि विरंचि वीर, बुद्ध शंकर धीर,
राम ऋषभ सुखकारी, जगदीश० ॥ ३ ॥
ध्येयको ध्याता ध्यावे, ध्यान से ध्येय थावे,
ध्येय अजब गति न्यारी, जगदीश० ॥ ४ ॥
अर्हन् पद सेवा, आतम लक्ष्मी देवा,
वल्लभ लेवा हर्ष अपारी, जगदीश० ॥ ५ ॥

॥ अथ द्वितीयश्रीसिद्धपरमेष्ठिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सकल कर्म मल क्षय करी, पाया पद निर्वान ।
निरावरण परमातमा, शुद्ध सिद्ध भगवान ॥१॥

जन्म नहीं मरणा नहीं, नहीं जरा नहीं रोग।
केवल आतम रमणता, पुद्‌गल रमण वियोग ॥२॥

(चाल —केसरीया थासु)

परमेष्ठी स्वामी सिद्ध भजुं रे शुभ भावसे।प०अं०॥
तीर्थंकर जिन केवली रे, पण लघु अक्षर मान।
शैलेशी फरसी करी रे,
चिद्‌घन सुखकी खान रे ॥ प० १ ॥
आतम राम रमापति रे, रूपातीत स्वभाव।
निर्मल ज्योति झगमगे रे,
पुद्‌गल रूप अभाव रे ॥ प० ॥ २ ॥
विगुणा पिण नहीं अंतहै रे, निजगुण का साक्षात।
निरावाध ऐकांतसे रे,
आत्यंतिक सुख सात रे ॥ प० ॥ ३ ॥
सिद्ध अनंता सेविये रे, चार अनंते संग।
अशरीरी अपुनर्भवा रे,
दंसण नाण अभंग रे ॥ प० ॥ ४ ॥
सादि अनंता कालसे रे, सिद्धि सुख परधान।
आतम लक्ष्मी पामिये रे,
वल्लभ हर्ष अमान रे ॥ प० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

नाश करी अड़ कर्मका, अड़ गुण प्रगट करंत ।
सिद्ध नमुं शुभ भावसे, पण दश भेद अनंत ॥१॥

(चाल—पनिहारीकी)

ज्ञानावरण अभावसे भवि जानोजी,
क्षायक ज्ञान सोहंत मानोजी ।
दर्शनावरण वियोगसे भवि जानोजी,
क्षायक दर्शन संत मानोजी ॥ १ ॥
वेदनी कर्म के क्षय हुए भवि जानोजी,
अव्याबाध लहंत मानोजी ।
मोहनी कर्म के अंत से भवि जानोजी,
क्षायक समकितवंत मानोजी ॥ २ ॥
आयु कर्म अभावसे भवि जानोजी,
अक्षय स्थिति भगवंत मानोजी ।
नाम कर्म के वियोगसे भवि जानोजी.
रूपातीत कहंत मानोजी ॥ ३ ॥
गोत्र कर्म के क्षय हुए भवि जानोजी,
अगुरु लघु गुणवंत मानोजी ।

अंतराय के अंतसे भवि जानोजी,
गुण निज वीर्य अनंत मानोजी ॥ ४ ॥
बंध उदय उदीरणा भवि जानोजी,
सत्ता नाश करंत मानोजी ।
आतम लक्ष्मी पामिया भवि जानोजी,
वल्लभ हर्ष धरंत मानोजी ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥

सुखकरं शिवदं भवतारकं ।
जननमृत्युजराविनिवारकम् ॥
अघहरं सुरराजगणैर्नुतं ।
शिववरं परमेष्टिपदं यजे ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सिद्धपरमेष्टिने जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

॥ गीत ॥

॥ दोहा ॥

पूजक पूजनसे बने, पूज्य बराबर धार ।
पूजा फल पूजा करे, पामे भवोदधि पार ॥ १ ॥

(सोरठ, चाल-जिनवर शरण विना संसार भ्रमण टलसे नहीरे)

सिद्ध पद परमेष्ठी जग
शरण भवि मलसे सही रे।
जन्म मरण दुःख दोहग
रोग सोग टलसे सही रे। सि० अंचलि॥
अजर अमर अज ध्यान धरी,
अलख निरंजन ज्ञान करी।
पूजा सिद्ध पद भाव अरि छलसे नही रे। सि०१॥
सुखकी उपमा जगमें नही,
जाणे नाणी सके न कही।
अनुभव सहज स्वभाव गही कलसे सही रे। सि०२॥
पूजन सिद्ध पद सुखकरी,
भव भवके सब दुःख हरी।
मानव भव दिन मास वरी फलसे सही रे। सि०३॥
आतम लक्ष्मी सिद्ध खरी,
सत चित आनंद रूप वरी।
वल्लभ हर्ष अनंत भरी रलसे सही रे। सि० ॥४॥

॥ अथ तृतीयश्रीआचार्यपरमेष्ठिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अस्त हुये जिन सूर्य के, केवली चंद समान।
प्रगट करे जग तत्वको, दीपक सूरि जान ॥१॥
षट् त्रिंशत गुण शोभते, षट् त्रिंशत गुणवान।
मर्यादा विनये करी, पूरण युग परधान ॥ २ ॥
पाप भार भारी बने, पड़ते भवि भव कूप।
करुणा सिंधु तारते, नमो नमो मुनि भूप॥ ३ ॥

(चाल—मान मायाना करनारा रे.)

सुखकारी पूजन सुखकारी रे,
सूरिराय पूजन सुखकारी।
करे शुद्ध भावे नर नारी रे,
सूरिराय पूजन सुखकारी। अंचलि।
युगप्रधान सूरीश्वर सोहे,
देशादि गुणके धारी।
लोक अनुग्रह कारण भासे,
आचार पांच प्रकारी रे। सू० ॥ १ ॥
सारण वारण चोयण करता,
पडि चोयण दातारी।

धर्मोपदेशक गच्छ नियंता,
प्रमाद दूर निवारी रे। सू० ॥ २ ॥
भूप समा जिन शासन दीपे,
अनेक लब्धि भंडारी।
तत्वज्ञ तत्वोपदेशक सूरि,
जीव परम उपकारी रे। सू० ॥ ३ ॥
पाले पलावे धर्म अनुपम,
विकथा कषाय विडारी।
मात तात सुत बंधवसे भी,
जीव अधिक हितकारी रे। सू० ॥ ४॥
वंदन पूजन भाव सूरिपद,
अक्षय पद करतारी।
आतम लक्ष्मी संपत पामे,
वल्लभ हर्ष अपारी रे। सू० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान दरस चारित्रके, अड़ अड़ भेद चोवीस।
तपके बार मिलायके, सूरि गुण छो तीस ॥ १ ॥
पण पण व्रत समिति युता, गुप्ति तिग सोहंत।
पाले पांच आचारको, चार कषाय वमंत ॥२॥

पंचेंद्रियके संवरी, नव गुप्ति ब्रह्म धार।
स्व पर मत ज्ञाता भुवि, सूरि नमो नर नार॥३॥

(राग-सोरठ.)

सूरिपद मन मोहनगारा,
जस अर्चन भवोदधि तारा। सू० अंचलि।
पडिरुवादिक चउद गुणधारी,
क्षांति प्रमुख दश वारा।
भावना भावित निज आतम ये,
गुण पटत्रिंश आधारा। सू० ॥ १ ॥
संविग्न शांत मृदु संतोपी,
कृत योगी गंभीरा।
मध्यस्थ सरल गीतारथ पंडित,
अनुवर्ति शुचि धारा। सू० ॥ २ ॥
व्याख्यानी विज्ञानी तपस्वी,
उपदेशक मतिवारा।
नैमित्तिक वली वादी जीपक,
पर्षदा आनंद कारा। सू० ॥ ३ ॥
उपकारी नय निपुण सुरूपी,
धारणा शक्ति उदारा।

प्रतिभाशाली स्थिर चित्त वचने,
आदेय प्रिय कथनारा । सू० ॥ ४ ॥
निरुपद्रवी अनुभवी भावज्ञा,
उचितके जानन हारा ।
अंगीकृत निर्वाहे धोरी,
स्वर गंभीर सुधारा । सू० ॥ ५ ॥
इत्यादि गुण गण रत्नाकर,
सूरिजन मनोहारा ।
आतम लक्ष्मी निज गुण प्रगटे,
वल्लभ हर्ष अपारा । सू० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥

सुखकरं शिवदं भवतारकं ।
जननमृत्युजराविनिवारकम् ॥
अघहरं सुरराजगणैर्नुतं ।
गणधरं परमेष्ठिपदं यजे ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सूरिपरमेष्ठिने जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

॥ गीत ॥

॥ दोहा ॥

पूजक पूजनसे बने, पूज्य बराबर धार,
पूजा फल पूजा करे, पामे भवोदधि पार ॥१॥

(राग–जय जयवंती.)

सूरिपद पूजे भावे, अजर अमर पावे।
फिर नहीं जग आवे, मिटत मरन है ॥ सू०॥१॥
वैसे नहीं माय ताया, हितकारी सुय भाया।
जैसे सूरिवर आया, तारन तरन है ॥ सू० ॥२॥
पूजक को पूज्य मानी, आतम को सूरि जानी।
जिन गणधर वानी, जगमें सरन है ॥ सू० ॥३॥
आतम आनंद थावे, जिन लक्ष्मी घर आवे।
वल्लभ हर्ष गावे, चरन सरन है ॥ सू० ॥ ४ ॥



॥ अथ चतुर्थश्रीउपाध्यायपरमेष्टिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पारग बारा अंगके, सूत्र अर्थ तह दोय।
पाहण सम पिण शिष्यको, श्रुतधारी करे जोय ॥१॥
विना बोध किये जीवको, होवे न तत्व पिछान।
पढे पढावे सूत्रको, उपाध्याय भगवान ॥ २ ॥

(लावणी-मराठी चाल-अपने पदको तजकर.)

परमेष्टिपद पूजन प्राणी,
परमेष्ठि पद धारा रे ।
उपाध्याय नमिये भवि भजिये,
आनंद मंगल कारा रे ॥ १ ॥
मोह अहि विष मूर्छित प्राणी,
चेतन ज्ञान दातारा रे ।
गारुड सम विद्या मंतरसे,
दूर हरे अंधकारा रे ॥ २ ॥
अज्ञान व्याधि विधुरित चेतन,
श्रुत रसायण सारा रे ।
दाता महाविद्याके धोरी,
जगजीवन हितकारा रे ॥ ३ ॥
अविनीत शिष्य चतुर्दश दोषे,
भव वन भटकन हारा रे ।
पन्नर गुण तस देकर विनयी,
करके करे निस्तारा रे ॥ ४ ॥
स्वपर समय विवेकी ज्ञानी,
शिक्षा दोय प्रकारा रे ।

दाता पाता आतम लक्ष्मी,
वल्लभ हर्ष अपारा रे ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

चौथा परमेष्ठि नमु, उपाध्याय भगवान ।
गुण पणवीस धारण करे, उपमा सोल प्रमान ॥१॥
पणवीस आवश्यक करे, पणवीस किरिया त्याग ।
भावे पणवीस भावना, श्री पाठक महा भाग ॥२॥

(चाल–मजा देते है क्या यार.)

धन धन उपाध्याय महाराज,
भवजल पार लगाने वाले । धन० अंचली ।
गुण पणवीसके धरनार, अंग आचारादिक ग्यार
उपांग दोयदश धार,
करी मुनिगणको पढानेवाले । ध० ॥१॥
चरे चरण सत्तरि सार, करे करण सत्तरी लार ।
गुण पणवीस एह उदार,
जिनागम ज्ञान बतानेवाले । ध० ॥२॥
गो हय गय सिंह समान, टारे वादिका अभिमान ।
रवि शशी भंडारी जान,
शचीपति उपमा पानेवाले । ध० ॥ ३ ॥

जंबू मेरु नर देव, सीता नृप वासुदेव।
रत्नोदधि भावे सेव,
करे भवि तरण तरानेवाले। ध० ॥४॥
वाचक ऐसे श्रीकार, आतम लक्ष्मी गुणधार,
वल्लभ मन हर्ष अपार,
गुणी पाठक गुण गानेवाले। ध० ॥५॥

॥ काव्यं ॥

सुखकरं शिवदं भवतारकं।
जननमृत्युजराविनिवारकम् ॥
अघहरं सुरराजगणैर्नुतं।
श्रुतधरं परमेष्ठिपदं यजे ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते पाठकपरमेष्ठिने जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ गीत ॥

॥ दोहा ॥

पूजक पूजनसे बने, पूज्य बराबर धार।
पूजा फल पूजा करे, पामे भवोदधि पार ॥ १ ॥

(कानड़ा)

पूजन परमेष्ठिपद कीजे । पू० अंचली ।
सुर नर मुनि जस ध्यान करीने,
वाचक पाठक पदको नमी जे ॥ पू० ॥ १ ॥
बावना चंदन रस सम वचने,
पाप ताप भवि उपसम कीजे ॥ पू० ॥ २ ॥
गुणवन भंजन मदगज दमने,
अंकुश सम गुण ज्ञानको दीजे ॥ पू० ॥३॥
ज्ञान दान दाता गुण राता,
सूरिपद लायक गण रीजे ॥ पू० ॥ ४ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने,
वल्लभ वाचक पद वरनीजे ॥ पू० ॥ ५ ॥



॥ अथ पंचमसाधुपरमेष्ठिपदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मुनिवर तपसी संयमी, वाचंयम अनगार ।
श्रमण तपोधन यति व्रती, ऋषि साधु सुखकार ॥१॥
साधु साधे मोक्षको, वश कर मन वच काय ।
रत्नत्रय आराधके, जन्म मरण मिट जाय ॥ २ ॥

(सोहनी-चाल-ढुंढ फिरा जग सारा.)

परमेष्ठी सुखकारा सुखकारा,
मुनिपद कीजे अर्चना । अंचलि ।
ज्ञान दरस चारित्र आराधे,
असंयम टारी शिव साधे ।
चिद्घन रूप उदारा उदारा,
मुनिपद कीजे अर्चना ॥ प० ॥ १ ॥
ध्यान धरे अपध्यान निवारे,
दंडको त्यागे गुप्तिको पारे ।
गारव शल्य विडारा विडारा,
मुनिपद कीजे अर्चना ॥ प० ॥ २ ॥
विकथा निवारी टारे कसाया,
इंद्रिय जीति वारे पमाया ।
करे तप बार प्रकारा प्रकारा,
मुनिपद कीजे अर्चना ॥ प० ॥ ३ ॥
साधु पडिमा सेवे वारे,
संयम सत दश पारे धारे ।
सीलंग सहस अठारा अठारा,
मुनिपद कीजे अर्चना ॥ प० ॥ ४ ॥

दशविध लोच करी जगमोहे,
आतम लक्ष्मी मुनिगुण सोहे ।
वल्लभ हर्ष अपारा अपारा,
मुनिपद कीजे अर्चना ॥ प० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

धर्म चतुर्विध उपदिसे, समता गुण भंडार,
सप्तविंश गुण शोभते, वार वार वलिहार ॥ १ ॥
यति धर्म दश साधते, हास्यादि षट् रहित,
आहार न लेवे दोषसे, सुडतालीस सहित ॥ १ ॥

(चाल—होई आनंद वहाररे.)

परमेष्टि पद साररे भवि सेवो मुनिको। अंचलि ।
षट् काया रक्षा करे रे,
लिये व्रत षट् धार रे । भवि० ॥ १ ॥
इंद्रिय पण निग्रह करे रे,
टाले विषय विकार रे । भवि० ॥ २ ॥
निर्लोभी मन शुद्धता रे,
क्षमा गुण आधार रे । भवि० ॥ ३ ॥
पडिलेहण आदि शुचिरे,
संयम योग प्रचाररे । भवि० ॥ ४ ॥

मन वच काय अकुशलतारे,
रोधे नित्य अणगाररे । भवि० ॥ ५ ॥
क्षुधादि परिसह सहेरे,
उपसर्गके सहनाररे । भवि० ॥ ६ ॥
आतम लक्ष्मी गुण वरेरे,
वल्लभ हर्ष अपाररे । भवि० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥

सुखकरं शिवदं भवतारकं ।
जननमृत्युजराविनिवारकम् ॥
अघहरं सुरराजगणैर्नुतं ।
मुनिवरं परमेष्ठिपदं यजे ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते साधुपरमेष्ठिने जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ गीत ॥

॥ दोहा ॥

पूजक पूजनसे बने, पूज्य बराबर धार ।
पूजा फल पूजा करे, पामे भवोदधिपार ॥ १ ॥

॥ कव्वाली ॥

सुनि परमेष्ठि पद पूजन,

करे भविजीव शुभ भावे । अंचलि.

सूरि वाचककी सेवा, करे नित्य ज्ञान गुण पा

यदि निर्ग्रंथ गुण वर्णन,

करे गुण पार नहीं आवे । मु० ॥ १

समिति गुप्तिको पाले, भवाटवी फेरी वचजा

अहो समताके सागर हो,

सुमतिसे प्रीति मन लावे । मु० ॥

कमल सम लेप विन सहने,परिसह वीर सम था

मनोहर तेज तप कांति,

विमल जिम हंस जग गावे । मु०॥

समा जस शत्रु और मीता,थावर त्रस जीव समभ

आतम लक्ष्मी वल्लभ साधे,

मुनि मन हर्ष नहीं मावे । मु० ॥ ४

॥ कलश ॥

(रेख्ता.)

पूजो भविजीव आनंदा,

अहो परमेष्टी सुखकंदा ।

हरो भ्रम जालका फंदा,
मिटे जरा मरणका दंदा ॥ पूजो० ॥१॥
गुणि गुण अंत नहीं आवे,
सुरासुर नरपति गावे ।
यतिपति नाथ जिन जाणे,
शके कही नहीं कथन टाणे ॥ पूजो०२॥
महा मति मंद मैं कैसे,
शकुं कही पिण जगत जैसे ।
वदे शिशु शक्ति अनुसारी,
कहे तिम भक्ति आधारी ॥पूजो० ३॥
तपोगण गगन दीपाया,
श्रीविजयानंद सूरि राया ।
न्यायांभोनिधि विरुद धारी,
श्रीआत्माराम वलिहारी ॥ पूजो० ४॥
विजयलक्ष्मी गुरु दादा,
विजय श्रीहर्ष गुरुपादा ।
वल्लभ परमेष्ठिगुण गाया,
गुणिगुण गान रसपाया ॥ पूजो० ५॥

विजय कमल सूरि राया,
विजय श्रीवीर उवझाया ।
प्रवर्तक श्री विजय कांति,
प्रवर्तें राज्य अति शांति ॥ पूजो०६ ॥
संवत प्रभु वीर जगदीसा,
कमी सठ सय पण वीसा ।
आतम अठ दस विक्रम जानो,
सहस दोय त्रीस कम मानो ॥ पूजो०७॥
नगर मुंबई महा बंदर,
मनोहर शहर अति सुंदर ।
किया लालबाग चौमासा,
पूरण रचना फली आसा ॥ पूजो०८॥
सुधारी भूलचुक लेवे,
सज्जन मोहे माफ कर देवे ।
आगम विपरीतकी बाबत,
मिच्छामि दुक्कडं साबत ॥ पूजो० ९॥

॥ इति पंचपरमेष्ठि पूजा ॥

॥ पंचकल्याणकपूजा ॥



॥ च्यवनकल्याणके प्रथमा पुष्पपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चिंतामणि पारस प्रभु, सुरतरु सम अवदात ।
पुरिसादाणी जगतमें, षट् दर्शन विख्यात ॥१॥
प्राणी आरे पांचमें, सिमरे ऊठी प्रभात ।
मन वंछित पूरण करें, दुःख दोहग नस जात ॥२॥
अवसरपिणी तेईसमे, पार्श्वनाथ भगवंत ।
तस गणधर पद पायके, होगा शिववधु कंत ॥३॥
दामोदर जिनसे सुनी, निज आतम उद्धार ।
तब आषाढी श्रावके, मूर्त्ति बनाइ सार ॥ ४ ॥
अंजन शलाका करायके, सुविहित आचारज पास ।
पांच कल्याणक भाव से, करी ओच्छव फली आस५
सिद्ध स्वरूपसु रमणको, नूतन पडीमा सार ।
थापी पांच कल्याणके, पूजे धन नर नार ॥ ६ ॥
कल्याणक ओच्छव करी, सुर गण आनंद काज ।
जा नंदीश्वर पूजते, शाश्वत श्रीजिनराज ॥७॥

कल्याणक पूजन सहित, रचना करसुं तेम ।
दुर्जन विषधर हालसी, सज्जन मन अति प्रेम ॥८॥
कुसुम फल अक्षत सही, जल चंदन मनोहार ।
धूप दीप नैवेद्य से, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ९ ॥

(भैरवी, चाल-अब तो प्रभुजीका लेलो सरन)

पूजा प्रभुकी भवसिंधु तरी—पूजा० अंचली ।
झगमग झगमग वेदी सोहे,
प्रभु पारस तिहां थापी करी । पूजा० १ ।
रतन रकेवी नर नारी लेइ,
पांच वर्ण के फूलों भरी ॥ पूजा० ॥ २ ॥
तीर्थंकर शुभ नामकरम वंध,
कनक बाहुके भवमें धरी ॥ पूजा० ॥ ३ ॥
दशमे देवलोकमें पहुंचे,
सकल देवसे तेजी खरी ॥ पूजा० ॥ ४ ॥
वीस सागर उत्कृष्टी आयु,
सुख विलसे दुःख नाम टरी ॥ पूजा० ॥५॥
पांच कल्याणक श्रीजिनवरके,
ओच्छव करे सुरसंग चरी ॥ पूजा० ॥ ६ ॥

अग्रेसरी हो शाश्वत जिनकी,
करे पूजा तन मनको हरी ॥ पूजा० ॥ ७ ॥
आतम आनंद प्रभु पूजासे,
जग वल्लभ पद वीर वरी ॥ पूजा० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

च्यवन चिन्ह जिन समयमें, कहे देवके अनेक।
श्रीजिनवरके जीवको, उनमें से नहीं एक ॥

(सोहनी, चाल-भक्तिसे मुक्ति पावोगे)

नंदीश्वरतीरथ जावेजी,
जावेजी शुभ भावेजी ॥ नं० अंचली ॥
मुगतिपुरी मारगमें शीतल,
छाया तीरथ थावेजी ॥ नं० १ ॥
गंगाजल आदि शुभ जलसे,
जिनवरको नवरावेजी ॥ नं० २ ॥
सुकृत तरु सींची वहु भविजन,
शाश्वत शिवसुख पावेजी ॥ नं० ३ ॥
काशी देश वनारस नगरी,
अश्वसेन नृप ठावेजी ॥ नं० ४ ॥

कल्याणक पूजन सहित, रचना करसुं तेम ।
दुर्जन विषधर हालसी, सज्जन मन अति प्रेम ॥८॥
कुसुम फल अक्षत सही, जल चंदन मनोहार ।
धूप दीप नैवेद्य से, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ९ ॥

(भैरवी, चाल-अब तो प्रभुजीका लेलो सरन)

पूजा प्रभुकी भवसिंधु तरी—पूजा० अंचली ।
झगमग झगमग वेदी सोहे,
प्रभु पारस तिहां थापी करी । पूजा० १ ।
रतन रकेबी नर नारी लेइ,
पांच वर्ण के फूलों भरी ॥ पूजा० ॥ २ ॥
तीर्थंकर शुभ नामकरम बंध,
कनक बाहुके भवमें धरी ॥ पूजा० ॥ ३ ॥
दशमे देवलोकमें पहुंचे,
सकल देवसे तेजी खरी ॥ पूजा० ॥ ४ ॥
वीस सागर उत्कृष्टी आयु,
सुख विलसे दुःख नाम टरी ॥ पूजा० ॥५॥
पांच कल्याणक श्रीजिनवरके,
ओच्छव करे सुरसंग चरी ॥ पूजा० ॥ ६ ॥

अग्रेसरी हो शाश्वत जिनकी,
करे पूजा तन मनको हरी ॥ पूजा० ॥ ७ ॥
आतम आनंद प्रभु पूजासे,
जग वल्लभ पद वीर वरी ॥ पूजा० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

च्यवन चिन्ह जिन समयमें, कहे देवके अनेक।
श्रीजिनवरके जीवको, उनमें से नहीं एक ॥

(सोहनी, चाल-भक्तिसे मुक्ति पावोगे)

नंदीश्वरतीरथ जावेजी,
जावेजी शुभ भावेजी ॥ नं० अंचली ॥
मुगतिपुरी मारगमें शीतल,
छाया तीरथ थावेजी ॥ नं० १ ॥
गंगाजल आदि शुभ जलसे,
जिनवरको नवरावेजी ॥ नं० २ ॥
सुकृत तरु सींची बहु भविजन,
शाश्वत शिवसुख पावेजी ॥ नं० ३ ॥
काशी देश बनारस नगरी,
अश्वसेन नृप ठावेजी ॥ नं० ४ ॥

सतीशिरोमणि वामा राणी,
जिनमत जस मन भावेजी ॥ नं०५॥
तस घर सुर जिनवरका चेतन,
बालक रूपें आवेजी ॥ नं० ६ ॥
आतम आनंद हर्ष वधाई,
वल्लभ वीर की गावेजी ॥ नं० ७ ॥

॥ काव्यम्—उपजाति ॥

तीर्थंकराणां जगदुत्तमानां ।
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ॥
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां ।
निजात्मसिद्ध्यै शिवदा भवेत्सा ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ च्यवनकल्याणके द्वितीया फलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चेतर वदि दिन चोथको, पूरण करी सुर आय ।
वामा माता उदरमें, अवतरिया जिनराय ॥ १ ॥

सुपन चतुर्दश तिण समय, माता देखे सार ।
सुखशय्या विसरामसे, निजगृह रजनी मझार ॥२॥

(चाल पणिहारीकी)

फूल्यो मास वसंतको मारा व्हालाजी,
रायणने सहकार व्हालाजी ।
केतकी जाइ मालती मारा व्हालाजी,
भ्रमर करे झंकार व्हालाजी ॥ १ ॥
कोयल मदभर बोलती मारा व्हालाजी ।
बैठी आंबा डाल व्हालाजी ।
हंस युगल जल खेलते मारा व्हालाजी,
विमल सरोवर पाल व्हालाजी ॥ २ ॥
मंद पवनकी लहरमें मारा व्हालाजी,
माता सुपन निहाल व्हालाजी ।
सुखदायक सब जीवको मारा व्हालाजी,
प्रसरे सुजस विलास व्हालाजी ॥ ३ ॥
देखा प्रथम गज उज्जला मारा व्हालाजी,
दूजे वृषभ गुणवंत व्हालाजी ।
तीजे सिंहज केसरी मारा व्हालाजी,
चोथे श्रीदेवी सोहंत व्हालाजी ॥ ४ ॥

पुष्पमाल शुभ पांचमें मारा व्हालाजी,
छट्ठे शशि मनोहार व्हालाजी ।
सातमे तरणि दीपतो मारा व्हालाजी,
अष्टम ध्वज पट सार व्हालाजी ॥ ५ ॥
कुंभ कलश नवमे भलो मारा व्हालाजी,
दशमे पद्म सर जान व्हालाजी ।
क्षीर समुद्र एकादशे मारा व्हालाजी,
बारमे देव विमान व्हालाजी ॥ ६ ॥
रत्नराशि शुभ तेरमे मारा व्हालाजी,
चौदमे अग्नि वखान व्हालाजी ।
वीर वचन सुख कारिया मारा व्हालाजी,
आतम वल्लभ मान व्हालाजी ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

उतरते आकाशसे, वदन प्रवेश करंत ।
देखि माता जागिया, आनंदका नहीं अंत ॥१॥

(लावणी चाल—पार्वतीका पति)

च्यवन कल्याणक ओच्छव करके,
भविजनने सुख पाया रे ।

जैन शास्त्रमें पांच प्रकारका,
शुभ फल है फरमाया रे ॥ अंचली ॥
अवधि ज्ञानसे देखी शचीपति,
मनमें अति हर्षाया रे ।
शक्रस्तव करी वांदे प्रभुको,
अर्ध नमाकर काया रे ॥ च्य० ॥ १ ॥
अपना कर्तव्य जानी मघवा,
नगर बनारस आया रे ।
चउ दस सुपनका अर्थ सुनाकर,
नमे जिनेसर माया रे ॥ च्य० ॥ २ ॥
रत्न कूख धारिणी सुन माता,
त्रिभुवन राज तैं पायारे ।
ओच्छव कारण श्रीजिनवरके,
च्यवन कल्याणक आयारे ॥ च्य० ॥ ३ ॥
नंदीसर मिल करके चउसठ,
इंद्र महोच्छव ठाया रे ।
चार प्रकारके देवी देवता,
प्रभु भक्ति चित्त लाया रे ॥ च्य० ॥ ४ ॥

विधिसे प्रभुका पूजन करके,
कर नाटक गुण गाया रे ।
जय जयकार करी निज सदने,
सुरवर गये मन भाया रे ॥ च्य० ॥५॥
आतम आनंद कारण समकित,
इस विध सुर चमकाया रे ।
प्रभु पूजा विन वल्लभ नहीं शुभ,
वीर विजयने गाया रे ॥ च्य० ॥ ६ ॥

॥ काव्यं ॥

तीर्थकराणां जगदुत्तमानां,
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ॥
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,
निजात्मसिद्ध्यै शिवदा भवेत्सा ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥



॥ जन्मकल्याणके तृतीया अक्षतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुपन पाठक बोलाविया, रवि उदये घर भूप ।
सुन फल सुपन विदा किये, दई दान अनुरूप ॥१

तीन ज्ञान सुं ऊपजे, तेवीसमे अरिहंत ।
वामा उर सर हंसलो, दिन दिन वृद्धि लहंत ॥२॥
भूपति पूरे दोहला, सहियां वृंद समेत ।
प्रभु पूजे अक्षत धरी, चामर पंखा लेत ॥ ३ ॥

(चाल—तुम चिद्घन चंद आनंद लाल तोरे दर्शन)

प्रभु पारसनाथ जिनंदचंद ।
तोरे जनमतणी बलिहारी, नाथ तोरे० अंचली ॥
लील विलासे पुरण मासे,
दशमी पोष वदि सारी ॥ नाथ० ॥१॥
वनवासी पशु पंखी प्राणी,
उनको सुख सम कारी ॥ नाथ० ॥२॥
इण रजनी घर घरमें ओच्छव,
जगमें सुखी नर नारी ॥ नाथ० ॥ ३ ॥
उत्तम ग्रह विशाखा जोगे,
जनमे प्रभु जयकारी ॥ नाथ० ॥ ४ ॥
सातों नरकमें चांदना होया,
थावरको सुखकारी ॥ नाथ० ॥ ५ ॥
मात नमी आठों दिककुमरी,
अधोलोक वसनारी ॥ नाथ० ॥ ६ ॥

सूती घर ईशाने करती,
योजन अशुचि टारी ॥ नाथ० ॥७॥
आतम लक्ष्मी शिव साधन को,
वल्लभ वीर विचारी ॥ नाथ० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

कुमरी अठ ऊर्ध्व लोककी, वरसावे जल फूल।
आतम निर्मल निज करे, मिटे जन्मकी भूल॥१॥

(ठुमरी, चाल—गिरनारी की पहाडी पर कैसे गुजरी)

करे ओच्छव मिल कुमरी सारी । अंचली ॥
पूर्वरुचक अठ दर्पण धरती,
दक्षिण की अठ कलशाली। करे० ॥१॥
पंखा धरती अठ पश्चिमकी,
आठ उत्तर चामर धारी ॥ करे० ॥२॥
दीप धरंती चार विदिशिकी,
रुचक द्वीप देवी चारी ॥ करे० ॥ ३॥
केलिघर करके तिग उत्तम,
मर्दन स्नान अलंकारी ॥ करे० ॥ ४॥
रक्षा पोटली बांधके दोनों,
मेले निज गृह श्रृंगारी ॥ करे० ॥५॥

प्रभुमाता तूं जगतकी माता,
जगदीपक की धरनारी ॥ करे० ॥६॥
माता तुझ नंदन बहु जीवो,
उत्तम जीवके उपकारी ॥ करे० ॥७॥
छप्पन दिक्कुमरी गुण गाती,
वीर वचन के अनुसारी ॥ करे० ॥८॥
आतम आनंद हर्ष धरंती,
वल्लभ प्रभु की बलिहारी ॥ करे० ॥९॥

॥ काव्यं ॥

तीर्थंकराणां जगदुत्तमानां,
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ॥
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,
निजात्मसिद्ध्यै शिवदा भवेत्सा ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ जन्मकल्याणके चतुर्थी जलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सोहमपति आसन चल्यो, रची विमान विशाल।
प्रभु जन्मोच्छव कारणे, आवंता तत्काल ॥ १ ॥

(पहाड़ी, चाल—महाराजा कवडीया खोल)

मिल देव देवी परीवार,
जिन जन्म ओच्छव करे ॥ अंचली ॥
शक्र सुघोषा घंटा वजावे,
देव देवी सव मिल कर आवे ।
पालक सुर विमान वनावे,
पालक नाम प्रचार ॥ जिन० ॥ १ ॥
पार्श्वप्रभु मुख कमलको जोवा,
भवभव के निज पातक खोवा ।
सुर निज निज गण पावन होवा,
मुख वोले जयकार ॥ जिन० ॥ २ ॥
सिंहासन वैठा हरि वलिया,
देव देवी गण सुं परिवरिया ।
नारी मित्र प्रेर्या केइ चलिया,
केइ निज भाव विचार ॥ जिन० ॥३॥
केइ हुकम केइ भक्ति भावे,
मुख्य धरम निज मनमें मनावे ।
केइक कौतुक जोवा आवे,
फल भावों अनुसार ॥ जिन० ॥ ४ ॥

हय कासर हरि नाग निवासा,
गरुड छाग चित्रा पर वासा ।
वाहन नेक विमान आकासा,
संकीरण उपचार ॥ जिन० ॥ ५ ॥
कोइ बोले वहां बोल करारा,
सांकडा भाइ ए पर्व दहारा ।
इम वरजे केइ ज्ञान विचारा,
आनंद मंगलाचार ॥ जिन० ॥ ६ ॥
आए वनारस सर्व आनंदे,
जिनवर जननी को हरि वंदे ।
आतम चिदघन शिवसुख कंदे,
वल्लभ वीर आधार ॥ जिन० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

पांच रूप हरि निज करी, प्रभु ग्रही निज हाथ।
एक रूप छत्तर करे, मस्तकश्री जगनाथ ॥ १ ॥
दो पासे चामर करे, दो रूपे सुरराज ।
वज्र लइ आगे चले, सर्व श्रेयके काज ॥ २ ॥

(चाल—तन मन धन विन फन डस लेगी परनारी नागनी)

तन मन धन सुख संपत करनी प्रभु पूजा है खरी ॥

अहो दुखहारी सुखकारी प्रभुकी पूजा है खरी ।
मिटे जनम मरन का रोग प्रभुकी पूजा है खरी १
धन धन जग वो नर नार करे प्रभु पूजा जो खरी।
भव भव सुख संपत फल पावे प्रभु पूजा है खरी॥२॥
हित सुख अरु जोग कहे फल सुगति पूजा से खरी।
भव भवमें साथ चले फल पूजा पूजा है खरी ॥३॥
चउसठ इंदर सुरगिरि मिल करते पूजा है खरी।
खीरोदक गंगापाणी निर्मल पूजा है खरी ॥ ४ ॥
अठजाति कलशे भरके प्रभु की पूजा है खरी ।
अभिषेक अढाईसो करते प्रभु पूजा है खरी ॥५॥
आरती मंगल दीवा चंदन से पूजा है खरी ।
फूलें पूजे बाजींतर बाजें पूजा है खरी ॥ ६ ॥
अठ मंगल आदि ओच्छव करते पूजा है खरी ।
जा माता पासे प्रभु को धरते पूजा है खरी ॥७॥
कुंडल युग वस्त्र दडो गेडी प्रभु पूजा है खरी ।
द्वात्रिंशत् कोटी रत्न वरसिया पूजा है खरी॥ ८ ॥
प्रभु माता से धरे खेद प्रभु की पूजा है खरी ।
तस मस्तक थासे छेद प्रभुकी पूजा है खरी॥ ९॥
अंगुष्टामृत नंदीसर ओच्छव पूजा है खरी ।
करे राजा वधाइ ओच्छव दश दिन पूजा है खरी १०

प्रभु पारस नाम अनुपम वल्लभ पूजा है खरी ।
आतम शिवसाधन वीर कहे प्रभु पूजा है खरी ।११।

॥ काव्यं ॥

तीर्थंकराणां जगदुत्तमानां,
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ।
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,
निजात्मसिद्ध्यै शिवदा भवेत्सा ॥ १॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥



॥ जन्मकल्याणके पंचमी चंदनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अमृत पानसे उछरे, श्री श्री पार्श्वकुमार ।
अहिलंछन नव कर तनु, वरते अतिशय चार॥१॥
योवन वय पामे थके, मात पिता धरी नेह ।
परिणावे नृप पुत्रिका, प्रभावती गुण गेह ॥ २ ॥
चंदन घसी घनसारसे, निजघर चैत्य विशाल ।
पूजोपगरण मेलके, पूजे जगत दयाल ॥ ३ ॥

(चाल-सबमे ज्ञानवंत वडवीर)

श्रीश्रीपार्श्वनाथ भगवान ।
प्रभु हे सर्व गुणोंकी खान। श्री०॥अंचली॥

एक दिन क्रीडाकर प्रभु पैठे ।
अपने महलमें सुखसे बैठे ।
करते नगर तनी पैछान ॥ श्री० ॥ १ ॥
देखे लोक नगरके जाते ।
पूजोपगरण आनंद थाते ।
लेकर के संगमे खान पान ॥ श्री० ॥२॥
पूछा प्रभुने उत्तर मलीया ।
तापस वंदनको सब चलीया ।
उठी लोक सवेरे जान ॥ श्री० ॥ ३ ॥
योगी कमठ तपस्या धरता ।
अग्नि पंचकी सेवा करता ।
मनमें तपसी के अति मान ॥ श्री०॥४॥
पासकुमर देखन को जावे ।
तपसी पास प्रभु चल आवे ।
देखे तव जिन अवधिज्ञान ॥ श्री० ॥५॥
कहे प्रभु सुन तापस सुखकारण ।
तेरा जाप योग नहीं तारण ।
अग्नि वीच जले अज्ञान ॥ श्री० ॥ ६ ॥

कहे सुन राजकुमर तुम जानो ।
अश्व खिलाना योग न मानो ।
योगी का है दूर मकान ॥ श्री० ॥ ७ ॥
तुझको किसने योग धराया ।
केवल कष्ट शरीर बताया ।
कीना नही धर्म ओलखान ॥ श्री०॥ ८ ॥
आतम आनंद लक्ष्मी दाता ।
धर्म तना प्रभु पारस ज्ञाता ।
वल्लभ श्री शुभ वीर वखान ॥ श्री० ॥९॥

॥ दोहा ॥

कमठ कहे धर्मी गुरु, हम नहीं कौड़ी पास ।
भूल गये दुनिया दशा, करते वनमें वास॥१॥

(सोरठ-चाल-कुमताने जादु डारा)

प्रभु पारस मोहनगारा,
जिन्हें मोह लिया जग सारा। प्र०अंचली॥
कहे प्रभु वनवासी पशु पंखी,
तुम ऐसे निरधारा ।
योगी नहीं पिण भोगी कहिए,
संगत है संसारा ॥ प्र० ॥ १ ॥

जान बुरा संसारको छोड़ा,
सुन हो राजकुमारा ।
जोगी जंगल सेवत प्यारे,
लेकर धर्म आधारा ॥ प्र० ॥ २ ॥

दया धर्मका मूल कहा है,
जानत नाहीं गमारा ।
जीव दया विन जगमें होवे,
तप जप निष्फल सारा ॥ प्र० ॥ ३ ॥

बात दयाकी हमको सुनावो,
माफ़ कसूर हमारा ।
वार वार क्या कहना प्यारे,
ऐसा शोच विचारा ॥ प्र० ॥ ४ ॥

प्रभु हुकमसे काष्ट सेवकने,
फाड़के नाग निकारा ।
सेवक मुख नवकार सुनाके,
धरणेंद्र नागकुमारा ॥ प्र० ॥ ५ ॥

राणी साथ वसंतमें वनमें,
बैठे महल सुखारा ।

राजीमतिको छोड़के संयम,
लीना नेम कुमारा ॥ प्र० ॥ ६ ॥
चित्रामण जिन निरखत भीना,
रस वैरागे भारा ।
लोकांतिक सुर आकर बोले,
संजम अवसर थारा ॥ प्र० ॥ ७ ॥
मात पिताकी आज्ञा लेकर,
वरसी दान दातारा ।
दीनातम कीने सुखी वल्लभ,
वीर वचन हितकारा ॥ प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥

तीर्थंकराणां जगदुत्तमानां,
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ॥
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,
निजात्मसिद्धयै शिवदा भवेत्सा ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

जान बुरा संसारको छोड़ा,
सुन हो राजकुमारा ।
जोगी जंगल सेवत प्यारे,
लेकर धर्म आधारा ॥ प्र० ॥ २ ॥

दया धर्मका मूल कहा है,
जानत नाहीं गमारा ।
जीव दया विन जगमें होवे,
तप जप निष्फल सारा ॥ प्र० ॥ ३ ॥

बात दयाकी हमको सुनावो,
माफ कसूर हमारा ।
वार वार क्या कहना प्यारे,
ऐसा शोच विचारा ॥ प्र० ॥ ४ ॥

प्रभु हुकमसे काष्ट सेवकने,
फाड़के नाग निकारा ।
सेवक मुख नवकार सुनाके,
धरणेंद्र नागकुमारा ॥ प्र० ॥ ५ ॥

राणी साथ वसंतमें वनमें,
बैठे महल सुखारा ।

राजीमतिको छोड़के संयम,
लीना नेम कुमारा ॥ प्र० ॥ ६ ॥
चित्रामण जिन निरखत भीना,
रस वैरागे भारा ।
लोकांतिक सुर आकर बोले,
संजम अवसर थारा ॥ प्र० ॥ ७ ॥
मात पिताकी आज्ञा लेकर,
वरसी दान दातारा ।
दीनातम कीने सुखी वल्लभ,
वीर वचन हितकारा ॥ प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥

तीर्थंकराणां जगदुत्तमानां,
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ॥
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,
निजात्मसिद्ध्यै शिवदा भवेत्सा ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥



॥ दीक्षाकल्याणके षष्ठीं धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अवसर वरसी दानके, भव्य जीव लिये दान ।
रोग हरे षट मास का, हो तनु सुंदर वान ॥१॥
धूपघटी धरी हाथ में, दीक्षा अवसर जान ।
देव असंख मिला तिहां, मानो संजम ठान ॥२॥

(श्रीराग, चाल—मंगल पूजा सुरतरु कंद)

दीक्षा कल्याणक शिव सुख कंद ॥ दी० ॥ अंचली॥
तीस वरस गृहवासे वसीया,
सुख भर वामाजीके नंद ।
संजम रसिया जानके आए,
मिलकर सुरगण चउसठ इंद ॥ दीक्षा० १॥
तीर्थोदक वर औषधि लाके,
आठ जातिके कलशे भरंद ।
अश्वसेन नृप आदिमें पीछे,
सुरपति जिन अभिषेक करंद ॥ दीक्षा० २॥
कल्प वृक्ष सम प्रभु अलंकारी,
विशाला शिबिका अभिनंद ।
सिंहासन बैठे प्रभु सोहे,
उडुगणमें सोहे जिम चंद ॥ दीक्षा० ३ ॥

पट शाटक लेइ दक्षिण पासे,
बैठी कुल महत्तरिका छंद ।
वाम पासे अंबधात्री बैठी,
यौवना पाछल छत्र धरंद ॥ दीक्षा० ४ ॥
फल लेइ ईशान कून में,
अग्नि कूण एक पंखा लहंद ।
चलत पालखी गीत गावती,
साथे सर्व सहेली वृंद ॥ दीक्षा० ५ ॥
शक्र ईशान इंद्र करे चामर,
वाजींत्रका नहीं पार गहंद ।
अष्ट मंगल चलते प्रभु आगे,
इंद्रध्वजा चले आगे जिनंद ॥दीक्षा० ६॥
देव देवी नर नारी झुक झुक,
वार वार प्रणाम करंद ।
आतम अनुभव आनंद मंगल,
वल्लभ वीर वचन विकसंद ॥ दीक्षा० ७॥

॥ दोहा ॥

दीठा जिन जिनराज को, सफल जन्म है तास ।
अनुमोदन कर प्राणिया, सफल मनावे आस॥१॥

(चाल—आशक तो होचुका हुं)

दीक्षा प्रभुकी जोवे, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ अं०॥
जय वामाजीके नंदा, कटो जन्म जन्म फंदा ।
कुलवृद्ध वोले वानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ दी०१॥
चकचूर मोह करियो, दालिद्र दूर हरियो ।
जिम होए वरसी दानी, जग पुण्यवंत प्रानी॥दी०२
पहुंचे वहिर नगरिया, वरघोड़े से उतरिया ।
आश्रमपद उद्यानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ दी०३
अशोक वृक्ष हेठे, भूषण तजके वैठे ।
अट्ठम तप मानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ दी०४॥
महाव्रत चार उचरे, वदि पोष मास शुचरे ।
एकादशी सुहानी, जग पुण्यवंत प्रानी॥दी ०५॥
परिवार शत तीनो, देवदूष्य इंद्र दीनो ।
प्रभु होए तुर्य ज्ञानी, जग पुण्यवंत प्रानी॥दी०६
नंदीसरे सुर जावे, माता पिता घर आवे ।
काउसग जिन ध्यानी, जग पुण्यवंत प्रानी॥दी०७
आतम आनंद दाता, पारस प्रभु है त्राता ।
वल्लभ वीर जानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ दी०८

॥ काव्यं ॥

तीर्थंकराणां जगदुत्तमानां,
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ।
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,
निजात्मसिद्धौ शिवदा भवेत्सा ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥



॥ केवलज्ञानकल्याणके सप्तमी दीपकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

धन सारथी घर पारणा, किया प्रथम भगवान ।
पांच दिव्य परगट हुए, तास मुक्ति सुखखान॥१॥
जगदीपक प्रकटावता, तप तपता उद्यान ।
तिण दीपककी पूजना, करते केवल ज्ञान ॥२॥

(कानडा—ताल तीन)

प्रभु पार्श्वनाथ जिनवर का,
कर दरस फरस मन हरस भयो ॥प्र०अं०॥
नीलवर्ण तनु पार्श्व सुहावे,
कादंबरी अटवी प्रभु आवे ।

कुंड सरोवर नाम कहावे,
शोभे पद्म सुजर का ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
काउसग मुद्रामें प्रभु ठावे,
हाथी तहां एक वनसे आवे ।
सूंढ भरी जलसे नवरावे,
ऐसे नजर कमर का ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
तीरथ तहां कलिकुंड ही थावे,
हाथी गति देवनकी पावे ।
कौसुंभ वन धरणींद्र आवे,
वांदे चरण अजर का ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
तीन दिवस फणी छत्र धरावे,
अहि छत्रा नगरीको वसावे ।
तापस घर पीछे प्रभु आवे,
स्वामी अजर अमर का ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥
वड़के नीचे ध्यान लगाया,
कमठ मरी मेघ माली थाया ।
देख विभंगे अरि वन आया,
लागा पसर तिमर का ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

बहुजाति उपसर्ग ही दीना,
नहीं चलिया प्रभु ध्यानमें लीना ।
आतम वल्लभ वीर नगीना,
पाया विजय समर का ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

जल भरी बादल बरसिया, गाजे तडित् चमकार ।
नासाग्रे प्रभु आईया, जल नही लागी वार ॥१॥
धरणींद्र तब आईया, लेई प्रियाको साथ ।
हरी उपसर्ग पूजे प्रभु, मोक्ष मार्ग के पाथ ॥२॥
तब धूजो निज पापसे, मेघ माली सुर आप ।
प्रभु भक्ति समकित लही, धोए अपने पाप ॥३॥

(पीलु—चाल—तोरी सुरतकी जाऊं बलिहारी)

प्रभु सुरत की जाउं बलिहारी,
केवल कल्याणक छप न्यारी ॥ प्र०अंचली॥
आए काशी उद्याने स्वामी,
काउसग मुद्रा ध्यान की धारी
वीर्य अपूरव अति उल्लासे,
नाश किये घन घाती चारी। प्रभु० ॥१॥

चउरासी दिन छउमत्थ रहिया,
चैत्र वदि तिथ चौथ ही सारी ।
अट्ठम तप तरु धातकी नीचे,
केवल ज्ञान भयो उजयारी ॥ प्र० ॥ २ ॥
मिल सुर चउसठ इंद्रे कीनी,
समवसरण रचना मनोहारी ।
सिंहासन पारस प्रभु सोहे,
करे नाटक सुर आनंद भारी ॥ प्र० ॥३॥
त्रौं त्रौं त्रिक त्रिक वीणा वाजे,
धौं धौं धप मप धुन ढक्कारी ।
दगड दउं दगड दउं दुंदुभि गाजे,
ता थइ ता थेइ जय जयकारी ॥प्र०॥४॥
चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी,
प्रगटे अरिहंत के गुण वारी ।
स्याद्वाद उपदेश करीने,
संघ तीर्थ थापे जिन चारी ॥ प्र० ॥ ५ ॥
वनपाल ने भूपाल वधाई,
दान देई नृप आवे शृंगारी ।

मात पिता प्रभावती राणी,
जिन वाणी सुन हुए अनगारी ॥प्र०॥६॥
संघ गणि पद ज्ञान महोत्सव,
देव करे मिल चार प्रकारी ।
आतम आनंद निज गुण दाता,
वल्लभ वीर वचन हितकारी ॥ प्र० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥

तीर्थकराणां जगदुत्तमानां,
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ॥
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,
निजात्मसिद्ध्यै शिवदा भवेत्सा ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय दीपकं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥



॥ निर्वाणकल्याणके अष्टमी नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

शुभ आदि दश गणधरा, साधु सोल हजार ।
सहस आठ तीस साधवी, चार महाव्रत धार ॥१॥

एक लाख चौसठ हजार, श्रावकका परिवा
सहस सत्ताईं श्राविका, तिग लख ऊपर धार
देश वृत्तिधर ए सहू, पूजे जिन तिग काल
प्रभु प्रतिमा आगल धरे, नित नैवेद्यका थाल

(जयजयवंती)

पार्श्व प्रभु का दर्श सुहंदा,
प्रभु दर्शन से होत आनंदा ॥ पा०अंच
वेधक वेधकता को जाने,
और नहीं तस स्वाद लहंदा ।
तिम प्रभु दर्शन का फल जाने,
दर्शक भवी नहीं अभवी गहंदा ॥ पा
पर उपकारी जग हितकारी,
जिनवर केवल ज्ञान दिनंदा ।
विचरंता परिवार सहित प्रभु,
कनक कमल पर पाय. ठवंदा ॥ पा०
सुर जल बुंद कुसुम वरसावे,
चामर सिर पर छत्र धरंदा ।
तरु मारगमें जातां नमता,
तारण भवि उपदेश करंदा ॥ पा० ॥

पैंतीस गुण वाणी प्रभुधारी,
नर नारी सुर अपछर वृंदा ।
प्रभु आगल नाटक करे सुंदर,
अवनी तल पावन जिन चंदा ॥ पा० ॥४॥
आए कारण अंत चउमासा,
तीर्थ शिखर सम्मेद गिरींदा ।
श्रावण सुदि आठम करी अनसन,
एक मास संग तेती मुनींदा ॥ पा० ॥५॥
काउसग मुद्रा शिव सुख पाये,
सादि अनंत अज अचर जिनंदा ।
आतम आनंद चिदघन राशि,
वल्लभ वीर वचन सुखकंदा ॥ पा० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

समय कहे दृष्टांत चउ, कर्म रहित अशरीर ।
एक समय सम श्रेणिसे, ऊर्ध्वगति घन थीर ॥१॥

(जंगलो-ठुमरी चाल—मन मोह्या जंगलकी हरणी ने)

भवि नंदो पार्श्व शिव वरणी ने । भवि०॥ अंचली ॥
पार्श्व प्रभु निर्वाण को जानी,
सुरपति सब आए धरणी ने ॥ भ० ॥१॥

क्षीरोदधि आदि सब जल से,
स्नान विलेपन करणी ने ॥ भ० ॥ २ ॥
भूषण वसन शरीरे धारी,
शोभा करे मन हरणी ने ॥ भ० ॥ ३ ॥
चंदन चयमें सुर परजाले,
भक्ति शोक विचरणी ने ॥ भ० ॥ ४ ॥
थूभ करे ते ऊपर सुंदर,
जिन शासन अनुसरणी ने ॥ भ० ॥५॥
दाढ़ा लई दीवाली सुर करी,
अस्त हुए भाव तरणि ने ॥ भ० ॥ ६ ॥
नंदीसर निर्वाण महोच्छव,
करी गए सुर निज घरणी ने ॥ भ०॥७॥
वल्लभ अंतर वीर अढ़ी सौ,
आतम शिव वधू परणी ने ॥ भ० ॥८॥

॥ छंद ॥

इम पांच कल्याणक तणी पूजा प्रभु पारसतणी।
शत वर्ष जीवी सुख अक्षय पामे निःकर्मा वनी।
प्रभुपाद सेवा मुक्ति लेवा पूजा निज शक्ति भणी।
वंछित मन फल आस पूरे पास श्री चिंतामणि ॥१॥

॥ काव्यं ॥

तीर्थंकराणां जगदुत्तमानां,
सुरासुराधीशनिषेवितानाम् ।
कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,
निजात्मसिद्ध्यै शिवदा भवेत्सा ॥ १ ॥

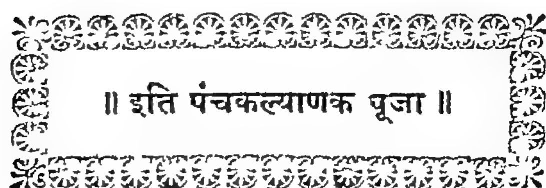
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ कलश ॥

(चाल—मिल पयो वैद्य)

धन दिन आज कल्याणक गाया॥ध०॥अंचली०॥
पार्श्वनाथ जग अंतरजामी,
पुरिसा दानी कहाया ।
पांचकल्याणक ओच्छव करते,
घर घर मंगल माया ॥ ध० ॥ १ ॥
तपगच्छ गगनमें तरणि सोहे,
विजयानंद सूरि राया ।
लक्ष्मीविजय तस हर्षविजय तस,
शिष्य वल्लभ लघु थाया ॥ ध० ॥ २ ॥

संवत वीर चौवीसौ तेतीस,
आत्म एकादश भाया ।
विक्रम उन्नीसौ त्रेसठमें,
महीना माघ सुहाया ॥ ध० ॥ ३ ॥
विजय कमल सूरीश्वर राजे,
वीरविजय उवझाया ।
कांतिविजय प्रवर्तक दीपे,
नमु नित्य तिनके पाया ॥ ध० ॥ ४ ॥
आत्मानंदी जैनसभाकी,
प्रेरणा हर्ष सवाया ।
शक्ति नही पिण भक्ति तणे वस,
जीरा नगर गुण गाया ॥ ध० ॥ ५ ॥
श्रीशुभवीर वचन अनुसारे,
पांचकल्याणक गाया ।
भूल चूक मिच्छामि दुक्कड,
वल्लभ सीस नमाया ॥ ध० ॥ ६ ॥


॥ इति पंचकल्याणक पूजा ॥

॥ अथ एकवीस प्रकार पूजा ॥



॥ दोहा ॥

श्रीश्रीआदिदेवश्री, ऋषभजिनंद दयाल ।
पदकज प्रणमुं भावसे, होवे मंगल माल ॥ १ ॥
जिनवाणी गुरु चरणको, नमन करी भविकाज ।
पूजा इकवीस भेदसे, वर्णवुं श्रीजिनराज ॥ २ ॥
स्नपन विलेपन आभरण, पुष्प वास वर धूप ।
दीपक फल अक्षत शुचि, पत्र पूग सद्रूप॥३॥
नैवेद्य निर्मल जलकलश, वस्त्र चमर सित छत्र ।
वाद्य ध्वनि शुभ गाजती,गायन नटन विचित्र॥४॥
जिनवर गुण स्तुति सुख करी, कोपवृद्धि मनधार ।
जिनगणधर फरमानसे, पूजा एकवीस सार॥५॥



॥ पहली जलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पूजा पहली मानिये, स्नपन करे प्रभु अंग ।
भव्यजीव अर्चन करी, करे कुमति मल भंग ॥१॥

(गजल ॥ देशी—आशफतो होचुका हुं)

पूजा प्रभुकी कीजे, मनमाना फल लीजे ॥अं०॥

आगम वाणी बोले, प्रभु पूजा फल खोले ।
उपांग मांही बीजे, मनमाना फल लीजे ॥ १ ॥
हित सुख जोग कारी, पद मोक्ष को दातारी ।
संगात साथी कीजे, मनमाना फल लीजे ॥ २ ॥
निर्मल तीर्थ पानी, क्षीरोद आदि आनी ।
कलशा कनक भरीजे, मनमाना फल लीजे ॥३॥
चोसठ इंद्र करते, जिन स्नात्र पुण्य भरते
शुभ भाव तिम धरीजे, मनमाना फल लीजे ॥४॥
श्रावक शुद्ध भावे, करी स्नात्र हर्ष पावे ।
वल्लभ आत्म रीजे, मनमाना फल लीजे ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

(देशी—तेरी छलवल है न्यारी.)

प्रभु पूजा है प्यारी, भव पार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरेप्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह२
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय

जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥



॥ दूसरी विलेपन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चंदन कुंकुम मृगमदा, घसी भेली घनसार ।
जिनवर अंगे कीजिये, तिलक विलेपन धार ॥१॥

(सोहनी—देशी—ढूंढ फिरा जग सारा)

लेपन फल सुखकारा सुखकारा,
भविजन कीजे अर्चना ॥ अंचली ॥
बावना चंदन कुंकुम मेली,
मृगमद कर्पूर गंध सु भेली ।
नव अंग जिन हितकारा हितकारा, भविजन॥१॥
पग जानू कर अंशोत्तम अंग,
भाल कंठ उर मनमें उमंग ।
नाभिकमल मलहारा मलहारा, भविजन ॥ २ ॥
तिलक त्रयोदश नव अंग जानो,
श्री जिनचंद विलेपन मानो ।
भवोदधि पार उतारा उतारा, भविजन ॥ ३ ॥

नव अंग तिलके निधि नव थावे,
तस मिटे तन मन सुख पावे ।
पूजन प्रभु दुःख टारा दुःख टारा, भविजन॥४॥
सुर सुरपति नर नरपति करते,
प्रभु पूजा आतमपद वरते ।
वल्लभ गुरु उपकारा उपकारा, भविजन ॥ ५ ॥

॥ काव्य पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन वनावो ।
पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह २

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुपाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥



॥ तीसरी आभूपण पूजा ॥

॥ दोहा ॥

आभूपण पूजा भली, त्रीजी श्री जिनराय ।
करते भवी शुभ भावसे, तन मन अति लसायहु ।१।

(देशी—हमको छोड चले वन माधो)

भूषण पूजा हरिगण विरचे,
हित सुख आनन्दकार करोरे । भू० अंचली ॥
विविध रत्न मणिमय अति सुंदर,
जिन अंग भूषण धार ठरोरे ।
निरुपम अनुभव रस लहे भविजन,
मन वच काय उदार नरोरे ॥ भू० ॥ १ ॥
सुंदर मस्तक मुकुट विराजे,
चंद्र सूर्य छवि सार हरोरे ।
अर्ध चंद्र सम प्रभु भाल स्थल,
विमल तिलक मनोहार धरोरे ॥ भू० ॥ २
कानमें कुंडल झगमग दीपे,
कंठमें दीपे हार खरोरे ।
बांहे बाजुबंद हाथमें कंकण,
कमर कंदोरा सार भरोरे ॥ भू० ॥ ३ ॥
भूषणसे भूषित जिन तनुको,
कीजे श्रावकाचार वरोरे ।
तस फल भूषित निज तनु होवे,
जयजय मंगलाचार धरोरे ॥ भू० ॥ ४ ॥

बाहिर झगमग अंतर ज्योति,
  प्रगटे भाव विचार तरोरे।
आतम निर्मल चिद्‌घन रूपे,
  वल्लभ हर्ष अपार सरोरे ॥ भू० ॥ ५ ॥

॥ काव्य-पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
  करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो।
  पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान।
करो पूजा भगवान, धरो सुमतिका ध्यान,
  करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह३

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय भूषणानि यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥



॥ चौथी पुष्पपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पांच वर्ण कुसुमे करी, पूजे श्री जिनराय।
भविजन पामे पूजतां, पंचम गति सुखदाय ।१।

(वडहंस, देशी—नाथ कैसे गजको फंद छुडायो)

भविकजन पूजो श्री जिनराया,
एतो भव भवमां सुखदाया ॥ भ० ॥ अं०
कुंद वकुल मचकुंद मालती,
दमनक अरविंद गाया ।
नाग पुन्नाग मंदार केतकी,
जाइ तिलक मन भाया ॥ भ० ॥ १ ॥
जासूस जूइ गुलाव मोगरा,
मल्लिका चंपा सुहाया ।
नव मालिकाली गुणशाली,
केवडा वास भराया ॥ भ० ॥ २ ॥
जलज थलज इत्यादि सुमगण,
रची वादल वरसाया ।
सुरगण सुरगणपति शुभ भावे,
समकिती सव हर्षाया ॥ भ० ॥ ३ ॥
सुरभि कुसुम प्रभु निष्कामी तुम,
चरननमें सुखदाया ।
कामी देवको आक धतूरा,
मूरख मन भरमाया ॥ भ० ॥ ४ ॥

जिम जिन चरणमें हरिगण पूजे,
तिम श्रावक फरमाया ।
आतम वल्लभ कुसुमार्चनसे,
मोह कुमति गढ़ ढाया ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह२

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥



॥ पांचमी वासक्षेपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पांचमी पूजा वासकी, सुरनर विरचे वास ।
भाव धरी शुभ वासना, करवा मुक्ति वास ॥१॥

(माढ़—दादरा—देशी मेरे गमका तराना)

जय जय नर नारा मल हरनारा,
पूजक श्री भगवान ।
भवि दुःख हरनारा, सुख करनारा,
जिनमत प्यारा, पूजक श्री भगवान । अंचली ।
बावना चंदन कुंकुम मृगमद, तगर अंबर घनसार ।
कृष्णागरु कंकोल सुगंधी, चूरण विविध प्रकार ॥
भविदुःखहरनारा सुखकरनारा० ॥ १ ॥
रुचिर द्रव्य सब चूरण भेली, अंग उपांगजिनंद ।
पूजोप्रभुपद जगसिर तिलको, लहो सुख आनंद कंद ॥
भवि दुःख हरनारा सुखकरनारा० ॥ २ ॥
नासन भव कुवासनारे, ये चूरण भरपूर ।
जिन चरनन पूजन कियोरे, दूरित करे चकचूर ॥
भवि दुःख हरनारा सुखकरनारा० ॥ ३ ॥
पूजन करतां महमहेरे, दश दिशि वास सुगंध ।
नूर चढे तन ऊपरेरे, नासे भव दुर्गंध ॥
भवि दुःख हरनारासुखकरनारा० ॥ ४ ॥
पूजक पूजा कारणेरे, पूज्य स्वयं पद लेत ।

आतम लक्ष्मी संपजेरे, वल्लभ आनंद हेत ॥
भवि दुःखहरनारा सुखकरनारा० ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह२

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय वासान् यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ छट्ठी धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

छट्ठी पूजा जिनतणी, करे सुरासुर राय।
धूप दशांग मिलायके, आतम आनंद पाय ॥१॥

(देशी—पनीहारीकी)

सेल्हारस कृष्णागरु मारा वालाजी,
सुरभी मृगमद सार वालाजी ॥

अगर तगर कुंदरु भलो मारा वालाजी,
चंदनअरु घनसार वालाजी ॥ १ ॥
अंबर शुभ द्रव्य शर्करा मारा वालाजी,
मेली धूप बनाय वालाजी ॥
कनक जात वैडूर्यका मारा वालाजी,
धूपधान मन भाय वालाजी ॥ २ ॥
सुरपति जिम भक्ति करे मारा वालाजी,
तिम तुम करो भविभाव वालाजी ।
धूप धूम उरध दिशि मारा वालाजी,
गति उरध तुम थाव वालाजी ॥ ३ ॥
धूप जले जिम पावके मारा वालाजी,
भक्तिमें तिम कर्म वालाजी ।
वामांगे जिन पूजतां मारा वालाजी,
पावे भवि शिवशर्म वालाजी ॥ ४ ॥
फैले गंध दशो दिशि मारा वालाजी,
तिम पूजक वर गुण वालाजी ।
आतम लक्ष्मी पामिये मारा वालाजी,
वल्लभ हर्ष अनून वालाजी ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो,
पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ सातमी दीपकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

दीपकपूजा सातमी, करे भविक शुभ वास।
ज्ञान भाव विकसित करी, अज्ञ तिमिर करे नास॥१॥

(देशी—महबूब जानी मेरा)

पूजा प्रभु आनंदकारी, भव पार उतारी।
कीजे भवि मन शुद्ध करके,
आज्ञा जिनेंद्र[illegible]सारी ॥ पू० ॥ १ ॥
दीपक कीजे प्रभु आगे[illegible] टारे अंधकारी।

अज्ञान तिमिरको नासे,
निज रूप विहारी ॥ पू० ॥ २ ॥
निर्मल गोघृतसे भरके, करुणा रस धारी ।
फानसमें दीपक कीजे,
भक्ति प्रभु प्यारी ॥ पू० ॥ ३ ॥
मिथ्यात्व तिमिर घट ताकुं, ज्योति उपकारी ।
प्रगटे मन अंदर ज्ञाता,
चिद आनंद भारी ॥ पू० ॥ ४ ॥
आतम लक्ष्मी प्रभु पूजा, आतम वलिहारी ।
वल्लभ मन हर्ष मनावे,
पूरण हितकारी ॥ पू० ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा हे प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन वनावो ।
पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह२

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वरा
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय दी
यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ आठमी फलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मन वच काया इक करी, कीजे विविध प्रकार
फल पूजा भवी आठमी, शिव सुख फल दातार ॥

(देशी—अब मोहे पार उतार जिनंदजी)

भवजल तारण हार जिनंदजी,
भव जल तारण हार ।
जन्म मरण भव दुःख निवारी,
पूजक पार उतार । अंचली ।
नवरंगी नारंगी निर्मल,
नींबु आम्र फल सार ।
कदलीफल श्रीफल जंवीरी,
[illegible] वदाम अनार ॥ १ ॥
पिसतां निमजां सेव संतरां,
सीताफल सुखकार ।

पूगीफल तरबूजां अखोडां,
खरबूजां रसदार ॥ २ ॥
इत्यादि सुरभि स्वादु फल,
सुंदर दोष निवार ।
कंचन थाल विशाल भरीने,
जग नायक पुर धार ॥ ३ ॥
सुरपति भक्ति करे तिम भविजन,
फल पूजा करतार ।
सुर सुख फल लई श्रावक होवे,
शिव वनिता भरतार ॥ ४ ॥
फल पूजा श्री जिनवर केरी,
आतम लक्ष्मी दातार ।
मनुज गति सुवेल सफल हो,
वल्लभ हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।

करो पूजा भगवान, धरो सुमतिका ध्यान,

करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ३

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ नवमी अक्षतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अक्षय सुखके कारणे, अक्षत पूजा होय ।

शुचि अक्षत जिन पूजिए, आगम अक्षर जोय ॥१॥

(देशी—नाटककी)

भविजन करणी, जिनवर वरणी ।

प्रभु पूजा शिव सुख दाय दाय दाय । अंचली ।

सुर असुर नर खेचर स्वामी,

करी पूजा भावे शिव जाय जाय जाय । भ० ।१।

अति अपार भवसागर मांही,

तारनेको नावा सम थाय थाय थाय ॥ भ०॥२॥

भाव धरी भरी थाल कनकका,

अक्षत अखंड शुभ लाय लाय लाय ॥भ०॥३॥

स्वस्तिक पूरे कर्म को चूरे,
जिनवर आगल भवि आय आय आय ॥भ०॥४॥
आतम लक्ष्मी फल पूजाका,
वल्लभ हर्ष मन पाय पाय पाय ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ काव्य-पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ॥
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ॥
करो पूजा भगवान, धरो सुमतिका ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ३
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ दशमी पत्रपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मुद्रा करण दशी कीजिए, श्रद्धा शुद्धवनाय ।
पूजा दशमी पत्रकी, हृदय रमे जिनराय ॥ १ ॥

(देशी-होई आनंद वहाररे)

पत्र पूजा मनो हाररे, भवि विधिसे कीजे ॥
विधिसे कीजे शिवसुख लीजे। पत्र० अंचली ॥
नाग पुन्नाग मरुक अरविंदो,
मचकुंद कुंद मंदाररे ॥ भ० ॥ १ ॥
अंव कदंव अशोक मल्लिका,
जाई शतपत्री धाररे ॥ भ० ॥ २ ॥
जुइ प्रमुख शुभ वर्ण सुगंधी,
मेली दल अतिसाररे ॥ भ० ॥ ३ ॥
कनक पात्र धरे जिन विंव आगे,
समकित धर नर नाररे ॥ भ० ॥ ४ ॥
आतम जिनपद जिन अर्चनसे,
वल्लभ हर्ष अपाररे ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन वनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।

करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ३

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पत्राणि यजामहे स्वाहा ॥ १० ॥



॥ ग्यारवीं पूगीफलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

ग्यारवीं पूजा मानिए, पूगीफल अति चंग।
भवि जिन चरणे ढोइए, होवे भंग अनंग ॥१॥

(सोरठ—कुबजाने जादू डारा—देशी ॥)

जिन पूजन आनंद कारा,
प्रभु भवजल पार उतारा ॥ जिन० अंचली ॥
चरण कमल जिनवर अरचीजे,
होय भ्रमर भवि प्यारा।
जैसे कीट बदल होवे भमरी,
ध्यान प्रभु उपकारा ॥ जि० ॥ १ ॥
पूगीफल शुभ सरस अखंडित,
अमृतरस सम सारा।

भक्ति युक्ति धर जिनवर आगे,
ढोवे आनंद भारा ॥ जि० ॥ २ ॥
सुरनायक सम भविजन निरखी,
श्रीजिनचंद दिदारा।
जिनपद पूजन सुंदर कीजे,
तजी संसार असारा ॥ जि० ॥ ३ ॥
पूगीफल पूजा फल भविजन,
सुंदर चित्त विचारा।
पद चिदघन आनंद लहो सुख,
प्रवचन वचन उदारा ॥ जि० ॥ ४ ॥
आतम पूजा जिनवर पूजा,
परमानंद पद धारा।
अजर अमर अज अटल निरंजन,
वल्लभ हर्ष अपारा ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी, मेरे प्यारे सुजान।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन वनावो।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान।

करो पूजा भगवान धरो सुमति का ध्यान ।
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ३

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूगीफलानि यजामहे स्वाहा ॥ ११ ॥

॥ बारवीं नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

बारवीं पूजा जिनतणी, शुचि नैवेद्य रसाल ।
भविजन भावे पूजिये, भर भर सुंदर थाल ॥१॥

(देशी—नाटककी—श्री शंखेश्वरा)

जय जय जिनेश्वरा तूं मुनीश्वरा,
अर्चन शुभ भावसे करूं ठरा ठरा ॥ अंचली॥
लपनसीरी वर घेवर सुंदर, दालि सालि घृत धार ।
मोदक मोतीचूर सेवियां, फेणी खाजां सार॥ज०१॥
बरफी खोपरापाक ने घारी, मगदल अति मनोहार ।
पेडा अमृतपाक पतासा, सक्करपारा हार ॥ज०२॥
खीर खांड घृत बिचमें भेली, दूधपाक कंसार ।
बूंदी लाखनसाइ चूरमा, केसरीया सुखकार॥ज०३॥

इत्यादि नैवेद्यसे भरके, सुंदर सोना थार ।
श्रीजिन सन्मुख ढोवे भावे,कारण फल अनाहार४
शचिपति सम श्रावकजन करते,पूजा टरे दुःखभार।
आतम आनंद लक्ष्मी पामे,वल्लभ हर्ष अपार॥ज०५

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी, मेरे प्यारे सुजान।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन वनावो ।
पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ३

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ १२ ॥



॥ तेरवीं जलसे भरे कलशकी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर पूजा तेरवीं, जलभृत कलश सुहाय ।
भविजन शुभ भावे करे, पातिक दूर पुलाय ॥१॥

(देशी—तोरे दर्शनकी वलिहारी)

तुम चिद्घन चंद आनंद नाथ ।
तुम अर्चनकी वलिहारी ॥ अंचलि ॥
कनक कलश मंडित रत्नोंसे,
मुनि गुण गुणिता चारी ॥ तु० ॥ १ ॥
गंगा मागध अरु वरदामा,
आदि तीर्थ जल धारी ॥ तु० ॥ २ ॥
निर्मल जलभृत कलशकी पूजा,
करे सुर चार प्रकारी ॥ तु० ॥ ३ ॥
तिम श्रावक जिन पूजे विधिसे,
आनंद मंगलकारी ॥ तु० ॥ ४ ॥
आतम लक्ष्मी प्रगटे तवही,
वल्लभ हर्ष अपारी ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान।
सानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन वनाचो,
पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान ।

करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ३
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलभृतकलशं यजामहे स्वाहा ॥ १३ ॥

॥ चौदमी वस्त्रपूजा ॥

॥ दोहा ॥

वस्त्र युगलसे पूजिए, मनमें अति हुलसाय ।
सुखदायक जग जीवके, श्री श्री श्री जिनराय ॥१॥

(देशी—पारस प्रभु भवजल पार उतार)

भविक जन प्रभु पूजन हितकार ॥ अंचली ॥
उज्जल वस्त्र युगल भलोरे,
पल्लव अति सुकुमार ॥
चंद्रकिरण सम शोभतीरे,
अद्भुत ज्योति सार ॥ भ० ॥ १ ॥
अखिल सुरासुर नायकारे,
मन धरि भक्ति उदार ।

जिनवर बिंव मंडित करे रे,
शोभा अपरअपार ॥ भ० ॥ २ ॥
करणी समकिती हरि तणीरे,
लोक उभय सुखकार ।
देशविरति श्रावक करेरे,
कुमति अनल जलधार ॥ भ० ॥ ३ ॥
जय जिनवर जय जग गुरुरे,
सकल देव सरदार ।
त्रिभुवन जन मन मोहनारे,
वार वार वलिहार ॥ भ० ॥ ४ ॥
आतम शिवपद पंकज मधु रस,
चिद घन सुख निरधार ।
आनंद लक्ष्मी पूजन का फल,
वल्लभ हर्ष अपार ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भव पार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन वनावो ।
पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान ।

करो पूजा भगवान्, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ३
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय वस्त्रयुगलं यजामहे स्वाहा ॥ १४ ॥



॥ पंदरमी चामरपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पंदरमी पूजा भली, कीजे भक्ति काज ।
चामर युग करकमल लई, पूजिए श्रीजिनराज ।१।

(भैरवी—कहरवा—देशी—हेजी तेरे दर्दे हिजरने सताया.)

करो भवि अर्चन महानंद दाया ।
प्यारा प्रभु, सुखकारा प्रभु,
दुःख हारा प्रभु, जिन राया ।
करो भवि अर्चन महानंद दाया । अंचलि० ।
जगतारक जगनाथजी, जगगुरु जगदाधार ।
जगवत्सल जगदीशजी, जगधणी जग अवतार ।
प्रभु जग चिंतामणि सम भाया ॥ प्यारा० १ ॥
समवसरण रचना भली, करे सुर चार प्रकार ।

स्याद्वाद वानी सुने, बैठी पर्षदा बार ॥
प्रभु जग जन्म मरण मिटाया ॥ प्यारा० ॥२॥
चंद्र सूर्य किरणोज्वला, विविध रयण दंड जाल ।
दो पासे प्रभुके खड़े, करे अमर प्रतिपाल ॥
प्रभु जग ताप संताप नसाया ॥ प्यारा० ॥ ३ ॥
सुर चामर पूजा करी, चाखे अनुभव स्वाद ।
तिम श्रावक पूजन करे, सुमतिमंत श्रुतवाद ॥
प्रभु जग अजर अमर पद पाया ॥ प्यारा० ॥४॥
चामर युग हरि वींजतां, सूचन करता एह ।
हम सम उर्ध्व गति लहे, करे नमन प्रभु जेह ॥
प्रभु जग आतम वल्लभ थाया ॥ प्यारा० ॥५॥

॥ काव्य--पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह२

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय चामरयुगलं यजामहे स्वाहा ॥ १५ ॥

॥ सोलमी छत्रपूजा ॥

॥ दोहा ॥

तीन छत्र शिर शोभते, पाप तमो दिनकार ।
पूजा सोलमी जिन तणी, भवजल तारण हार ।

(देशी–मन मोह्या जंगलकी हरणीने.)

भवि पूजो जिनंद जग तरणीने । भ० ॥ अंचलि ॥
चंद्रमंडल सम श्वेत विराजे,
जिन शिर छत्र विचरणीने ॥ भ० ॥ १ ॥
भव सिंधु तरनेको नावा,
पाप ताप विहरणीने ॥ भवि० ॥ २ ॥
सुमति जन मन हर्ष मनावे,
कुमति हर्ष विदरणीने ॥ भवि० ॥३॥
तीन छत्र प्रभु शिर सूचवते,
त्रिभुवन यश विस्तरणीने ॥ भ० ॥४॥

कनक रत्न मणि माणक जडीयुं,
सुरनर जन मन हरणीने ॥ भ० ५ ॥
जिम हरि तिम भवि श्रावक कीजे,
प्रभुपूजा शिव वरणीने ॥ भ० ६ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने,
वल्लभ धन्य तुम करणीने ॥ भ० ७ ॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह२

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय छत्रत्रयं यजामहे स्वाहा ॥ १८ ॥

॥ सतारमी वाजींत्रपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मधुर तूर ध्वनि कीजिये, पूजा सत दश धार।
पूजन फल भविजन लहे, अजरामर पद सार ॥१॥

(देशी—नाटककी—हाय गजब सितम.)

पूजा प्रभुकी सुखकरी,
दुःख हरी है भवि खरी ॥ अंचलि ॥

मधुर स्वरसे वाजती, मूरज अतिही गाजती।
भजो प्रभुको हितकरी, दुःख हरी है भवि खरी ॥१॥
शंख भेरी झल्लरी ताल, दुंदुभि बजे कंसाल।
शुद्ध भाव मन धरी, दुःख हरी है भवि खरी ॥२॥
वेणु वीणा नंदी तूर, श्रीमंडल तंबूरा पूर।
साथ गायन सुर हरि, दुःख हरी है भवि खरी ॥३॥
श्रावक पूजे जिन दयाल, होवे नित्य मंगल माल।
तरो प्रभु के पग परी, दुःख हरी है भवि खरी ॥४॥
आतम लक्ष्मी आपती, पाप ताप कापती।
वल्लभ हर्ष पद वरी, दुःख हरी है भवि खरी ॥५॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान।

मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो,
पूजनसे शिवफल पावो मेरी जान,
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह२
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय वाद्यानि यजामहे स्वाहा ॥ १७ ॥



॥ अठारमी गीतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

गीत गान प्रभु आगले, पूजा अठारमी सार ।
भविजन मनमें रम रही, आनंद मंगल कार ॥१॥

(देशी—श्रीचंद्रा प्रभु भगवान भवजल पार करो.)

प्रभु अर्चन आनंदकार,
भविजन मनमें वसा ॥ अंचलि ॥
श्री जिनवर त्रिभुवन महाराया,
चरण शरण प्रभु शिव सुखदाया ।
पूजन करी भवि शिवपद पाया,
दूर किया संसार, भविजन मनमें वसा ॥ प्र० ॥१॥

इंद्र सुरासुर सब मिल आवे,
जिन चरननमें सीस नमावे।
गीत गान प्रभु सन्मुख गावे,
जय जय जिन जय कार, भविजन मनमें वसा ॥२॥
जय जग बांधव जय जग तारक,
जय दुःख हारक मोह निवारक।
मदन विडारक शिवसुख कारक,
चिद्घन रूपके धार, भविजन मनमें वसा ॥प्र०३॥
वाजती गाजती इंद्र ददामा,
श्रीमंडल घनघोर प्रकामा।
मूर्छना सात तीन स्वर ग्रामा,
वार वार वलिहार, भविजन मनमें वसा ॥प्र०४॥
गीत गान पूजन हरि करते,
श्रावक तिम निज मनमें धरते।
आतम लक्ष्मी मल हरि वरते,
वल्लभ हर्ष अपार, भविजन मनमें वसा ॥प्र०५॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान।

मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमतिका ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ३

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय गीतं यजामहे स्वाहा ॥ १८ ॥

॥ उन्नीसवीं नाटकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

भव नाटक काटन भणी, नाटक पूजा सार ।
जिनवर आगे कीजिए, लहिए भवको पार ॥ १ ॥
झण झण रणके नेउरा, घूघरियां छनकंत ।
ठुमक ठुमक कर नाचती, सुरवनिता सहकंत ॥२॥
विविध तूर धुनि गाजती, अनुभव अमृतधार ।
जिन गुण गावत तारसे, नटन करे नर नार ॥३॥

(देशी—पियाला प्रेमका है भरपूर.)

पूजा प्रभुकी आनंदकार,
करो ने भवि लटक लटक लटक ।

इंद्र सुरासुर सब मिल आवे,
जिन चरननमें सीस नमावे।
गीत गान प्रभु सन्मुख गावे,
जय जय जिन जय कार, भविजन मनमें वसा ॥२॥
जय जग बांधव जय जग तारक,
जय दुःख हारक मोह निवारक ।
मदन विडारक शिवसुख कारक,
चिद्घन रूपके धार, भविजन मनमें वसा ॥प्र०३॥
वाजती गाजती इंद्र ददामा,
श्रीमंडल घनघोर प्रकामा ।
मूर्छना सात तीन स्वर ग्रामा,
वार वार वलिहार, भविजन मनमें वसा ॥प्र०४॥
गीत गान पूजन हरि करते,
श्रावक तिम निज मनमें धरते ।
आतम लक्ष्मी मल हरि वरते,
वल्लभ हर्ष अपार, भविजन मनमें वसा ॥प्र०५॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।

मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमतिका ध्यान,
करो आतम कल्याण,होवे वाह वाह वाह ३
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय गीतं यजामहे स्वाहा ॥ १८ ॥



॥ उन्नीसवीं नाटकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

भव नाटक काटन भणी, नाटक पूजा सार ।
जिनवर आगे कीजिए, लइए भवको पार ॥ १ ॥
झण झण रणके नेउरा, घूघरियां छनकंत ।
ठुमक ठुमक कर नाचती, सुरवनिता सहकंत ॥२॥
विविध तूर धुनि गाजती, अनुभव अमृतधार ।
जिन गुण गावत तारसे, नटन करे नर नार ॥३॥

(देशी—पियाला प्रेमरस है भरपूर.)

पूजा प्रभुकी आनंदकार,
करो ने भवि लटक लटक लटक ।

पाता है शिवपुर राज, वही नर
झटक झटक झटक ॥ पू० ।अंचली॥
हा हा हु हु आदि सुरगण,
मिल गंधर्व कटक ।
सोल सिंगार सजी करी आई,
जिनपुर मटक मटक ॥ पू० १ ॥
देवकुमर कुमरी मिल नाचे,
राचे मन नहीं खटक ।
ऐसो उत्तम अवसर पायो,
वहु भव भटक भटक ॥ पू० २ ॥
रावणने मंदोदरी राणी,
विधिसे करके नटक ।
उत्तम तीर्थंकर पद पायो,
मिटगई अटक अटक ॥ पू० ३ ॥
अष्टा पद गिरि वीण वजातें,
त्रूटि तारां त्रटक ।
पण तुट्यो नहीं भाव जरा तस,
निर्मल फटक फटक ॥ पू० ४ ॥

प्रभावती राणी कर नाटक,
भव नाटक दियो छटक ।
आतम वल्लभ निजपद पायो,
मनोभव पटक पटक ॥ पू० ५ ॥

॥ काव्य-पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो,
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह २

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय नाटकं यजामहे स्वाहा ॥ १९ ॥

॥ बीसमी जिनगुणस्तुतिपूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनगुणस्तुतिपूजा सदा, करो भविक गुण धारि ।
पूजनसे पूजक तणी, करे स्तुति दनुजारि ॥१॥

भव दावानल नीर सम, मोह धूलि हरनार ।
हल माया भू दारणे, सुरगिरि धीरज धार ॥२॥
जगतारण जगदीश जिन, सागर सम गंभीर ।
दोष निवारी गुण धरी, जय जय तूं प्रभु धीर ॥ ३ ॥

(देशी—भजनकी.)

अशरण शरण करण सुख संपद,
विपद हरण जगवाला वाला प्रभु वाला ।
सुख सागर आगर गुण त्राता, गाता गुणकी
माला माला प्रभु माला ॥ अशरण । अंचलि ।
अलख अगोचर अजर निरंजन,
भंजन दुःखकी रासी रासी प्रभु रासी ।
हितकारी उपकारी जग जन,
मन्मथके हैं नासी नासी प्रभु नासी ॥ अ०१॥
तीर्थंकर जगदीश जिनेश्वर,
योगीश्वर अति वीरा वीरा प्रभु वीरा ।
ब्रह्मा विष्णु जिन शिव शंकर,
मंदर गिरि सम धीरा धीरा प्रभुधीरा ॥ अ०२॥
नाम अनंते गुणही अनंते,
वर्णन करुं तुझ कैसे कैसे प्रभु केसे ।

दिल अनुभव मा आगल बालक,
कही न सके निज जैसे जैसे प्रभु जैसे ॥अ०३॥
हे जिन तारक मोह निवारक,
करते भवि जग देवा देवा प्रभु देवा ॥
मुनि नर खग सुर गणपति सेवा,
फल शिव सुखको लेवा लेवा प्रभु लेवा ॥अ०४॥
आतम निज गुण दायक धारी,
शरण लिया मैं तेरा तेरा प्रभु तेरा ।
आतम आनंद वल्लभ मांगे,
टारो भव भव फेरा फेरा प्रभु फेरा ॥अ०५॥

॥ काव्य—पद ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान ।
मानोजी सुज्ञान, प्रभु पूजन बनावो ।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान ।
करो पूजा भगवान्, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जिनगुणस्तुतिं यजामहे स्वाहा ॥ २० ॥



॥ इकवीसमी कोशवृद्धिपूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिन पूजा इकवीसमी, कोश वृद्धि मनोहार ।
करो भविक शुभ भावसे, भरो पुण्य भंडार॥१॥

(देशी—मान मायाना करनारा रे)

सुखकारा प्रभु सुखकारा रे भवि पूजो प्रभु० ॥
धन्य धन्य पूजन करनारा रे भवि पूजो प्र० ॥ अं०॥

रजत मणि कलधौत रयणसे,
कोश भरे हरि सारा ।
श्रावक तिम भरे कोश उचित धन,
पावत ज्ञान उदारारे ॥ भ० ॥ १ ॥

ज्ञाता उवाइ राय पसेणी,
जीवा भिगम हितकारा ।
द्रौपदी अंवड सुर सुरियाभा,
देव विजय अधिकारारे ॥ भ० ॥ २ ॥

महा निशीथे वीर वचन है,
पूजन भेद विचारा।
द्रव्य पूजा और भाव पूजा जिन,
सागार और अनगारारे ॥ भ० ॥ ३ ॥
जेह अधर्मी मंदमति जन,
पूजन जिन हरनारा।
तेह करे निज चेतन सदन को,
दुःख व्यसन आगारारे ॥ भ० ॥ ४ ॥
इम जाणी भवि जिनवर पूजो,
होवे भवोदधि पारा।
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने,
वल्लभ गुरु उपकारारे ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ काव्य—पद्य ॥

प्रभु पूजा है प्यारी, भवपार उतारी,
करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान।
मानोजी सुजान, प्रभु पूजन बनावो।
पूजनसे शिव फल पावो मेरी जान।
करो पूजा भगवान, धरो सुमति का ध्यान,
करो आतम कल्याण, होवे वाह वाह वाह ॥३॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमश्वेराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय कोशवृद्धिं यजामहे स्वाहा ॥ २१ ॥



(कलश)

॥ रेखता ॥

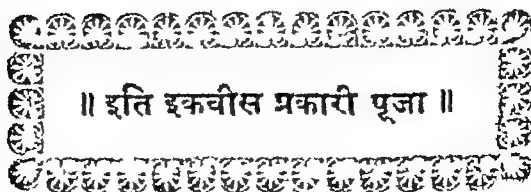
जिनंद गुण आज मैं गाया,
इह पर लोक सुखदाया ।
नहीं तुम सम जग कोई,
यथारथ रूप जस होई ॥ १ ॥

अनुपम सुमन गुण माला,
सुमन नर पूजतां वाला ।
पाप संताप सव जावे,
रूप शीतल निज थावे ॥ जि० ॥२॥

इस विध पूजा इकवीसा,
करे भवी जीव जगदीसा ।
[illegible]े भाव सुरंगा,
[illegible]नरा वृत्ति फल चंगा ॥ जि० ॥ ३ ॥

तप गच्छ गगन दिनकर्ता,
विजय आनंद सूरि भर्ता ।
विजय लक्ष्मी गुरु दादा,
विजय श्री हर्ष गुरु पादा ॥ जि० ॥ ४ ॥
विजय वल्लभ लघु दासा,
सुगम रचनाकी जस आसा ।
कृपा मरु देवी नंदनकी,
पूर्ण हुई आस वंदनकी ॥ जि० ॥ ५ ॥
करण यात्रा नगर कावी,
वडौदा शहर संघ आवी ।
कियो उत्सव शुभ भावे,
अनुपम हर्ष अति पावे ॥ जि० ॥ ६ ॥
पति संघ खीमचंद भाई,
मति शुभ जास मन आई ।
करी विनती करण पूजा,
चुनीलाल साथी तस दूजा ॥ जि० ॥ ७ ॥
संवत मुनि शंभुदृग वेदा,
शुग्म प्रभु वीर गत खेदा ।

इषु इंदु आतम हितकारी,
महीना मार्गशिर धारी ॥ जि० ॥ ८ ॥
कवि दिन पूर्णिमा जानो,
कविता पूर्ण थई मानो ।
आतम लक्ष्मी हर्ष दाता,
वल्लभ निशदिन गुण गाता ॥ जि० ॥९॥
विजय सूरि कमल राजे,
उपाध्याय वीर विजय गाजे ।
विजय कांति प्रवर्त्तकजी,
नमुं प्रभु भय निवर्त्तकजी ॥ जि० ॥१०॥
तीर्थ कावी मंडन स्वामी,
करुं वंदन शिर नामी ।
आगम विपरीत जो थावे,
मिच्छामि दुक्कडं भावे ॥ जि० ॥ ११ ॥


॥ इति इकवीस प्रकारी पूजा ॥

॥ श्रीऋषिमंडलपूजा ॥



॥ दोहा ॥

श्री श्री श्री शांतिप्रभु, प्रणमी मन वच काय ।
ऋषिमंडल पूजा रचुं, शांतिकरण सुखदाय ॥ १ ॥
मेरुगिरि नंदीश्वरे, शाश्वत श्री जिनराज ।
पूजा अष्ट प्रकारसे, विरचे सुर सुरराज ॥ २ ॥
जिनवर गुण मनमें धरी, श्रावक समकितवंत ।
तिम अडविध पूजन करे, चार वीस भगवंत ॥३॥
जल चंदन और फूलसे, दीपक धूप प्रदान ।
वर अक्षत नैवेद्य फल, पूजा अष्ट विधान ॥ ४ ॥
देव नमी प्रणमी गुरु, जिनवाणी चितलाय ।
मियागाम पूजा रची, वीरवचन सुपसाय ॥ ५ ॥

॥ श्रीऋषभदेवपूजा ॥

॥ दोहा ॥

आदि जिनेश्वर आदिनृप, आदि मुनीश्वर राय ।
युगलाधर्म निवारको, जीव सकल सुखदाय ॥१॥

॥ सारंग ॥

मन मगन आदि जिन ध्यानमें,
मन मगन आदि जिन ध्यानमें ।
दूर भइ दुनिया तनमनसे,
नाभिनंदन जिन गानमें ॥ मन० ॥अं०॥
जग चिंतामणि जगगुरु जगधनी,
गावत सब कोई तानमें ।
हरि हर ब्रह्मा शिव परमेष्ठी,
मावत जिनगुण मानमें ॥ मन० ॥१॥
भूमंडल भवि कमल विबोधन,
दिनकर सम जग ज्ञानमें ।
सर्व जीव हितकारक प्रभुजी,
निःश्रेयस सुख दानमें ॥ मन० ॥२॥
चौसठ इंद्र करे जस सेवा,
आतम लक्ष्मी अमानमें ।
हर्ष धरी प्रभु पूजा रचीहे,
वल्लभ वीर वखानमें ॥ मन० ॥ ३ ॥

॥ काव्यम्—शिखरिणी छंदः ॥

नमस्यामाकार्पुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥



॥ श्री अजितनाथजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

विजयामात सुजातकी, पूजा शिवसुखदाय ।
परमानंद भावें करें, जन्म मरण मिट जाय ॥१॥

॥ सोरठ—सद्गुरु चरण बिना अज्ञान तिमिर टलसे नहीं रे ॥देशी॥

जिनवर सरण विना संसार
भ्रमण टलसे नहीं रे ।
जन्म मरण देनारुं कर्म बीज
जलसे नहीं रे ॥ अंचलि ॥

जिन वचनामृत पान विना,
सत्यासत्यके ज्ञान विना,
पापपुंज प्रभु ध्यान विना, बलसे नही रे ॥ जि० १
भव भय हारक भान विना,
प्रभु परमातम गान विना,
शुभ मन आतम मान विना, चलसे नहीं रे ॥ जि० २
शुभ गुरु देव विज्ञान विना,
धरम यथारथ जाण विना,
समकित भेद पिछाण विना, पलसे नहीं रे ॥ जि० ३
सुरनर पूजित नाण विना,
अठदस दोषके हान विना,
पूजा प्रभुकी आण विना, फलसे नहींरे ॥ जि० ४
निजगुण आतम खान विना,
वल्लभ वीर वखान विना,
अजित जिनेसर दान विना, मलसे नहींरे ॥ जि० ५

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्दैवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।

सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालच्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥
॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥



॥ श्री संभवनाथजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

जितारि संभव प्रभु, श्री संभव जिन देव ।
सुर सुरपति नर नरपति, करते निशदिन सेव ॥१॥
मूल अतिशय चार हैं, प्रातिहार्य सुर आठ ।
ज्ञान अनंता जाणीये, ज्ञानातिशय ठाठ ॥ २ ॥

(चरचा, ताल—फोरवा धनधन वो जगमे नरनार—देशी)

श्रीश्रीश्री संभव जिनराज, पूजा करो करावो भावे
श्री श्री श्री संभव जिनराज ॥ अंचलि ॥
पूजा है प्रभुकी रंगरेल,
देवे मुक्ति पुरी में मेल ।
पावे निजगुण आतम खेल,
नहीं फिर जन्म मरणको पावे ॥ १ ॥

जिन वचनामृत पान विना,
सत्यासत्यके ज्ञान विना,
पापपुंज प्रभु ध्यान विना, वलसे नही रे ॥ जि० १
भव भय हारक भान विना,
प्रभु परमातम गान विना,
शुभ मन आतम मान विना, चलसे नहीं रे ॥ जि० २
शुभ गुरु देव विज्ञान विना,
धरम यथारथ जाण विना,
समकित भेद पिछाण विना, पलसे नहीं रे ॥ जि० ३
सुरनर पूजित नाण विना,
अठदस दोषके हान विना,
पूजा प्रभुकी आण विना, फलसे नहींरे ॥ जि० ४
निजगुण आतम खान विना,
वल्लभ वीर वखान विना,
अजित जिनेसर दान विना, मलसे नहींरे ॥ जि० ५

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्धुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमवटैः ।

सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालच्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥



॥ श्री संभवनाथजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

जितारि संभव प्रभु, श्री संभव जिन देव ।
सुर सुरपति नर नरपति, करते निशदिन सेव ॥१॥
मूल अतिशय चार हैं, प्रातिहार्य सुर आठ ।
ज्ञान अनंता जाणिये, ज्ञानातिशय ठाठ ॥ २ ॥

(खम्मा, ताल—कहेरवा भनभन वो जगमें नक्कार—देशी)

श्रीश्रीश्री संभव जिनराज, पूजा करो करावो भावे
श्री श्री श्री संभव जिनराज ॥ अंचलि ॥
पूजा है प्रभुकी रंगरेल,
देवे मुक्ति पुरी में मेल ।
पावे निजगुण आनम खेल,
नहीं फिर जन्म मरणको पावे ॥ १ ॥

दूजा मूल अति शय जान,
पूजातिशय सुंदर मान ।
जस चउतीस भेद वखान,
जिनागममें गणधर फरमावे ॥ श्री० २ ॥
जनमे प्रभु अतिशय चार,
क्षय घाती करम अगियार ।
किये ओगणीस देव विचार,
सुरासुर नर नारी गुण गावे ॥ श्री० ३ ॥
तीजा वाचातिशय सार,
भेद पण तीस मनमें धार ।
एक योजनमें विस्तार,
समज निज निज भाषामें आवे ॥ श्री० ४
आतम लक्ष्मी दातार,
प्रभु पूजो लहो भवपार ।
हर्ष वीर वचन आधार,
चरणमें वल्लभ सीस नमावे ॥ श्री० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।

सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥



॥ श्री अभिनंदनस्वामिपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चौथा अतिशय जानिये, अपाय अपगम नाम ।
अभिनंदन चौथा प्रभु, पूजो अतिशय धाम ॥१॥

॥ राग—मालकोश ॥ नयणकरो जिनचंद आनंद भर ॥ देशी ॥

पूजन करो अभिनंद आनंदभर, पूजन० अंचली ॥

संवरनंदन वंदन पूजन,
काटे कलिमल फंद ॥ आ० १ ॥
जगदभिनंदन जगहितकारी,
भवभय दुरित निकंद ॥ आ० २ ॥
लोकालोक प्रकाशक जिनवर,
जिम गगने रवि चंद ॥ आ० ३ ॥

वांछित पूरण अंतर्यामी,
चिद्‌घन आनंद कंद ॥ आ० ४ ॥
आतम लक्ष्मी वीर वचनसे,
वल्लभ हर्ष अमंद ॥ आ० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ श्री सुमतिनाथस्वामिपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पंचम सुमति नाथजी, सुमति तणा भंडार ।
पंचम गति दायक प्रभु, पंचम नाण दातार ॥१॥

॥ माढ ॥ ताल दादरा ॥ चाल—मोरे गमका तराना ॥

सुमतिजिन वंदो पाप निकंदो
भवजल तारणहार ।

प्रभुपूजा अमंदो होवे आनंदो
शिवसुखकंदो भवजल तारण हार ॥ अंचली ॥

राग गयो गयो द्वेष गयो गयो,
मोह गयो गयो भाग ।
रजत कनक मणि तिगडुं सोहे,
तिसकारण महा भाग ॥ प्रभु० १ ॥

कनक कमल सुर विरचित ऊपर,
निर्मल पाय ठवंत ।
विचरंता अवनि तलेरे,
मोहरिपु भगवंत ॥ प्रभु० २ ॥

संसार पार उतारणीरे,
वाणी जस स्याद्वाद ।
कुमति मद तरु दारणी रे,
सुमति मन आस्वाद ॥ प्रभु० ३ ॥

जीवभवि प्रति बोधतारे,
अज्ञतिमिर करी नाश ।
रत्नत्रयी पंथे ठवीरे,
झगमग ज्योति प्रकाश ॥ प्रभु० ४ ॥

आतम लक्ष्मी निजगुण प्रगटे,
पूजन हर्ष अमान ।
अपुनरावृति पद मिलेरे,
वल्लभ वीर प्रमान ॥ प्र० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

—————

॥ श्री पद्मप्रभस्वामिपूजा ॥

॥ दोहा ॥

छट्टा जिन श्रीपद्मप्रभ, पद काया रखवार ।
पूजो भवि भक्ति करी, सुख संपद दातार ॥१॥

॥ दक्षणी ठुमरी ॥

जावो जावो नेमि पिया थारी गति जानीरे ॥ देशी ॥

[illegible] शिवसुख दानीरे ।प० ॥अंचली ॥

प्रभु मुख देखी चंद, पावत भवि आनंद।
सुरासुर नर मुनि पति गुण खानीरे ॥ प० १ ॥
शुद्ध भाव चित्त स्थिर, पूजत जिनंद धीर।
आनंद परम लहे भक्ति मन आनीरे ॥ प० २ ॥
दरस दुरित जावे, रोग सोग पासे नावे ।
अशोक प्रथम पाडि हेर तरु मानीरे ॥ प० ३ ॥
वचन पियूष जिन, भविजन करे ईन
धर नृप कुल नभ दिनमणि ज्ञानीरे ॥ प० ४ ॥
आतम अनूप रूप, निज गुण धर भूप।
वल्लभ हर्ष मन वीर वानी मानीरे ॥ प० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुराल्द्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसुपार्श्वजिन सेवियो, सप्तम श्रीअरिहंत ।
सातों भयको टारके, पामे भवको अंत ॥ १ ॥

॥ श्याम कल्याण—प्रभु गल सोहे मोतियोंकी माला ॥ देशी ॥

प्रभु पूजन भविजन हितकारा ॥ अंचलि ॥
जल थल कुसुम सुगंधी महके,
पांच वरण मनोहारा ॥ प्र० १ ॥
सुरवृष्टि जिन सुमना सेवे,
पावें भव निस्तारा ॥ प्र० २ ॥
दिव्य ध्वनि सुर नर मन मोहे,
सुस्वर राग सुतारा ॥ प्र० ३ ॥
पृथवी नंदन पूजन वंदन,
आनंद मंगलकारा ॥ प्र० ४ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने,
वल्लभ वीर आधारा ॥ प्र० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्दिव्यापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।

सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥



॥ श्रीचंद्रप्रभस्वामिपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चंद्रप्रभजिन आठमा, पूजो भवि चित्त लाय ।
अष्ट करम दूरें टरें, अष्टम शुभगति थाय ॥ १ ॥

गजल ताल कवाली ॥चाल नाटक—आसक तो हो चुकाहूं ॥

पूजन तो होरहाहै, चाहे तारो या न तारो ॥ अं० ॥
चंदा प्रभुजी स्वामी, करो रूप निज धामी ।
तुम शरणा हो रहाहै, चाहे तारो या न तारो ॥ १ ॥
यति श्राद्ध धर्म भेदे, वदे नाम तीर्थ वेदे ।
चामर दो हो रहाहै, चाहे तारो या न तारो ॥ २ ॥
अरि वाह्य और अंदर, सब जीते हैं जिनंदर ।
साम्राज्य होरहाहै, चाहे तारो या न तारो ॥ ३ ॥

आसन सिंह सोहे, भवि जीव मन मोहे ।
आनंद होरहाहै, चाहे तारो या न तारो ॥ ४ ॥
आतम लक्ष्मी दाता, वल्लभ वीर गाता ।
दिल हर्ष होरहाहै, चाहे तारो या न तारो ॥ ५ ॥

काव्यम्

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥



॥ श्रीसुविधिनाथ जिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

नवम सुविधि जिन पूजिये, नवनिधि सुविधि धरंत ।
ब्रह्म गुप्ति नव साधके, नव नव भव न करंत ॥१॥

॥ देशी वणजारेकी ॥

श्रीसुविधि जिनंद सुखकारी,
प्रभु पूजा पार उतारी ॥ अंचलि ॥

द्वादश तरणि जीपंतु,
भा मंडल पुंठ दीपंतु ।
षष्टम पाडिहेर विहारी ॥ प्र० १ ॥
मोक्ष सार्थ वाह मन लावी,
सेवो शिव अर्थें आवी ।
इम दुंदुभि शब्द उच्चारी ॥ प्र० २ ॥
प्रभु सम नहीं अन्य कोइ प्राणी,
त्रण जगतमें दानी ज्ञानी ।
त्रण छत्र प्रभु शिर धारी ॥ प्र० ३ ॥
इम अड पाडि हेर कहावे,
प्रभु पासे नित सुर ठावे ।
सेवे सुरनर अमरी नारी ॥ प्र० ४ ॥
आतम लक्ष्मी गुण वारी,
धारे प्रभु हर्ष अपारी ।
वल्लभ मन वीर पधारी ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।

सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-
द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥



॥ श्रीशीतलनाथ जिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

दशमा शीतलनाथजी, दश यतिधर्म पुनीत ।
काम दशा दश टारवा, पूजो आगम रीत ॥ १ ॥

॥ राग-पीलू—ख्याल टप्पो ॥

मेरे जिनंद शीतल महाराया ।
पूजन चिद्घन रूप करी रे । मेरे० अं० ॥
शीतल चंदनसे प्रभु थारी ।
शीतलता अतिजाउं वलिहारी ।
चंदन शीतलता बाह्यकारी ।
तुम अंतर करनार, करम हरनार,
के मुझ मन चाह खरीरे ॥ मेरे० ॥ १ ॥

कर करुणा करुणा भंडारी ।
करुणासागर अभिधा धारी ।
मैं सेवक आयो तुम द्वारी ।
विरुद निबाहो राज, मेरे शिरताज,
के विपदा दूर हरीरे ॥ मेरे० ॥ २ ॥
दोष नहीं गुणवृंद आधारी ।
जिनवर ब्रह्मा शंभु मुरारी ।
आतम लक्ष्मी हर्ष अपारी ।
वल्लभ वीर सनाथ, मुक्तिका साथ,
के आनंदरूप वरीरे ॥ मेरे० ॥ ३ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १० ॥

सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-

र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय

जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनें-

द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥



॥ श्रीशीतलनाथ जिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

दशमा शीतलनाथजी, दश यतिधर्म पुनीत ।

काम दशा दश टारवा, पूजो आगम रीत ॥ १ ॥

॥ राग-पीलू—ख्याल टप्पो ॥

मेरे जिनंद शीतल महाराया ।

पूजन चिद्घन रूप करी रे । मेरे० अं० ॥

शीतल चंदनसे प्रभु थारी ।

शीतलता अतिजाउं वलिहारी ।

चंदन शीतलता बाह्यकारी ।

तुम अंतर करनार, करम हरनार,

के मुझ मन चाह खरीरे ॥ मेरे० ॥ १ ॥

कर करुणा करुणा भंडारी ।
करुणासागर अभिधा धारी ।
मैं सेवक आयो तुम द्वारी ।
विरुद निवाहो राज, मेरे शिरताज,
के विपदा दूर हरीरे ॥ मेरे० ॥ २ ॥
दोष नहीं गुणवृंद आधारी ।
जिनवर ब्रह्मा शंभु मुरारी ।
आतम लक्ष्मी हर्ष अपारी ।
वल्लभ वीर सनाथ, मुक्तिका साथ,
के आनंदरूप वरीरे ॥ मेरे० ॥ ३ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १० ॥

॥ श्रीश्रेयांसनाथजिनपूजा ॥

दोहा

श्रीश्रेयांस जिनेसरु, पदकज मधुकर होय ।
आतम श्रेयस साधिये, जन्म मरण मिटे दोय ॥१॥

॥ केशरीयाथाखुं प्रीत लगीरे ॥ देशी ॥

श्रेयांस जिनंदकी पूजा करुंरे शुभ भावसे ।अं०।
गजवर मन रेवा नदीरे,सीता मन श्रीराम ।
लक्ष्मी मन विष्णु वसेरे, गिरिजा मन शिव नामरे-
श्रेयांस जिनंदकी पूजा करुंरे शुभ भावसे ॥ १ ॥
मधुकर मनमें मालतीरे, चकवा मन दिन इंद ।
तिम मुझ मन तुमही वसेरे, श्रीश्रेयांस जिनंदरे-
श्रेयांस जिनंदकी पूजा करुंरे शुभ भावसे ॥ २ ॥
शांत रसे नयनां भरेरे, मुख कज अतिही प्रसन्न ।
राग द्वेष रंचक नहींरे, प्रभुजी तुम धन्न धन्नरे-
श्रेयांस जिनंदकी पूजा करुंरे शुभ भावसे ॥ ३ ॥
अंक विना स्त्री शोभतो रे, शस्त्र विना प्रभु हाथ ।
तिसकारण तुमही प्रभुरे, वीतराग जग नाथरे-
श्रेयांस जिनंदकी पूजा करुंरे शुभभावसे ॥ ४ ॥

आतम लक्ष्मी देखके रे, होवे हर्ष अमंद ।
जिन पूजा फल ए सही रे, वल्लभ वीर जिनंद रे-
श्रेयांस जिनंदकी पूजा करुंरे शुभ भावसे ॥ ५॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ११ ॥

॥ श्रीवासुपूज्य जिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पूजो जिनवर बारमा, उपदेसे अंग बार ।
द्वादश व्रत श्रावकतणा, द्वादश प्रतिमा सार ॥

॥ राग—जयजयवंती ॥ तूं है एक प्यारो प्राण ॥ देशी ॥

वासु पूज्य पूजो प्राणी, प्रभु है अनंत ज्ञानी ।
प्रभु सब गुणखानी, जीवको सरन है॥ वा० १ ॥

प्रभु प्यारो प्राण जान, आतम आधार मान।
प्रभुके ही शुभ ध्यान, मिटत मरन है ॥ वा० २॥
दाता निर्भय दान, दाता शिव सुख थान।
प्रभुको भवि पिछान, तारन तरन है ॥ वा० ३॥
वसुपूज्य राय तात, जया राणी मात जात।
सुर नर दिन रात, पूजत चरन है ॥ वा० ४ ॥
आतम आनंद चंद, जिन लक्ष्मी हर्ष कंद।
वीर गुण कटे फंद, वल्लभ परन है ॥ वा० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥ १॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १२ ॥

॥ श्री विमलनाथ जिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विमल चरण धारी प्रभु, विमलनाथ भगवंत।
विमल विमल पोते थया, सेवक विमल करंत ॥१॥

॥ राग कानडा ॥

पूजन विमल जिनेश्वर कीजे, पूजन० ॥ अंचली ॥

सुरनर मुनि जस चरन परत है,
करम भरम सब झट पट छीजे ॥ पू० १ ॥

तुम सम जिन नहीं और धरत है,
उपशम रस सज्जन मन रीजे ॥ पू० २ ॥

कोइ संग नारी कोइ नाच करत है,
देखत भवि जनको मन खीजे ॥ पू० ३ ॥

भवजल जो नहीं आप तरत है,
सेवक को वो क्या फल दीजे ॥ पू० ४ ॥

आतम लक्ष्मी हर्ष भरत है,
वल्लभ वीर वचन रस पीजे ॥ पू० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

प्रभु प्यारो प्राण जान, आतम आधार मान।
प्रभुके ही शुभ ध्यान, मिटत मरन है ॥ वा० २॥
दाता निर्भय दान, दाता शिव सुख थान।
प्रभुको भवि पिछान, तारन तरन है ॥ वा० ३॥
वसुपूज्य राय तात, जया राणी मात जात।
सुर नर दिन रात, पूजत चरन है ॥ वा० ४ ॥
आतम आनंद चंद, जिन लक्ष्मी हर्ष कंद।
वीर गुण कटे फंद, वल्लभ परन है ॥ वा० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥ १॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १२ ॥

॥ श्री विमलनाथ जिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विमल चरण धारी प्रभु, विमलनाथ भगवंत।
विमल विमल पोते थया, सेवक विमल करंत ॥१॥

॥ राग कानडा ॥

पूजन विमल जिनेश्वर कीजे, पूजन०॥ अंचली ॥
सुरनर मुनि जस चरन परत है,
करम भरम सब झटपट छीजे ॥ पू० १ ॥
तुम सम जिन नहीं और धरत है,
उपशम रस सज्जन मन रीजे ॥ पू० २ ॥
कोइ संग नारी कोइ नाच करत है,
देखत भवि जनको मन खीजे ॥ पू० ३ ॥
भवजल जो नहीं आप तरत है,
सेवक को वो क्या फल दीजे ॥ पू० ४ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष भरत है,
वल्लभ वीर वचन रस पीजे ॥ पू० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालङ्घुतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १३ ॥



॥ श्री अनंतनाथ जिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अनंत नाथ प्रभु पूजिए, चउदसमा जिनदेव ।
चार अनंता पामिए, सुर नर गण करे सेव ॥१॥

॥ राग भैरवी ॥ लागी लगन कहो कैसे छूटे ॥देशी ॥

अनंत जिनेश्वर जग परमेश्वर
प्राणजीवन सुख कंदो रे॥ अनंत० अंचलि ॥
जस गणधर मुनिवर गण मधुकर,
सेवत्त पद अरविंदो रे ।
सिंहसेन नृप नंदन वंदन,
करत सुरासुर इंदो रे ॥ अनंत० १ ॥
जग मंडल सहु निर्मल कारण,
जिन शासन नभ चंदो रे ।
उदय भयो भवि कुमुद खिडावन,
सुयशा माता नंदो रे ॥ अनंत० २ ॥

लोकालोक अनंत द्रव्य गुण,
पर्याय प्रगट दिनंदो रे ।
सार्थक नाम प्रभु तुम कहिए,
अनंत अनंत आनंदो रे ॥ अनंत०३॥

दुरित निवारिणी पूजा सुंदर,
काटे भव भय फंदो रे ।
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने,
वल्लभ वीर जिनंदो रे॥ अनंत० ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम्॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुपाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा॥ १४ ॥

॥ श्री धर्मनाथ जिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

दायक नायक सारथी, देशक धर्म सुमित्र ।
धर्मनाथ प्रभु पूजिए, मन वच काय पवित्र ॥१॥

॥ वरवा तथा पहाडी । रसदी बूंदां परी ॥

श्री धर्मनाथ महाराज अर्चन सुंदर बना ॥अंचलि॥
धर्मनाथ प्रभु धर्म कहंता,
साधु श्रावक भेद लहंता,
सेवी थये बहु भवि भगवंता,
वामी कर्म समाज अर्चन सुंदर बना ॥ श्री०१॥
भवसागर निर्यामक धारी,
सार्थवाह भव अटवी भारी,
महा गोप पदवी जिन सारी,
महा माहण जिनराज अर्चन सुंदर बना ॥श्री०२॥
द्रव्य भाव दो प्राण पिछाने,
द्रव्य प्राण दश जगमें जाने,
भाव प्राण प्रभु चार वखाने,
चार मिले शिवराज अर्चन सुंदर बना ॥श्री०३॥

ज्ञान वीर्य जीवन सुख धारी,
भाव अनंता चार प्रकारी ।
आतम लक्ष्मी हर्ष अपारी,
वल्लभ वीरसुं काज अर्चन सुंदर बना ॥ श्री० ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १५ ॥

॥ श्री शांतिनाथ जिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जग शांति प्रगटाववा, प्रगट भए जिनराज ।
शांतिनाथ शांति करी, नाम लियो महाराज ॥१॥

॥ राग गोडी ॥ देशी—वीर जिनेश्वर स्वामी ॥

शांति जिनेश्वर स्वामी शिवंकर शांति० अंचलि ॥

अचिरा नंदन पूजन वंदन,
अचरा नंद पद पामी शिवंकर। शा० १॥
हिंसा झूठ चोरी अरु क्रीडा,
हाँसी रतिभय वामी शिवंकर। शां० २॥
क्रोध मान माया मद अरति,
लोभ प्रेम दिये दामी शिवंकर। शां०३॥
मत्सर शोक अज्ञानने निद्रा,
अष्टादश दोष नामी शिवंकर। शां० ४॥
आतम लक्ष्मी हर्ष अनुपम,
वल्लभ वीर नमामि शिवंकर। शां० ५॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम्॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय [illegible] ने जिनेंद्राय
जलादि [illegible] े स्[illegible] ॥१६॥

॥ श्रीकुंथुनाथ स्वामी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सत्तरमा जिन सेविए, कुंथु नाथ दयाल ।
संयम सत्तर भेद सुं, भाखे त्रिभुवन पाल ॥ १ ॥
प्रभु सभरण लय लाइए, मन वंछित फल थाय ।
भव तजी भवि शिव पाइए, कुंथुजिनंद गुण गाय २

॥ श्री राग ॥

कुंथु जिन पूजा शिव तरु कंद, कुंथु० अंचलि ॥
गजपुर षष्टम चक्री सुहंकर,
श्री राणी सुर राजानंद ।
जग उपकारी प्रभु हितकारी,
सेवे सुर नर मुनि गण इंद ॥ कुंथु० १ ॥
रुधिरामिप गोपय सम नेतु,
निरामय सुंदर तनु चंद ।
स्वेद रहित मल उज्जित कांति,
श्वासोच्छ्वास सुगंध अरविंद ॥ कुं० २ ॥
विधि आहार निहार प्रभुकी,
देखे नहीं छउमस्थ जन वृंद ।
आतम लक्ष्मी हर्ष अपूरव,
वल्लभ वीर वचन विकसंद ॥ कुंथु० ३ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १७ ॥

॥ श्री अरनाथस्वामी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टादश शीलांगरथ, धोरी प्रभु हजार ।
अष्टादशम जिनेसरु, पूजी हो भवपार ॥ १ ॥
सुमति संयम उर धरी, कुमति संग निवार ।
अनुभव अमृत धारिए, वारिए विषय विकार ॥२॥

॥ पीलु तथा बरवो ॥

प्रभु पूजन भवि अति सुखकारी
भव भव संकट दूर निवारी ॥ प्र० ॥ अंचलि ॥

श्री अरनाथ जिनंद महाराया,
घाति करम दृढ क्षय किए चारी ।
निर्मल लोकालोक प्रकाशी,
प्रगट भयो केवल उजयारी ॥ प्र० १ ॥

सुर नर तिर्यंग कोटा कोटी,
समवसरण भूमि मग भारी ।
अर्द्ध मागधि वाणी गामिनी,
योजन नर सुर तिर्यंग धारी ॥ प्र० २ ॥

भामंडल प्रभु पुंठे सोहे,
रोग उपद्रव दूर निवारी ।
आतम लक्ष्मी हर्ष मनावे,
वल्लभ वीर वचन अनुसारी ॥ प्र० ३ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १८ ॥

॥ श्रीमल्लीनाथजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

कुंभराय कुल गगनमें, सहस किरण अवतार
पूजा मल्लिजिनंदकी, टारे भव अंधकार ॥ १ ॥

॥ सोरठ ॥ वीर जिन दीनी माने एक जरी ॥ देशी ॥

जिनवर पूजा भव पार करी । अंचलि ॥
मल्लि जिनेश्वर जग परमेश्वर ।
तारण तरण तरी । जिनवर पूजा० १ ॥
वैरेति अति वृष्टि अवृष्टि ।
होवे न रोग मरी । जिनवर पूजा० २ ॥
दुर्भिक्ष स्वपर दलभय नासे ।
जिहां प्रभु पाय धरी । जिनवर पूजा० ३ ॥
पूजक पूजासे पूज्य होवे ।
जिम श्रेणिकने हरि । जिनवर पूजा० ४ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष चरणमें ।
वल्लभ वीर परी । जिनवर पूजा० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १९ ॥



॥ श्रीमुनिसुव्रतस्वामी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मुनिसुव्रत जिन वीसमा, मुनि सुव्रत भंडार ।
पूजो भवि शुभ भावसे, शिव कमला दातार ॥१॥

॥ होरी ॥ सिंधकाफी ॥

कररे कररे कररे कररे
मुनि सुव्रत जिन अर्चन करर‍े । अंचलि ॥
सरस कमल दल नयन सुहंकर,
वदन शांत शश धर रे ।

एकादश अतिशय जिन सोहे,
ओगणीस किए सुर वररे ४ ॥ मु० १ ॥
धर्मप्रकाशक चक्र आकाशे,
चाले जिनवर पुर रे ।
चामर फटिक सिंहासन सुंदर,
पाद पीठ सह चररे ४ ॥ मु० २ ॥
तीन छत्र ध्वज विजय पताका,
फरके फररर फररे ।
आतम लक्ष्मी हर्ष वतावे,
वल्लभ वीर सिमररे ४ ॥ मुनि० ३ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २० ॥

॥ श्रीनमिनाथजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

नमि जिनवर इक वीसमा, अंतर शत्रु नमाय ।
मान नमि भवि पूजिए, थिर करी मन वच काय॥१॥

होई आनंद बहार ॥ देशी ॥

पूजो भवि भगवंतरे,
प्रभु वैठे मगनमे ॥ अंचलि ॥
कनक कमल नव ऊपरे रे,
विचरे पाय ठवंत रे ॥ प्रभु० १ ॥
रजत कनक और रत्न के रे,
प्राकार तिग सोहंत रे ॥ प्रभु० २ ॥
समवसरण प्रभु वैठते रे,
चार मुख दिखंत रे ॥ प्रभु० ३ ॥
आतम लक्ष्मी हर्षसे रे,
वल्लभ वीर कहंत रे ॥ प्रभु० ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्थुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालब्धुतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २१ ॥



॥ श्रीनेमिनाथजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मचारी प्रभु बालसे, बावीसमा जिनराय ।
नेमिनाथ परतापसे, पाप ताप मिटजाय ॥ १ ॥

॥ कव्वाली ॥

प्रभु श्री नेमि जिन पूजन,
नशीवांवर भवि पावे । प्रभु० अंचलि ॥
शिवादेवी माता नंदनके,
भवि निश दिन गुण गावे ।
तजी राजुलसी नारी,
करी क्षय मोह शिव जावे ॥ प्रभु० १ ॥
तरु अशोक नित्य छाया,
अधो मुख कंटका थावे ।
तरु गण मार्गमें नमते,
गगन ध्वनि दुंदुभि भावे ॥ प्रभु० २ ॥

पवन सुखदाइ चलतीहै,
प्रदक्षिणा पक्षिगण लावे ।
आतम लक्ष्मी अति हर्षे,
वल्लभ मन वीर गुण आवे ॥ प्रभु० ३ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुराल्द्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २२ ॥



॥ श्रीपार्श्वनाथजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

तेवीसमा प्रभु पासजी, मनवंछित दातार ॥
भवसागरमें द्वीप सम, जगजीवन आधार ॥ १॥

(मानमायाना करनागारे॥ देशी॥)

हितकारी जगत उपकारी रे,
प्रभु पार्श्वनाथ अवतारी ।

दुख दोहग दूर निवारी रे,
भव सागर पार उतारी ॥ अंचली ॥
पारस पुरिसादानी कहाए,
वंछित फल दातारी ।
अश्वसेन वामादेवीके नंदन,
पूजन मंगल कारी रे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
शोधन भूमि साथ ही वर्षा,
सुगंध निर्मल वारी ।
पांच वरण फूलोंकी वर्षा,
जानुदघन मनोहारी रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
केश दाढि मूछ नख अवस्थित,
कोटि जघन्य सुर चारी ।
आतम लक्ष्मी हर्ष अनुकूल,
ऋतु वल्लभ वीर सारी रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुराल्द्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २३ ॥

॥ श्रीमहावीरस्वामिपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चरम जिनेश्वर वीरजी, सिद्धारथ कुल चंद ।
त्रिशला मात सुजातको, पूजो आनंदकंद ॥ १ ॥

॥ राग धनाश्री ॥

पूजन करोरे आनंदी जिनंद पद पूजन०अंचलि
वीर जिनेश्वर जगपरमेश्वर,
कर्म कलंक निकंदी जिनंद पद पूज०१॥
शासन नायक शिवसुख दायक,
पूजा शिवतरु कंदी जिनंद पद० २ ॥
वर्द्धमान प्रभु वृद्धि करता,
निजगुण कथन करंदी जिनंद पद० ३ ॥
वदन कमल कांति हंस निर्मल,
तन मन भवि विकसंदी जिनंद० ४ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष मनावे,
वल्लभ वीर आनंदी जिनंद पद० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

नमस्यामाकार्षुः सुरपतिदिनेशामरवराः,
सुमाधुर्यैर्देवापगजलसुपूरैर्हिमघटैः ।
सुभद्रश्रीपुष्पाक्षतफलसुरालद्युतिकरै-
र्यजामस्तं देवं जिनपतिमहो मंगलकरम् ॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २८ ॥



॥ कलश ॥

॥ रेखता ॥

जिनंद गुण गाया आनंदे,
करण त्रय जोग भवि वंदे ।
जनम जनमके अघ जावे,
प्रभु गुण गावे सुख पावे ॥ जि० १॥
सुरासुर इंद्र नर नारी,
गणि मुनि साधवी सारी ।
मिलि सब गुण प्रभु गावे,
कभी नही तोभी अंत आवे ॥ जि०२॥

मैं अति तुच्छ मति धारी,
प्रभु गुण कैसे लहुं पारी ।
गाया गुण तोभी भक्तिसे,
लवे शिशु माता शक्तिसे ॥ जि० ३॥
तप गच्छ गगन रवि रूपा,
श्री विजयानंद सूरि भूपा ।
न्यायांभोनिधि विरुद् धारी,
श्री आत्माराम बलिहारी ॥ ४ ॥
विजय लक्ष्मी गुरु दादा,
विजय श्री हर्ष गुरु पादा ।
विजय वल्लभ गुण गावे,
चरणमें नित्य चित्त लावे ॥ जि० ५॥
संवत् ऋषि शंभुदृग वेदा,
युगल प्रभु वीर गत खेदा ।
आतम संवत् रस चंदा,
संवत् विक्रम नर इंदा ॥ जि० ६ ॥
ऋषि रस अंक शशि आवे,
प्रतिपदा भाद्र सुदि थावे ।
जनम महिमा दिवस जानो,
कवि कविता पूरण मानो ॥ जि० ७॥

विजय कमल सूरि राजे,
उपाध्याय वीर विजय गाजे ।
करी प्रेरणा कृति काजे,
कृपा पूरण थई आजे ॥ जि० ८ ॥
प्रवर्त्तक श्री मुनि कांति,
विजयजी टारे मन भ्रांति ।
आतम लक्ष्मी हर्ष पावे,
वल्लभ पूजे प्रभु भावे ॥ जि० ९ ॥
विजय लावण्य विमल विबुध,
विद्या विचार विचक्षण सुध ।
मित्र विजय सात के संगे,
किया चैमास अति रंगे ॥ जि० १०॥
हुई रचना मियागामे,
निकट शांति प्रभु धामे ।
आगम विपरीत वयण भाखे,
मिथ्यादुष्कृत प्रभु साखे ॥ जि० ११॥


॥ इति श्रीऋषिमण्डलपूजा ॥

॥ श्रीनंदीश्वरद्वीपपूजा ॥



॥ दोहा ॥

वंदी वीर जिनंदको, आनंद सुगुरु पसाय ।
नंदीश्वर पूजा रचुं, सिमरी सारद माय ॥ १ ॥
जिनघरमें विस्तारसे, रची नंदीश्वर द्वीप ।
विधिसे प्रभु पधराय के, कीजे पूजा अधिप॥२॥
अडसय अभिषेके करी, पूजा प्रीति विसेस ।
एकादश वा कीजिए, निज शक्ति उपदेश ॥ ३ ॥
सामग्री सब मेलके, श्रद्धा रुचि नर नार ।
जल कलशे निज कर धरे, भवोदधि तारन हार ॥४॥
दो पासे सम श्रेणि रही, गाजते मंगल तूर ।
पूजा प्रभुकी किजीए, अघ होवे चकचूर ॥ ५ ॥

॥ माढ । ताल दादरा । चाल मोरे गमकातराना ॥

निर्मल पद धारा मल हरनारा वीर प्रभु भगवान
प्रभु सुख करनारा दुःख हरनारा
भविजन प्यारा वीर० ॥ अंचलि ॥
त्रिशला नंदन वीरजीरे, ज्ञान परम गुण आप ।
स्याद्वाद वाणी करीरे, मेट्यो एकांत ताप। प्र० १।

जन्म समय जिन देवकेरे, मेरु गिरि पर जाय।
कल्याणक उत्सव करेरे, न्हवरावे जिन राय। प्र० २।
व्योम वाणदृग् सबमिलिरे, करे अभिषेक उमंग।
वैमानिक दशइंद्रके रे, दश अभिषेक सुरंग। प्र० ३।
भुवनपति पति वीसके रे, मानो अभिषेक वीस।
व्यंतरपति बत्रीसकेरे, जानो भवि बत्रीस। प्र० ४।
एकसो बत्रीस जानिएरे, शशि रविके अभिषेक।
जोड़सपति नरलोककेरे, छासठ छासठ विवेक। प्र०
इकसो चौराणु इंद्रकेरे, ए अभिषेक मिलाय।
आतम लक्ष्मी संपजेरे, वल्लभ हर्ष मनाय प्र० ६।

॥ पनीहारीकी देशी ॥

आठ आठ पांच पांच ने मारा वालाजी,
पट पट अरु चार चार वालाजी।
शक्रेशान चमर बलि मारा वालाजी,
धरण भूत वण सार वालाजी ॥ ११ ॥
ज्योतिषि अग्र महिषीके मारा वालाजी,
इग अभिषेक विचार वालाजी।
लोकपाल पिण चार के मारा वालाजी,
चार अभिषेक धार वालाजी ॥ २ ॥

अंगरक्षक सामानिका मारा वालाजी,
कटक त्राय त्रिंस एक वालाजी ।
पर्षद देव प्रकीर्णका मारा वालाजी,
सव इक इक अभिषेक वालाजी ॥ ३ ॥
आठ आठ अडजातिके मारा वालाजी,
कलशे सहस प्रमान वालाजी ।
चउसठ सहस मिलायके मारा वालाजी,
इक अभिषेके जान वालाजी ॥ ४ ॥
इम अढीसो अभिषेकमें मारा वालाजी,
इक कोटि सठ लाख वालाजी ।
आवश्यक मलयागिरि मारा वालाजी,
आतम वल्लभ साख वालाजी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

जिन कल्याणक पांचमें, चलितासन हरिवृंद ।
कल्याणक उत्सव करे, भक्तिसे जिनचंद ॥ १ ॥
उत्सव करी जावे जिहां, सो नंदीश्वर द्वीप ।
अष्टाह्निक उत्सव करे, सिद्धायतन समीप ॥२॥
चार दधि मुख मानिए, आठ रति कर सार ।
एक गिरि अंजन मिली, तेरां चैत्य उदार ॥ ३ ॥

एक दिशि इम चार दिग्, मेली बावन जान ।
बिंब सहस छो चारसो, अडतालीस प्रमान ॥४॥
पूर्वदिशि अंजन गिरि, सोहम सुरपति रंग ।
मन वच काया शुद्धसे, उत्सव करे सुचंग ॥५॥

(लावणी-पिलु. सर्वतीर्थमें मोटा तीरथ श्री शत्रुंजय प्यारारे देशी)

द्वीप नंदीश्वर रचना सुंदर,
सज्जन जन मनोहारी रे ।
सासय जिन पडिमाकी पूजा,
भवोदधि पार उतारी रे ॥ १ ॥
एकसो त्रयसठ कोटि जोयण,
लाख ऐंसी और चारी रे ।
चक्रवाल विष्कंभ ए मानो,
जानो वलयाकारी रे ॥ २ ॥
मध्य भागमें पूर्व दिशामें,
पूर्वांजन गिरि भारी रे ।
इम दक्षिण पश्चिम अरु उत्तर,
अंजन गिरि अवधारी रे ॥ ३ ॥
सहस चोरासी जोयण उंचा,
जाडा दश हजारी रे,

नीचे ऊपर एक सहस्सा,
कंद सहस इक धारी रे ॥ ४ ॥
इकतीस सहस छसो तेविसा,
परिधि मूल विचारी रे ।
तीन सहस इकसोने बासठ,
परिधि ऊर्ध्व सिकारी रे ॥ ५ ॥
जगतारक अरिहंत प्रकाशे,
जीवाभिगम मझारी रे,
आतम लक्ष्मी श्री ठाणांगे,
वल्लभ हर्ष अपारी रे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

वहत्तर जोयण उंचमें, लंबा जोयण सोय ।
पिहुला जोयण पचासका, देव रमण चैत्य जोय ॥१॥
चार द्वार मणि रत्न के, सूत्र कहे भगवंत ।
द्वार नामके नामसे, देव वसे गुणवंत ॥ २ ॥
पूर्व दिशि देव नामका, दक्षिण असुर पिछान ।
पश्चिम नाग सुहामणा, सुवर्ण उत्तर जान ॥ ३ ॥

(ठुमरी । चाल—ब्रह्मज्ञान नहीं जानारे)

॥ जिन अर्चन सुख दानारे
भविका, जिन० अंचली ॥

चैत्य मध्य मणि पीठिका सोहे,
लंबी सोलां कहाना रे।
पिहुली सोल अड जोयण ऊंची,
लोक प्रकाश वखाना रे ॥ जिन० १ ॥

देवछंद अति सुंदर लंबा,
पिहुला पीठिका समाना रे।
जोयण सोल अधिक ऊंचेरा,
शोभे पीठिका थानारे ॥ जिन० २ ॥

ते मध्ये सिंहासन ऊपर,
जिन प्रतिमा मन माना रे।
सगवीस सगवीस चारों पासे,
शाश्वती नाम विधाना रे ॥ जि० ३ ॥
श्री जिन प्रतिमा वंदन करके,
त्यागी आलस नाना रे।
कलशे तीरथ जलसे भरके,
करे अभिषेक सुजाना रे ॥ जि० ४ ॥
केसर चंदन पूजन करि करे,
देव देवी गुण गाना रे।

आतम लक्ष्मी प्रभु पूजन फल,
वल्लभ हर्ष अमाना रे ॥ जि० ५ ॥

॥ काव्यम् । शार्दूलविक्रीडितम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया ।
वक्त्रं यस्य पुनःपुनःस जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीया पूजा ॥

॥ दोहा ॥

वर्णन कियो शुभ भावसे, शेष द्वीप अधिकार
एक चित्त भविजन सुनो, पाप ताप को टार ॥ १ ॥
दक्षिण अंजन गिरि करे, ओच्छव तब चमरींद ।
भक्ति भावे पूजके, टारे कलि मल फंद ॥ २ ॥

॥ देशी कोयल टोंक रही मधुवनमें ॥

नंदीश्वर जिन चैत्य जुहारो,
पाप कलंक भवो भव जारो ॥ नं० अं० ॥

दक्षिण दिशि अंजन गिरि नामे,
 नित्योद्योत भवि चित्त धारो ।
श्याम भ्रमर सम रयणकी ज्योति,
 झगमग झगमग करे उजियारो ॥नं० १॥
प्रासाद द्वार जे चार ते ऊंचा,
 जोयण सोल आठ विस्तारो ।
जोयण आठ प्रवेशमें जानो,
 मानो ज्ञानी ज्ञान आधारो ॥ नं० २ ॥
द्वार द्वार इक इक मुख मंडप,
 ते पडसाल समान विचारो ।
तस आगे प्रेक्षा मंडप ते,
 घर सम निज मनमें अवधारो ॥नं० ३॥
ये मंडप सो योजन लंवे,
 पंचास पिहुले मान उचारो ।
सोल जोयण ऊंचे प्रभु भाखे,
 आतम वल्लभ हर्ष अपारो ॥ नं० ४ ॥

॥ दोहा. ॥

तिग तिग द्वार दो मंडपे, इम पासे चार चार ।
प्रेक्षा मंडप के विचे, वज्र अख्खाटक सार ॥ १ ॥

ते मध्ये मणि पीठिका, लंबी पिहुली आठ ।
जोयण उंची चार है, जीवाभिगमका पाठ ॥२॥
हरि योग्य आसन तिहां, चंद्रुआ झाकझमाल ।
विचमें वज्रांकुश लगी, मुक्ता फलकी माल ॥३॥

॥ वसंत देशी. वंदे कछु करले कमाईरे ॥

वंदे प्रभु करले सहाईरे,
द्वीप नंदीश्वर जिनराई । वंदे प्रभु० अं०॥
सोल जोयण लंबी और चौड़ी,
मणि पीठिका कहाई ।
प्रेक्षा मंडप आगल सोहे,
आठ जोयण उंचाई ॥ वंदे प्रभु० १॥
चैत्य थूभ तस ऊपर सुंदर,
देखत सुर हरखाई ।
लंबी पिहुली सोल जोयणकी,
सोल उंची अधिकाई ॥ वं० २ ॥
आठ मंगल तस ऊपर दीपे,
चउ दिशि चउ चित्त लाई ।
मणि पीठिका लंबी अरु पिहुली,
आठ जोयण प्रभु गाई ॥ वं० २ ॥

चार जोयण ऊंची तस ऊपर,
वैठी भवि मन भाई ।
सन्मुख थूभ अरिहंतकी प्रतिमा,
नमिए सीस नमाई ॥ वंदे प्रभु० ४॥

देव देवी अरिहा प्रभु पूजे,
आनी मन विवेकाई ।
आतम लक्ष्मी जिन अभिषेके,
वल्लभ हर्ष वधाई ॥ वंदे प्रभु० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरस भ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः१

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीया पूजा ॥

॥ दोहा ॥

इंद्र वली ओच्छव करे, पश्चिम गिरि निरधार ।
भविजन तस वर्णन सुनो, आगमके अनुसार ॥१॥

(कहेरवा, ठुमरी, देशी–पास जिनंदा प्रभु मेरे मन वसिया)

सासया जिनवर भविमन वसीया । सा० ॥ अं०
पश्चिम दिशि अंजनगिरि सुंदर,
चैत्य देखी सुर अधिक हरसीया ॥सा० १॥
मुख मंडप प्रेक्षा मंडप दो,
चार द्वार चैत्य आगे दरसीया ॥ सा ०२॥
चैत्य थूभ तस आगे धारो,
टारो मनसे अज्ञान विलसीया ॥सा० ३॥
मणि पीठ तस आगे सोभे,
थूभ पीठिका समान विकसीया ॥ सा० ४ ॥
चैत्य तरु तस ऊपर दीपे,
आतम लक्ष्मी मेघ वरसीया ॥ सा० ५ ॥
जिनवर भविजन भावे नमतां,
वल्लभ हर्ष अपार फरसीया ॥ सा० ६ ॥

॥ दोहा. ॥

चैत्यवृक्ष आगे कही, मणि पीठिका सार ।
लांवी चौड़ी आठकी, उंची जोयण चार ॥ १ ॥
महेंद्रध्वज तस ऊपरे, चउसठ ऊंचो मान ।
जोयण इक मोटो सही, ऊंडो एक प्रमान ॥२॥

॥ धनाश्री ॥

पूजन शिव सुख खान,
जिनंद पद पूजन० ॥ अंचलि ॥
नंदा पुष्करिणी तस आगे,
लंबी चौडी जान । जिनंद पद पूजन०१॥
शत पंचास ने जोयण उंडी,
दस जिनवरकी वान ॥ जि० २ ॥
चार दिशि चउ वन खंड तिसके,
इम यह द्वीप वखान ॥ जि० ३ ॥
ऋषभानन चंद्रानन स्वामी,
वारिषेण वर्धमान । जि० ४ ॥
इन जिनवर पूजन सुरवर कर,
करते भवभय हान । जि० ५ ॥
जिन अभिषेके आतम लक्ष्मी,
वल्लभ हर्ष अमान । जि० ६

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोःशैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः१

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

। अथ चतुर्थी पूजा ।

॥ दोहा ॥

उत्तर दिशि अंजन गिरि, द्वितीय स्वर्गका ईश
ईशानेंद्र उत्सव करे, गावे गुण जगदीश ॥ १ ॥
धन धन जिनवर भारती, संख्या सर्व वखान ।
ज्ञान विना नवि पामिए, भविजन सुध सरधान॥२॥

॥ पद्य ॥ (देशी निशदिन जोउं वाटडी)

द्वीप नंदीश्वर मानले जिन
वचण अमोला । अंचलि ॥
अष्टाधिक ज्ञान चैत्यमें,
जिन प्रतिमा विलोला ।

सूत्र पाठ भवि जीवके,
अंतर दृग खोला ॥ द्वीप० १ ॥
दोय नाग दोय भूतकी,
दोय यक्ष अतोला ।
दोय आशाधर जानिए,
जिन प्रति जिन बोला ॥ द्वीप० २ ॥
विनय करंती आठ ए,
दोय चमर विंझोला ।
जिन पूंठे एक छत्र धर,
सासय रंग रोला ॥ द्वीप० ३ ॥
जिन धर्मे मन भावियो,
जिम कृमिरंग चोला ।
आतम लक्ष्मी संपजे,
वल्लभ हर्ष कलोला ॥ द्वीप० ४ ॥

॥ दोहा ॥

पूजा उपकरण जानिए, अष्टाधिक शत सार ।
फूल माल दर्पण धजा, पुष्प चंगेरी भृंगार ॥१॥
घंट कुंभ अति शोभता, आतपत्र मनोहार ।
अड मंगल मंगल करा, धूप घटी श्री कार ॥२॥

रजत मणि के उपकरण, इत्यादि वहु भात ।
ठाम ठाम प्रासादकी, भूमि वेलकी जात ॥ ३ ॥

(॥ माढ ॥ थारी गईरे अनादि निंद-)

नंदीश्वर तीरथ नाथ जिनेश्वर प्यारो तो सही ॥
प्यारोतो सही मेरे चेतन
प्यारो तो सही । नंदी० अंचली ॥
सासय जिनवर मूल प्रासादे, धारो तो सही ।
अष्टाधिक शत जिनराज काज,
सुखकारो तो सही ॥ नंदी० ॥ १ ॥
षोडश जिनवर द्वार ठाठ अवधारो तो सही ।
एकसो चोवीस सर्वाग्र विंव
जयकारो तो सही ॥ नंदी० २ ॥
रजतमणि कलशे गण कर मनोहारो तो सही ।
श्री जिन गुण सुर गण गाय थाय
सुख भारो तो सही ॥ नं० ३ ॥
ताल मृदंग वांसरी वीणा, तारो तो सही ।
अमरी भमरी दे राग वजावे,
सारो तो सही ॥ नंदी० ४॥

सूत्र पाठ भवि जीवके,
अंतर दृग खोला ॥ द्वीप० १ ॥
दोय नाग दोय भूतकी,
दोय यक्ष अतोला ।
दोय आशाधर जानिए,
जिन प्रति जिन वोला ॥ द्वीप० २ ॥
विनय करंती आठ ए,
दोय चमर विंझोला ।
जिन पूंठे एक छत्र धर,
सासय रंग रोला ॥ द्वीप० ३ ॥
जिन धर्मे मन भावियो,
जिम कृमिरंग चोला ।
आतम लक्ष्मी संपजे,
वल्लभ हर्ष कलोला ॥ द्वीप० ४ ॥

॥ दोहा ॥

पूजा उपकरण जानिए, अष्टाधिक शत सार ।
फूल माल दर्पण धजा, पुष्प चंगेरी भृंगार ॥१॥
घंट कुंभ अति शोभता, आतपत्र मनोहार ।
अड मंगल मंगल करा, धूप घटी श्री कार ॥२॥

रजत मणि के उपकरण, इत्यादि बहु भात ।
ठाम ठाम प्रासादकी, भूमि वेलकी जात ॥ ३ ॥

(॥ माढ ॥ थारी गईरे अनादि निंद-)

नंदीश्वर तीरथ नाथ जिनेश्वर प्यारो तो सही ॥
प्यारोतो सही मेरे चेतन
प्यारो तो सही । नंदी० अंचली ॥
सासय जिनवर मूल प्रासादे, धारो तो सही ।
अष्टाधिक शत जिनराज काज,
सुखकारो तो सही ॥ नंदी० ॥ १ ॥
षोडश जिनवर द्वार ठाठ अवधारो तो सही ।
एकसो चोवीस सर्वाग्र विंब
जयकारो तो सही ॥ नंदी० २ ॥
रजतमणि कलशे गण कर मनोहारो तो सही ।
श्री जिन गुण सुर गण गाय थाय
सुख भारो तो सही ॥ नं० ३ ॥
ताल मृदंग वांसरी वीणा, तारो तो सही ।
असरी भमरी दे राग वजावे,
सारो तो सही ॥ नंदी० ४॥

इस विध स्नान करी जिन सुर अघ, टारो तो सही ।
वंदन पूजन धरी प्रेम नेम
हितकारो तो सही ॥ नंदी० ५ ॥
आतम लक्ष्मी दायक प्रभु गुणकारो तो सही ।
वल्लभ मन हर्ष अपार प्रभु
शिर धारो तो सही ॥ ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः १

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥



॥ अथ पंचमी पूजा ॥

॥ दोहा. ॥

दधि मुख पर्वत ऊपरे, उत्सवका अधिकार ।
लोक पालका जानिए, आनंद मंगल कार ॥१॥

अंजन गिरि चउ चउ दिशि, लाख जोयण गए दूर।
लाख योजनकी वापिका, उंडी दश जलपूर ॥२॥
निर्मल जल जलचर विना, चार दिशि भवि जान।
एक एक जल वावके, तीन तीन सोपान ॥ ३ ॥

(देशी वारी जाउंरे केसरिया सामरा गुण गाउंरे)

श्री जिनवर गुण गावोरे,
भव दुःख निवारी ॥ श्री० अंचलि ॥
प्रभु शिवरसिया दिलमें वसिया,
मनमोहन उपकारी रे। भव० १ ॥
विधि विष्णु शंकर जिन अरिहा,
नाम अनंते धारी रे। भव० २ ॥
दूषण अड दस दूर निवारी,
धार लिए गुण वारी रे। भव० ३ ॥
रत्न तोरण चारों दिशि वापी,
झलकें तेज अपारी रे। भव० ४ ॥
पणसय जोयण दूर वावसे,
चार दिशि वन चारी रे। भव० ५ ॥
पांचसो जोयण चौड पणे में,
लंबे वापी सुमारी रे। भव० ६ ॥

आतम लक्ष्मी जिन श्रद्धा से,
वल्लभ हर्ष अपारी रे । भव० ७ ॥

॥ दोहा. ॥

जल वापीमें एक एक, दधि मुख पर्वत जान ।
इम सोलां दधिमुखको, स्फाटिक रत्न के मान१।
ऊंचा मोटा मानिए, चउसठ दश हजार ।
तिम कंदे अवधारिए, जोयण एक हजार ॥२

(ठुमरी, देशी महावीर चरणमें जाय)

मेरो मन मान रह्यो जिन
पूजनमें सुखकार ॥ अंचलि ॥
सोलां चैत्य सोलां ऊपर,
अंजन गिरि सम धार । मेरो० १ ॥
एकसो चउवीस चैत्य चैत्यमें
जिन पडिमा विस्तार । मे० २ ॥
लोकपाल सब मिलके करते,
जिन अभिषेक उदार । मे० ३ ॥
श्रावक तिम शुभ मनसे कीजे,
जिन पूजा मनोहार । मे० ४ ॥

आतम लक्ष्मी शिव सुख पामे,
वल्लभ हर्ष अपार । मे० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनःस जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिन पडिमा जिन चैत्यमें, धनुष पांचसो मान ।
रति कर क्षिति धर मानिए,बत्तीस एक समान॥१॥
भवनपति व्यंतर तथा, ज्योतिषी जाति देव ।
वैमानिक सुरवर मिलि, जिनवरकी करे सेव ॥२॥

(देशी ॥ सिद्ध अचल आनंदीरे ।)

जिन पूजा सुहावेरे,भवि भव ताप दली । अंचलि॥
शिवसुख अभिलाषी रे, करे मनरंगरली । जिन० १

जिनराजको पूजीरे, लीजे लाहो मली । जिन० २
जिन आणा धरीजेरे, निज शिर पाप टली ॥जि०३॥
वापी अंतर मानोरे, रतिकर दो दो मली ॥जि०५॥
जोयण दश हजारारे, लांबा चौडा वली ॥जि०५॥
एक सहस उंचारे, आगम पाठ चली ॥जि०६॥
आतम लक्ष्मी हर्षेरे, वल्लभ आश फली ॥जि०७॥

॥ दोहा ॥

रतिकर गिरिवर दीपते, पद्म राग मणिठाठ ।
संठाणे झल्लरी समा, सुनिए आगम पाठ ॥ १ ॥

(काफी । होरी । ताल दीपचंदी ॥ देशी–अपने रंगमें रंगदे)

जिन पूजन शिव संगदे,
हेरी हेरी जीया ॥ जिन० अंचलि ॥
वत्तीस रतिकरे वत्तीस चैत्ये ।
जिन पूजी दुःख भंग दे । हेरी० १ ॥
तीर्थोदक कलशे भरी कीजे ।
जिन अभिषेक सुरंग दे । हे० २ ॥
केसर चंदनसे प्रभु पूजी ।
जिन गल हार उमंग दे । हे० ३ ॥

कनक पत्र शुभ कोरणी कीजे ।
विच विच रत्नको रंग दे । हे० ४ ॥
सुर सम भविजन पूजा रचावे ।
भावे शिव सुख संग दे । दे० ५ ॥
आतम लक्ष्मी फल पूजाका ।
वल्लभ हर्ष अभंग दे । हेरी० ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ।१।

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सोहम ईशानेंद्रकी, इंद्राणि अड आट ।
शुभ भाव प्रभु पूजती, करती नव नव टाट ॥१॥

॥ सोरठी । तालदीपचंदी । देशी । स्याम ब्रह्म सुहंकर लखरी ।

द्वीप नंदीश्वर जिन अखरी । द्वीप० अंचलि ।

चार विदिशिमें चार रतिकर ।
सर्व रतनमयी दखरी ॥ द्वीप० १ ॥
ऊंचा लांबा पिहुला हजारें ।
इक दस दस जिन सख री ॥ द्वीप०२॥
कंद अढीसो जोयणका तस ।
ज्ञानी ज्ञान परतखरी ॥ द्वीप० ३ ॥
सहस एक तीस छसो तेवीस ।
परिधि अज्ञानको नख री ॥ द्वीप० ४॥
राजधानी चारों रतिकरसे ।
चउ दिशि जोयण लख री ॥ द्वीप०५॥
आतम लक्ष्मी निजगुण प्रगटे ।
वल्लभ हर्ष समख री ॥ द्वीप० ६ ॥

॥ दोहा ॥

चार गिरिकी मिलायके, राजधानियां सोल ।
अग्नि नैऋत कोणकी, धुर हरि ललना बोल ॥१॥
वायव्य ईशानकी, राजधानियां आठ ।
ईशानेंद्र इंद्राणीकी, जानो आगम पाठ ॥ २ ॥

(जंगलो। ताल दीपचंदी देशी। अकेली जानसे मैंतो दुःख सह्योरे ॥)

भवि एतो रचना पिछानी रे,
अनंते ज्ञानीकी एतो रचना पिछानी रे॥अं०
ज्ञानी विना वर्णन नवि होवे।
मानी श्रद्धा आनीरे ॥ अनंते० ॥ १॥
लाख लाखकी सोलां नगरियां ।
जोयण ए जिन वानीरे ॥ अनंते० ॥ २ ॥
जिनको मन जिन धर्म रंगायो ।
सद्दहे ते भवि प्रानीरे ॥ अनंते० ३ ॥
सोल चैत्य एक चैत्ये पडिमा।
वीश अधिक शत मानी रे ॥ अनंते०॥४॥
स्नात्र महोत्सव अग्रमहिपी ।
आय करे सुख खानीरे ॥ अनंते० ॥५ ॥
तिम भविजन पूजो मन हर्षे ।
आतम वल्लभ जानीरे ॥ अनंते० ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ।

उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः १
॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सिद्धायतन वखानिए, तिरछे लोकमें पाठ ।
तीन सहस दोसो सही, ऊपर ओगणसाठ ॥ १ ॥
तिग लख एकाणु सहस, तीनसो ऊपर वीस ।
इतनी पडिमा शाश्वती, प्रणमो भवि निसदीस ॥ २ ॥

॥ पहाडी ताल ठेका ॥

(देशी । गजनियोंकी ॥ धनगए हजारा मजनु)

जिन आणा मनमें धारके,
सासय जिनवर को ध्यावो ॥ अं० ॥
कुडल द्वीपमें चार सुहावे,
जिनमंदिर भवि मनको भावे ।
जिनपडिमा संख्या जिन गावे,
छन्नु के ऊपर चारके ।

शत जिनको सीस नमावो,
सासय जिनवरको ध्यावो ॥ जि० ॥१॥
चार चैत्य रुचक द्वीप जानो,
चारसो छन्नु पडिमा मानो ।
अस्सी मेरु वनमें वखानो,
जिन मंदिर मनो हारके ।
छन्नुंसो पडिमा गावो,
सासय जिनवरको ध्यावो ॥ जि० ॥२॥
पांच मेरु चूलिका विराजे,
जिन घर पट् शत पडिमा साजे ।
वीश चैत्य गजदंते छाजे,
पूजो पाप निवारके ।
चउवीसो विंब मनावो,
सासय जिनवरको ध्यावो ॥ जि० ॥३॥
देव कुरु उत्तर कुरु सोहे,
जिनघर दश भविजन मन मोहे ।
वारसो जिन पडिमा अघ खोहे,
अस्सी गिरि वख्खारके ।

उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः १
॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सिद्धायतन वखानिए, तिरछे लोकमें पाठ ।
तीन सहस दोसो सही, ऊपर ओगणसाठ ॥ १॥
तिग लख एकाणु सहस, तीनसो ऊपर वीस ।
इतनी पडिमा शाश्वती,प्रणमो भवि निसदीस॥२॥

॥ पहाडी ताल ठेका ॥

(देशी । भजनियोंकी ॥ वनगए हजारा मजनु)

जिन आणा मनमें धारके,
सासय जिनवर को ध्यावो ॥ अं० ॥
कुडल द्वीपमें चार सुहावे,
जिनमंदिर भवि मनको भावे ।
जिनपडिमा संख्या जिन गावे,
छनु के ऊपर चारके ।

शत जिनको सीस नमावो,
सासय जिनवरको ध्यावो ॥ जि० ॥१॥
चार चैत्य रुचक द्वीप जानो,
चारसो छन्नु पडिमा मानो ।
अस्सी मेरु वनमें वखानो,
जिन मंदिर मनो हारके ।
छन्नुंसो पडिमा गावो,
सासय जिनवरको ध्यावो ॥ जि० ॥२॥
पांच मेरु चूलिका विराजे,
जिन घर पट् शत पडिमा साजे ।
वीश चैत्य गजदंते छाजे,
पूजो पाप निवारके ।
चउवीसो विंव मनावो,
सासय जिनवरको ध्यावो ॥ जि० ॥३॥
देव कुरु उत्तर कुरु सोहे,
जिनघर दश भविजन मन मोहे ।
वारसो जिन पडिमा अघ खोहे,
अस्सी गिरि वखारके ।

प्रासाद अस्सी मन लावो,
सासय जिनवरको ध्यावो ॥ जि० ॥४॥
नव हजार छन्नुं जिन चंदा,
वंदो पूजो आनंद कंदा ।
आतम लक्ष्मी मान अमंदा,
करम भरम सब जारके,
वल्लभ अति हर्षको पावो,
सासय जिनवरको ध्यावो ॥ जि० ॥५॥

॥ दोहा ॥

तीस जिनालय कुलगिरि, छत्तीससो जिनराय ।
दिग्गज चालीस चैत्यबिंब, अठ चालीस सौ भाय१
चैत्य दीर्घ वैताढ्यपर, एकसो सत्तरि मान ।
वीस सहस और चारसौ, जिनवर बिंब प्रमान २
चैत्य जंबूआदितरु, एक दश शत सित्तेर ।
एक लाख चालीसहजार, चारसो बिंबकी लहेर३
चैत्य सहस कंचनगिरि, इक लख वीस हजार ।
चैत्य अस्सी अस्सी द्रहे, बिंब छन्नुसो धार ॥४॥
तीनसौ अस्सी चैत्यकुंड, बिंब पणयाली हजार ।
ऊपर छसौ जिनवरा, सिमरो उठी सवार ॥ ५॥

(देशी ॥ सुंदर सामलिया ॥)

भविजन शांत धिया, सासय जिनवर ध्यावो ।
सुखकर नाम लिया, निशदिन जिन गुण गावो
भविजन शांत धिया ॥ अंचलि ॥
सित्तेर चैत्य महा नदी जानो,
चोरासीसौ विंब वखानो ।
निरखी आनंद थावो । भविजन शांत धिया ॥१॥
वीस प्रासाद यमक गिरि मानो,
चउवीससौ जिन विंब प्रमानो ।
नमन करी सुख पावो—भविजन० ॥ २ ॥
वृत्त वैताढ्ये वीस जिनालय,
चउवीससौ जिन पडिमा मानय ।
करिए पूजन सिल आवो—भविजन० ॥ ३ ॥
चैत्य चार इखुकार सुहावे,
चारसौ अस्सी जिन विंब भावे ।
नमिए पाप पलावो—भविजन० ॥ ४ ॥
चार चैत्य मानुषोत्तर सोहे,
चारसौ अस्सी जिन विंब मोहे ।
व्यंतर दोय मनावो—भविजन० ॥ ५ ॥

तिम ज्योतिषिमें दोय असंख्या,
आतम लक्ष्मी हर्ष न संख्या।
वल्लभ सीस नमावो—भविजन० ॥ ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥



॥ अथ नवमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सात कोडि ऊपर सही, बहुतेर लाख सुजाणं।
अधो लोक जिन चैत्य हैं, ए जिनवरकी वाण॥१॥
कोडि तेरसौ जानिए, और नव्याशी कोड़।
साठ लाख जिन बिंबको, वंदो दो कर जोड़ ॥२॥

॥ कलिंगडा ॥ देशी । अरचूंमे आज ऋषभ चरनं ॥

अरचूं में सासय जिन चरनं, अरचूं में ॥ अं० ॥

असुर कुमारे चैत्य सुहंकर,
चउसठ लाख प्रभु वरनं ॥ अरचूं मैं० ॥ १ ॥

एकसौ पन्नर कोडि पडिमा,
वीस लाख ऊपर धरनं ॥ अरचूं मैं० ॥ २ ॥

नागकुमारे लाख चौरासी,
शोभे जिनघर मन हरनं ॥ अरचूं मैं० ॥ ३ ॥

इकसौ अरु एकावन कोडि,
वीस लाख नमुं अघ जरनं ॥ अरचूं मैं० ॥ ४ ॥

बहुत्तेर लाख सुवर्ण कुमारे,
श्रीजिन चैत्य सुधा करनं ॥ अरचूं मैं० ॥ ५ ॥

एकसौ ने ओगणत्रीस कोडी,
साठ लाख ऊपर ठरनं ॥ अरचूं मैं० ॥ ६ ॥

आतम लक्ष्मी निजगुण कारण,
वल्लभ हर्ष चरन परनं ॥ अरचूं मैं० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

विद्युत अग्नि द्वीप फुन, उदधि कुमार सुजान ।
दिग स्तनित षट जानिए, जिनघर बिंब प्रमान ॥ १

छहत्तर लाख वखानिए, सिद्धायतन विचार।
विंब कोडि इकसौ छतीस, अस्सी लाख सुमार ॥२॥
इतने एक निकायमें, पांच निकाये जोय।
जिनघर जिनविंब मानिए, उतने उतने होय ॥३॥

॥ ठुमरी। पंजाबी ठेको देशी। माधुवनमें मेरा सामरिया ॥

सासय जिनवर पूजी नरभव,
लाहो भविजन मन माने ॥सासय। अं०।
जिनघर छन्नुलाख सुहावे,
वायु कुमार अमर थाने ॥ सासय० ॥ १ ॥
विंब एकसौ वहत्तर कोडी,
अस्सी लाख आगममें वखाने ॥ सा० ॥२॥
अधो लोकके जिनघर गाए,
जिनवर पडिमा सह जाने ॥ सा० ॥ ३ ॥
पूजन वंदन शुभ भावोंसे,
समकित गुण निज प्रगटाने ॥ सा० ॥ ४ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने,
वल्लभ मन जिन गुण गाने ॥ सा० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुपा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥



॥ अथ दशमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

उर्ध्व लोक सिद्धायतन, लाख चउरासी जाण ।
ऊपर सत्ताणु सहस, तेवीस जिनवर वाण ॥ १ ॥
इकसो बावनकोडि जिन, लाख चोंरानु पाठ ।
सहस चुमालिस वंदिए, सातसों ऊपर साठ ॥२॥
लाख बत्तीस जिनालया, सौधर्म देवलोक ।
सत्तावन कोडी सही, साठ लाख जिन थोक ॥३॥
लाख अठावीस जानिए. सिद्धायतन इसान ।
जिनपडिमा कोडि पचास,चालिस लाख बखान॥४॥

चार लाख सिद्धायतन, सनत्कुमारे जाण ।
इकवीसकोडि साठलाख,जिनपडिमा जिनवाण।५।

॥ जंगला. ॥ देशी–महावीर तोरे समवसरणकीरे ॥

शाश्वता जिन चरणकमलकी रे ।
हुं चाहुं सेवा प्यारी, भवभ्रांति दूर निवारी,
पंचम गति सुख दातारी । शाश्वता० । अं०॥

माहेंद्र रे राजेरे, जिनघर साजेरे,
अड लख जिन पडिमा माली ।
चउदस कोडी लख चाली,
प्रभु नामे नित्य दीवाली । शा० ॥ १ ॥
स्वर्ग ब्रह्म नामारे, शुभ जिन धामारे,
चार लाख बिंब सत कोडी ।
वीस लाख ऊपर ले जोडी,
कर नमन मान मन मोडी । शा० ॥ २ ॥
पचास सहस जानोरे, लांतके चैत्य मानोरे,
लाख नवति जिन बिंब सारा ।
शुक्रे चालीस हजारा,
लाख बहत्तर पडिमा धारा ॥ शा० ३ ॥

आठमे चैत्य कहिएरे, सहस पट लहिएरे,
दश लाख ते अस्सी हजारा,
जिनपडिमा दर्श उदारा,
पामे भवजलधि पारा ॥ शा० ४ ॥
नवमा स्वर्ग आनतरे, दशमा स्वर्ग प्रानतरे,
चउसय जिनघर मनोहारा ।
पडिमा बहत्तर हजारा,
प्रभु अर्चन पातक टारा ॥ शा० ५ ॥
आरण एकादशमारे, अच्युत द्वादशमारे ।
चैत्य दिग सय पडिमा वंदो ।
चउप्पण्ण सहस्स आनंदो,
वल्लभ मन हर्ष असंदो ॥ शा० ६ ॥

॥ दोहा ॥

ग्रैवयक नव स्वर्गमें, अनुत्तर पांच विमान ।
जिन पडिमा इक चैत्यमें, इकसौ वीस प्रमान ॥१॥

॥ अथ ढाल ॥ (देशी । आगे। आगो आनंद माहंयो)

सेवो सालय जिनवर प्रानी ।
मिटे जनम मरण दुःख दानी ॥अं०॥
इकसौ एकादश त्रिक आदि ।

धारो जिनघर सुंदर अनादि ।
इकसौ तेतीससौ वीस जानी ॥ सेवो० १ ॥
दूजी त्रिक चैत्य इकसौ सात ।
विंब वारां हजार विख्यात ।
नमो अडसय चालीस मानी ॥ सेवो० २ ॥
त्रीजी त्रिक चैत्य इकसौ सार ।
जिन प्रणमो वारां हजार ।
अनुत्तर चैत्य पांच मन आनी ॥ सेवो०३ ॥
द्रव्य भावसे जिन छसौ सेवा ।
करे कल्प कल्पातीत देवा ।
आतम लक्ष्मी वल्लभ हर्षानी ॥ से० ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया ।
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः॥१॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १० ॥

। अथ एकादशी पूजा ।

॥ दोहा ॥

जिन पडिमा कर्म भूमिमें, अशाश्वती जग जेह ।
पद पंकज नमु तेहना, होवे पापका छेह ॥ १ ॥

(चाल नाटक आशकतो हो चुका हूं)

पूजा प्रभुकी करता, जग पुण्यवंत प्रानी ॥पू० अं०॥
प्रभु पूजा फल मुक्ति, आगम जिन युक्ति ।
भविजीव मन मानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ पू०१॥
सुर पूजे चउ प्रकारी, तिम पूजे नर नारी ।
वसु द्रव्य शुभ आनी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ पू० २॥
सिद्धगिरि तीर्थ सेवो, चउद क्षेत्रमें न एहवो ।
सीमंधर जिन वानी, जग पुण्यवंत प्रानी । पू० ॥ ३॥
गिरनार स्वामी नेमि, पूजो जिनंद प्रेमी ।
जस ध्यान पाप हानि, जग पुण्यवंत प्रानी ।पू०॥४॥
आतम लक्ष्मी स्वामी, पूजक शिव धामी ।
वल्लभ हर्ष जानी, जग पुण्यवंत प्रानी । पू० ॥ ५॥

॥ दोहा ॥

आदि ऋषभ जिनंदजी, नेमिनाथ भगवान ।
पूजो भवि शुभ भावसे, अजर अमर सुख खान ॥१

(इमन, कल्याण, कहरवा, चाल-होई आनंद बहाररे.)

तीरथ तारन हाररे, भवि पूजो आनंदे ।

समेत शिखर मोक्षे गएरे,

वीस जिनंद सुख काररे ॥ भ० पू० ॥१॥

आदीश्वर अष्टापदेरे,

वरिया शिव वधू साररे ॥ भ० ॥ २ ॥

इत्यादि तीरथ मन रंगे,

पूजो मंगल काररे ॥ भ० ॥ ३ ॥

ध्याता भविजन निश दिन ध्यावो,

ध्येय प्रभु हितकाररे ॥ भ० ॥ ४ ॥

आतम लक्ष्मी निज घट प्रगटे,

वल्लभ हर्ष अपाररे ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ।
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ।१।

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

(ठुमरी–चाल–मन मोह्या जंगलकी हरणीने.)

भवि वंदो प्रभु जग तरणिने ॥ अंचली ॥

नंदीश्वर तीरथ मैं गायो,

तीरथ पार उतरणीने ॥ भ० ॥ १ ॥

जंघा विद्या चारण मुनिवर,

सुरवर संघ विचरणीने ॥ भ० ॥ २ ॥

स्नात्र करी पूजी सुर नाचे,

गावे मोह विदरणीने ॥ भ० ॥ ३ ॥

तपगच्छपति विजयानंद सूरि,

लक्ष्मीविजय अघ हरणीने ॥ भ० ॥ ४ ॥

हर्षविजय तस किंकर वल्लभ,

रचना मीयागाम करणीने ॥ भ० ॥ ५ ॥

संवत् वीर चउवीसौ सैंती,

आतम सोल सिमरणीने ॥ भ० ॥ ६ ॥

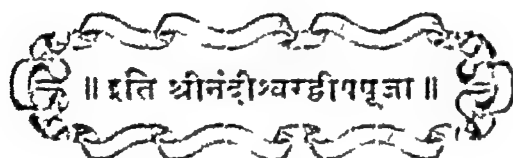
विक्रम उन्नीसौ अडसठमे,

आश्विनमास सुवरणीने ॥ भ० ॥ ७ ॥

एकादशी बुधवार सुयोगे,

नवपद ध्यान सुधरणीने ॥ भ० ॥ ८ ॥

विजयकमलसूरि उवझाया,
वीर विजय अनुसरणीने ॥ भ० ॥ ९ ॥
कांतिविजय प्रवर्त्तक सोहे,
धर्मपसाय सुखभरणीने ॥ भ० ॥ १० ॥
वल्लभसूत्र विरुद्ध जो भासे,
मिथ्या दुष्कृत वरणीने ॥ भ० ॥ ११ ॥



॥ निन्यानवे प्रकारकी पूजा ॥



॥ अथ प्रथमा पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्री शंखेश्वर पासजी, प्रणमी शुभ गुरु पाय ।
विमलाचल गुण गाइसुं, सिमरी सारद माय ॥१
अकसर यह गिरि शाश्वता, महिमाका नहि पार ।
प्रथम जिनंद समोसरे, पूर्व निन्यानवे वार ॥ २
अढाइ द्वीपमें इण समा, तीरथ नही फलदाय ।
कलयुग कल्पतरु मिला, मुक्ताफलसे वधाय ॥३॥
यात्रा निन्यानवे जो करे, उत्कृष्टे परिणाम ।
पूजा निन्यानवे भेद से, करते अविचल धाम ॥४
नव कलशे अभिषेक नव, इम एकादश वार ।
पूजा पूजा फूल फल, आदि निन्यानवे सार ॥५॥

(तलंग, कहरवा, चाल-दहींवालीका तौर दिखाना.)

करिए यात्रा निन्यानवे वारी, नमिए प्रभु प्रभु
सुखकारी ॥ करिए यात्रा० अंचली ॥
लख नवकारका जाप जपी जे,
दो तेले सत वेले ।

रथयात्राकी शोभा सारी,
नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥ १ ॥
परिकरमा पूजा करनेसे,
शुभ भावे सुख पावे ।
जपे वार प्रभुको हजारी,
नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥ २ ॥
न्नवण विलेपन धूप दीप फल,
फूल खरे भूल टरे ।
अक्षत नैवेद्यकी विधि सारी,
नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥ ३ ॥
आठ अधिक शत ढुंक मनोहर,
मोटी अति देवे रति ।
मिल सत दश ऊपर चारी,
नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥ ४ ॥
शत्रुंजयगिरि नाम पहेली,
ढुंक भली रंग रली ।
सेवे निशदिन मिल नर नारी,
नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥ ५ ॥

सहस अधिक अठ मुनिवर साथे,
बाहुबली कर्म दली ।
शुभ वीर विजय बलिहारी,
नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥ ६ ॥

(ताल, कवाली, चाल–मुजरा नितकरना नितकरना.)

यात्रा नित करिए नित करिए ।
प्रभु आदि जिनंद अनुसरिए ॥ यात्रा० ॥१॥
बाहुबली टुंक नाम है दूजा ।
मरु देवी नाम सिमरिए ॥ यात्रा० ॥ २ ॥
पुंडरिक गिरि पांच कोडि मुनीवर ।
सिद्धि वधु जिहां वरिए ॥ यात्रा० ॥ ३ ॥
पांचमी टुंक रैवतागिरि नामे ।
विमलाचल दिल धरिए ॥ यात्रा० ॥ ४ ॥
सिद्धराज भगीरथ प्रणमी ।
सिद्ध क्षेत्र पग परिए ॥ यात्रा० ॥ ५ ॥
छः री पाली इण गिरि आकर ।
जनम पवित्तर करिए ॥ यात्रा० ॥ ६ ॥
पूजा करी निज कारज साधी ।
वीर विजय पद वरिए ॥ यात्रा० ॥ ७ ॥

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥



॥ अथ द्वितीया पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कदम कदम शुभ भावसे, गिरि सनमुख उजमाल
कोडी सहस भवके किए, पाप कटें ततकाल ॥१॥

(क़वाली, गजल. चाल-आशकनोहोचुकाहूं.)

गिरिराज दर्श पावे, जग पुण्यवंत प्रानी । अं० ॥
ऋषभदेव पूजा करिए, संचित कर्म हरिए ।
गिरि नाम गुणखानी ॥ जग पुण्य० ॥ १ ॥
सहस्र कमल सोहे, मुक्ति निलय मोहे ।
सिद्धाचल सिद्धठानी ॥ जग पुण्य० ॥ २ ॥

शतकूट ढंक कहिए, कदंब छाह रहिए ।
कोडी निवास मानी ॥ जग पुण्य० ॥ ३ ॥
लोहित तालध्वज ले, ढंकादि पांच भज ले ।
सुर नर मुनि कहानी ॥ जग पुण्य० ॥ ४ ॥
रतन खान बूटी, रस कूंपिका अखूटी ।
गुरुराज मुख वखानी ॥ जग पुण्य० ॥ ५ ॥
पुण्यवंत प्रानी पावे, पूजे प्रभुको भावे ।
शुभ वीर विजय वानी ॥ जग पुण्य० ॥ ६ ॥

(सोहनी-कहरवा चाल-भक्तिसे मुक्तिपावोगे.)

सिद्धगिरि तीरथपर जानाजी,
जानाजी सुख पानाजी सिद्धिगिरि । अंचली ॥
दश कोटि श्रावक को जिमावे ।
जैन तीरथ कर आनाजी ॥ सि० ॥ १ ॥
इससे अधिक फल सिद्धाचलपर ।
एक मुनि दिए दानाजी ॥ सि० ॥ २ ॥
चंद्रशेखर सम पापी प्रानी ।
इण गिरि पाप खपानाजी ॥ सि० ॥ ३ ॥
कार्तिक चैतर पूनम यात्रा ।
तप जप ध्यान लगानाजी ॥ सि० ॥ ४ ॥

ऋषभसेन जिन आदि असंखा ।
तीर्थंकर सुख पानाजी ॥ सि० ॥ ५ ॥
शिव वहु वरनेका ए मंडप ।
श्री शुभ वीरका गानाजी ॥ सि० ॥ ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीया पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नेमि विना तेइस प्रभु, आए विमल गिरींद ।
भावि चौंवीसी आवसी, पद्मनाभादि जिनंद ॥ १ ॥

(रागाच ॥ चाल–मानमदमनमे परिहरना.)

सिद्धगिरि दर्शन भवि करना, करी करम चकचूर ।
सिद्धगिरि दर्शन भवि करना ॥ अंचली ॥

काम क्रोधकी तपत मिटावे, अमृत घन झरता।
नरक वैतरणी कुमति नासे,
दुर्गति नहीं गिरता ॥ करी० ॥ १ ॥
पुण्यराशि महाबल गिरिधारी, दृढशक्ति भरता।
शतपत्तर विजयानंद सेवी,
भव समुद्र तरता ॥ करी० ॥ २ ॥
भद्रंकर महापीठ कहावे, सुरगिरि मन हरता।
महागिरि महापुण्य जोर,
नजरे मुझको परता ॥ करी० ॥ ३ ॥
अस्सी योजन मान पहिले, आरे में धरता।
सित्तर साठ पचास योजन
अब बार योजन फिरता ॥ करी० ॥४॥
छट्ठे आरे सात हाथका, मान धारण करता।
पांचमें आरे पाय के दुर्लभ,
निज आतम ठरता ॥ करी० ॥ ५ ॥
रत्न चिंतामणि नरभव पाकर,
जनम सफल भविजन करता।
पुण्य उदय मन सुमति आके,
वीरको अनुसरता ॥ करी० ॥ ६ ॥

(सींधडा—कहरवा-चाल-तेरी भक्तिछोड सद्गुरु.)

सिद्धगिरि तीरथ जैसा और नहीं धाम है।
और नहीं धाम है, और नहीं धाम है। सिद्ध० अं०॥
अनादि अनंत वीता, काल नहीं काम जीता।
अब तो तूं चेत प्राणी, यही तेरा काम है॥ सि० १
तनिक तमीज करना, क्रोध लोभ दूर हरना।
मान माया त्याग तेरा, मुक्तिमें मुकाम है॥ सि०२
रातने दिवस पूरे, किए रहे काम अधूरे।
मनले अब कहना तारक, देवगुरु नाम है॥सि०३
जीवाजून लाख चार, अस्सी फिरिओ वारवार।
महापुण्य उदय पायो, नर भव नहीं दाम है॥
हार नहीं जीती बाजी, चाहता है रहना राजी।
राग द्वेष काट प्यारे, तुंहि आतमराम है॥ सि० ५
जब मिले कारण निमित्त, शुद्ध होवे कारज चित्त।
जीव मान तीरथ शुभ, वीर पद ठाम है सि० ६

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ३॥

। अथ चतुर्थी पूजा ।

॥ दोहा ॥

शत्रुंजी नदी न्हायके, मुख बांधी मुखकोस ।
देव जुगादी पूजिए, लाकर मन संतोस ॥ १ ॥

(चाल नाटक–तोरेगमका तराना दादरा–)

विमलाचल धारा, मल हरनारा,
ऋषभ देव भगवान ।
प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा,
सब जग प्यारा ऋषभ० ॥ अंचली

इस अवसर्पिणी काल में रे, किया प्रथम उद्धार ।
भरतचक्री दूजा कियारे, दंडवीर्य सुखकार ।

प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा,
सब जग प्यारा ऋषभदेवभगवान ॥ १ ॥
सीमंधर वचने सुनीरे, तीजा किया उद्धार ।
ईशान इंद्रने सुख लियारे, पाया भवजल पार ।
प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा,
सब जग प्यारा ऋषभदेवभगवान ॥ २ ॥
कोडि सागरके अंतरे रे, उद्धार चौथा करंत ।
माहिंदर देव लोक का रे, स्वामी पुण्य भरंत ।
प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा,
सब जग प्यारा ऋषभदेवभगवान ॥ ३ ॥
पंचम पंचम शचीपति रे, किया उद्धार आनंद ।
सागर दस कोडि पीछे रे, पामिया आनंद कंद ।
प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा,
सब जग प्यारा ऋषभदेवभगवान ॥ ४ ॥
एक लाख कोडि गए रे, सागर छट्टा उद्धार ।
चमरेंद्रने किया भावसे रे, निज आतम लिया तार।
प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा,
सब जग प्यारा ऋषभदेवभगवान ॥ ५ ॥

उद्धार किया सातमा रे, चक्री सगर नरंद्र ।
तीर्थ अपूरव सेविए रे, श्रीशुभ वीरजिनेंद्र ।
प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा,
सब जग प्यारा ऋषभदेवभगवान ॥ ६ ॥

(जंगला, ठेका पंजाबी, चाल–आज वधाई प्यारे)

विमल गिरि ध्यावो प्यारे,
विमलगिरि ध्यावो प्यारे,
ध्यानसे शिव सुख फल पावो विमल० । अंचली
आठमा व्यंतरेंद्रने कीना,
शिवरमणी वधूमें चित्त दीना ।
धर्म में भीना, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥ १ ॥
किया श्रीचंद्र प्रभुके वारे,
चंद्रजसा नृपने दुःख टारे ।
चैत्य समारे, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥ २ ॥
पुत्र श्रीशांति जिनंदका जानो,
दशमा उद्धार किया तस मानो ।
हर्ष दिल आनो, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥ ३ ॥
ग्यारसा रामचंद्रने कीना,
बारमा पांडवने चित दीना ।

शिव सुख लीनां, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥४॥
महानंद कर्मसूदन कैलासा,
पुष्पदंत जयंत आनंदवासा,
पूरे मन आसा, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥ ५ ॥
श्रीपद हस्तगिरि मन लावो,
शाश्वतसुख परमपद पावो
वीर गुण गावो, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥ ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चौथे आरे ए हुए, सब मोहटे उद्धार ।
छोटे बिच बिचमें हुए, जिनका नहीं है पार ॥१॥

(इमनकल्याण,— कहरवा, चाल–होई आनंद वहार.)

तीरथ जग जयकार रे,
भवि भेटो प्रभुको ॥ ती० अंचली ॥
प्रभु दर्शनसे पाप पणासे,
फिरना मिटे संसार रे ॥ भवि १ ॥
संवत इकसौ आठमें कीना,
जावड शाहने उद्धार रे ॥ भवि २ ॥
वारसौ तेरां विक्रम संवत,
वंश श्रीमाली सार रे ॥ भवि ३ ॥
चौदमा वाहड मंत्रिने कीना,
लीना नरभव सार रे ॥ भवि ४ ॥
इंदु ऋषि शिखि चंद्रके वर्षे,
समराशाह ओसवार रे ॥ भवि ५ ॥
पंदरमा उद्धार करीने,
निज आतम लिया तार रे ॥ भवि ६॥
ऋषि वसु वाण इंदु शुभवर्षे,
कर्माशाह उद्धार रे ॥ भवि ७ ॥
वर्त्तमान शासन जयवंता,
वीर वचन जयकार रे ॥ भवि ८ ॥

ऋषभ जिनंदकी पडिमा सोहनी ।
भरत बनाइ मानो मंतर मोहनी ।
रतन मान चमकारा चमकारा ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥
चक्री सगर सुर दिलमें धारी ।
दुषम कालमें भावी विचारी
विंब गुफामें जा पधारा जा पधारा ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥
देव देव पूजनको आते ।
ठाठ बना सांइ गुण गाते ।
जय जय शब्द उच्चारा उच्चारा ॥ सिद्ध० ॥ ४ ॥
देव देवी मिल नाटक करते ।
गीत गान कर पापको हरते ।
वीर वचन हितकारा हितकारा । सिद्ध० ॥ ५ ॥

(जंगला-कारवा, चाल, मनमोहा जंगलकी हरणीने.)

भवि पूजो प्रभु जग तरणिने, भ० ॥ अंचली ॥
जिन गुण अमृत पानको करके,
जन्म सफल निज करणीने ॥ भवि० ॥ १ ॥
या रीति भक्ति मगन सुरसंघा,
जनम जनम दुःख हरणीने ॥ भवि० ॥ २ ॥

देव मदद नर दरस करे जो,
भव तीजे शिव वरणीने ॥ भवि० ॥ ३ ॥
पश्चिम दिशि सुवर्ण गुफामें,
कंचनगिरि नाम धरणीने ॥ भवि० ॥ ४ ॥
आनंदघर पुण्यकंद जयानंद,
पातालमूल विहरणीने ॥ भवि० ॥ ५ ॥
विभास विशाल जगतारण अकलंक,
तीरथ पार उतरणीने ॥ भवि० ॥ ६ ॥
ज्ञान विवेकसे प्रभुको पिछानी,
वीर वचन अनुसरणीने ॥ भवि० ॥ ७ ॥

॥ काव्यम्. ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥६॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नमि विनमी विद्याधरा, दोय कोडि मुनिराय ॥
साथ हि सिद्धिवधू वरे, शत्रुंजय सुपसाय ॥ १ ॥

॥ लावणी, कहरवा, चाल–पार्वतीका पति ॥

सर्व तीरथमें मोहटा तीरथ,
श्रीशत्रुंजय प्यारा रे ॥
शुद्ध मन वच कायासे सेवे,
सो पावे निस्तारा रे ॥ सर्व० १ ॥
आशा धरि आवे भवि प्राणी,
सो पावे सुख भारा रे ॥
दूरभवी अभवी नही आवे,
शुभ भावे धिक्कारा रे ॥ सर्व० २ ॥
चोसठ नमि खेचर पुत्री मिल,
ऋषभ चरण चित्त धारा रे ॥
हाथ जोड विनवे प्रभु आगे,
सुंदर वचन उचारा रे ॥ सर्व० ३ ॥
नमि विनमि जे पुत्र तुमारे,
जिन जाने जग सारा रे ॥

दीन दयाल दया कर दीना,
राज्य भाग हितकारा रे ॥ सर्व० ४ ॥
वाह्य राज्य भोगी प्रभु पासे,
आकर काज सुधारा रे ॥
हम भी तातजी साधसुं कारज,
लेकर आप सहारा रे ॥ सर्व० ५ ॥
इम कहती सिद्धगिरि पर चढती,
त्यागा सब ही आहारा रे ॥
वीर विजय मिल ज्योति में ज्योति,
आवागमन निवारारे ॥सर्व० ६ ॥

भैरवी, कहरवा, या कवाली, चाल-अबतो प्रभुजीकालेलो सरन)

ए है तीरथ जग तारन तरन ॥ अंचली ॥
ऋषभ जिनेश्वर जग परमेश्वर,
पूजा करो मिटे जनम मरन ॥ ए० ॥ १ ॥
एक अवगाहने सिद्ध अनंता,
ज्ञान दरस दो क्षायक धरन ॥ ए० ॥ २ ॥
अकर्मक महातीरथ हिमगिरि,
अनंतशक्ति प्रभु पूजक वरन ॥ ए० ॥ ३ ॥

पुरुषोत्तम और पर्वतराजा,
ज्योतीरूप भवि जीव करन ॥ ए० ॥ ४ ॥
विलासभद्र और सुभद्र नामा,
सुन सुन मन भवि जीव ठरन ॥ ए० ॥५॥
श्री शुभ वीर प्रभु अभिषेके,
पाप पुंज सब दूर हरन ॥ ए० ॥ ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥



॥ अथ अष्टमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

द्राविड वारिखिल्लजी, दसकोडि अणगार ।
साथ हि सिद्धि वधू वरे, वंदो वारं वार ॥ १ ॥

(भैरवी—चाल नाटक—हेजी तेरे दरदे हिजरने सताया.)

सिद्धगिरि दर्शनको जिया ललचाया, प्यारा तुहीं,
सुखकारा तुहीं, जगतारा तुहीं, जिनराया ॥अं०॥
भरत के पाटे भूपति, सिद्धि वरे इस ठाम ।
असंख्याता इस कारणे, सिद्धक्षेत्र जग नाम ।
हेजी हुए अजित जिनेश्वर राया ॥ प्यारा० १ ॥
जिम जिम ए गिरि सेविए, तिम तिम पाप पलाय।
अजित जिनेश्वर साहिबा, रहे चौमासा आय ।
हेजी सिद्धगिरि तीरथ सुखदाया ॥ प्यारा० २ ॥
सागर मुनि इक कोडिसुं, तोडी कर्म के पास ।
पांच कोडि मुनिराजसुं, भरत लिया शिव वास।
हेजी धन्य धन्य ऐसे मुनिराया ॥ प्यारा० ३ ॥
आदीश्वर उपगार से, दस सत कोडि साथ ।
अजितसेन विमलाचले, पकडा शिव वधु हाथ ।
हेजी प्रभु चरण कमल मन लाया ॥ प्यारा० ४ ॥
अजितनाथ मुनि चैत्रकी, पूनम दश हजार ।
आदित्ययशा मुक्ति गए, एक लाख अणगार ।
हेजी शुभ वीरविजय गुण गाया ॥ प्यारा० ५ ॥

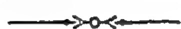
(चाल अंग्रेजी बाजाकी ताल दादरा—रागणी पीलो)

तीरथ सिद्धगिरि जग सार सार सार ।
निमित्त शुद्ध भाव का पियार सुखकार ॥ १ ॥
आदि जिनंद चंद पद धार धार धार ।
सेवत सूर चंद इंद वृंद नर नार ॥ २ ॥
अजरामर नाम जप वार वार वार ।
क्षेमंकर अमरकेत गुणकंद भवतार ॥ ३ ॥
सहस्र पत्र डाल गले हार हार हार ।
शिवंकरु जनम मरण दुःखको निवार ॥ ४ ॥
कर्मक्षय तमोकंद यार यार यार ।
राजराज ईश्वर है नाम मंगलकार ॥ ५ ॥
गिरिवर धूर शिर चार चार चार ।
चक्रवर्ती भूप वार वार वलिहार ॥ ६ ॥
आदि देव पूज कर्म जार जार जार ।
शुभवीर साहीबा तुं हि आनंदके दातार ॥ ७ ॥

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्यकरोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥



॥ अथ नवमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

राम भरत त्रय कोडिसुं, कोडि मुनि श्रीसार ।
कोडि साढे आठ शिववरे, शांवप्रद्युम्नकुमार ॥१॥

(वरवा, ताल कहरवा-चाल-मजा देते हैं क्या ··)

धनधन वो जगमें नरनार,
विमलाचलके जानेवाले ॥ धनधन० अंचलि ॥
सिद्धाचल शिखर निहार,
आदीश्वर प्रभुको जुहार, ॥
मानो दर्शन अमृत धार,
भवि मुक्तिके जानेवाले ॥ ध० १ ॥
शिव सोम जसाके लार,
तेरां कोटि मुनि परिवार ॥
हुए शिव सुंदरी भरतार,
प्रभुके ध्यान लगानेवाले ॥ ध० २ ॥

लाख एकानवे साथ,
भए नारदजी शिर नाथ ॥
लंघे झटपट भवजलपाथ,
सदा प्रभुगुणके गानेवाले ॥ ध० ३ ॥
वसुदेव भूपकी नार,
हुइ सिद्ध पैंतीस हजार ॥
दिया आवागमन निवार,
सदा शिवफलके पानेवाले ॥ ध० ४ ॥
एक कोडी बावन लाख,
सहस पचावन उपर आख ॥
सातसौ सतत्तर ले दाख,
नहीं धोखाके खानेवाले ॥ ध० ५ ॥
किया शांतिनाथ चौमास,
हुए तब ए सब शिव वास ॥
शुभ वीरविजय कहे खास,
प्रभु हैं पार लगानेवाले ॥ ध० ६ ॥

(सोरठ-चाल-कुबजाने जादु डारा)

सिद्धगिरिने जादूडारा ।
मेरा मोह लिया तनमन सारा ॥ सि० अं० ॥

आदिजिनेसर आदिनरेसर,
आदिमुनीसर प्यारा ॥
नाभिनंदन भवदुःख भंजन,
रंजन भवि सुखकारा ॥ सि० १ ॥
चउदां सहस दमितारि संगे,
शिवरमणी भरतारा ॥
प्रद्युम्न प्रिया अचंभी राणी,
पहुंची मोक्ष मझारा ॥ सि० २ ॥
चौतालीससौ साथ वैदरभी,
थावच्चापुत्र हजारा ॥
शुक परिव्राजक सेलग पणसय,
सुभद्र सतसौ धारा ॥ सि० ३ ॥
भवतारण तिस कारण नाम है,
भवतारण उच्चारा ॥
गजचंद्र महोदय सूरकांत अरु,
अचल अभिनंद तारा ॥ सि० ४ ॥
सुमति श्रेष्ट अभयकंद मानो,
सरधा विन नहीं चारा ॥
वीरविजय प्रभु हुकमसे होवे,
भवोदधि पार उतारा ॥ सि० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ॥
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥१॥

मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥



॥ अथ दशमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कदंब गणधर कोडीसु, और संप्रति जिनराज ॥
थावच्चा तस गणधरु, सहस्र सुं सीधे काज ॥ १ ॥

(जोग ठेका चाल—ऐ नर तरने को तेरे धर्मचेटा बनाया है)

तीरथ सिद्धगिरिके दर्शन,
नसीबां वर भवि पावे । तीरथ० ॥
शरन जो दर्श को जावे,
नरक तिरयंच नहीं थावे ॥

अनुभव अमृत ध्यान की धारा,
जिनशासन जग में जयकारा ॥
चार दोष किरियाको त्यागो
योगके करनेको ॥ क्यों० ५ ॥
निर्जरतो गुण श्रेणि चढकर,
ध्यानांतर पावे तव जाकर ॥
श्रीशुभवीर वचन सिद्धगिरि
शिवसुंदरी वरनेको ॥ क्यों० ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥१॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १० ॥

(रागणी—कलिंगडा—ताल—कहरवा)

क्यों रुलता संसार तीर्थ है
　　तेरे तरनेको ॥ क्यों० अंचली ॥
तन मन धनसे कर प्रभु पूजा,
　　क्रिया एक कर ज्ञान है दूजा ॥
रात दिवस ले पकड चरन
　　प्रभु पार उतरनेको ॥ क्यों० १ ॥
शुकराजा निज राज विलासी,
　　ध्यान धरे जाकर छै मासी ॥
द्रव्य सेवनसे चंदराज मिट गयो
　　भय मरनेको ॥ क्यों० २ ॥
ध्याता ध्यान ध्येय पद होवे,
　　भावसे त्रिपदी शिवफल होवे ॥
डाल छोड-लग वक्ष जाण नर
　　शिवपुर चरनेको ॥ क्यों० ३ ॥
मूल उरध अध शाखा चारो,
　　छंद पुराणको मनमें विचारो ॥
इंद्रिय डाल पात विषयोंके
　　उद्यम हरनेको ॥ क्यों० ४ ॥

(इमन कल्याण—चाल—दिल किसूसे लगा चुके है)

उत्तम तीरथ सिद्धगिरि जावो ।
छिनमें कठिन करम खपावो ॥ उ० ॥
इस तीरथकी महीमा भारी ।
कथन करत नहिं आवे पारी ।
सुर नर मुनि पति सब गए हारी ।
मान तजी भवि सीस नमावो ॥ उ० १ ॥
पूर्व निन्यावे नाथजी आए ।
साधु बहुत यहां मोक्ष सिधाए ।
श्रावक भी शुभ भावसे पाए ।
मोक्ष भजी गिरि नाम सभावो ॥ उ० २॥
अष्टोत्तर शत कूट सुधामा ।
सौंदर्य यशोधर नामा ।
प्रीति मंडन शुभ कामुक कामा ।
सहजानंद सहज गुण गावो ॥ उ० ३ ॥
महेंद्रध्वजा सर्वारथ सिद्धा ।
प्रियंकर जग नाम प्रसिद्धा ।
गिरि शीतल छांह कारज कीधा ।
ध्यान धरी शिवपुर को धावो ॥ उ० ४ ॥

॥ अथ एकादशी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शत्रुंजय गिरि मंडनो, मरुदेवाको नंद ।
युगलाधर्म निवारको, नमो नमो आदिजिनंद ॥ १

(रागणी—जंगला—ताल—ठेका)

सिद्धगिरि तीरथ प्यारा । तुंहि जग हित करतारा ॥
चरणोंमे मस्तक धारा । सहस आठ वारजी ॥ सि० १
तीरथ वे अदवी चारी । भक्ति कर सूत्रानुसारी ॥
झटपट होवे पारी । छुटदा संसारजी ॥ सि० २ ॥
तेरी जो वे अदवी करता । नरक निगोद परता ॥
दुःखका भंडार भरता । छुटना दुशवारजी ॥ सि० ३
आशातना से धन हानि । भूखा न मिले अन्नपानी ॥
देह सारी रोग भरानी । जावे जनम हारजी ॥ सि० ४
परभव परमाधामी । हाथ सेती दुःख पामी ॥
नहीं कोइ रहती खामी । को न मददगारजी ॥ सि० ५
आशातना त्यागो प्यारे । चरणकमल सुखकारे ॥
जिन आज्ञा सीस धारे । होवे भव पारजी ॥ सि० ६
सिद्धगिरि तीरथ जावे । शुद्ध मन गुण गावे ॥
आतम आनंद पावे । कहे वीर सारजी । सि० ७

॥ कलश ॥

(रागणी पहाड ताल अढाइ)

आज वधाइयां गावोजी
श्री श्री सिद्धाचल दरबार—आज वधाइयां ॥ अं० ॥

विमलाचल वडा—गावोजी
तीरथ मेरु शैल मझार । आज वधाइयां ॥ १ ॥

जिनवर मानीये, गावोजी
मुनिगण संघमें सरकार । आज वधाइयां ॥ २ ॥

निन्यानवे जे करे, गावोजी
यात्रा पावे भवदधि पार। आज वधाइयां ॥ ३॥

अठारां चोरासिए, गावोजी
कीना वीर विजय विस्तार । आज वधाइयां ॥४॥

जन हित कारणे, गावोजी
हिंदीभाषा मांही प्रचार । आज वधाइयां ॥५॥

तपगच्छ दीनमणि, गावोजी
विजयानंदसूरि उपकार । आज वधाइयां ॥६॥

तिनके पाटपर, गावोजी
सूरि कमलविजय सरदार । आज वधाइयां ॥७॥

पूजा निन्यानवे भेदसे कीजे ।
मनुष्य जन्मका लाहा लीजे ।
दान सुपात्तरमें नित दीजे ।
आतम शुभ परिणाम चढावो ॥ उ० ५ ॥
तीर्थ सेवासे शिव सुख थावे ।
आतम लक्ष्मी हर्ष धरि पावे ।
कमल कांति वल्लभ मन भावे ।
वीर शरण अपने मन लावो ॥ उ० ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं,
ऋषभमुख्यजिनांघ्रिपवित्रितम् ।
हृदि निवेश्य जलैर्जिनपूजनं,
विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

॥मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ११ ॥

तस लघु शिष्यने, गावोजी
वल्लभविजय किया उद्धार। आज वधाइयां ॥१७॥
जीरा नगरमें, गावोजी
साधु नव रहे मास चार । आज वधाइयां ॥१८॥
चिंतामणि पासजी, गावोजी
सुखसे वोलो जयजयकार। आज वधाइयां ॥१९॥

इति श्रीसिद्धाचलमहिमागर्भित नवनवति-
भेदभिन्नापूजा समाप्ता ॥

उपाध्याय दीपते, गावोजी
श्रीमुनि विरविजय उदार । आज वधाइयां ॥ ८॥
प्रवर्तक पद धरे, गावोजी
श्रीमुनिकांति विजय श्रीकार। आज वधाइयां॥ ९
इनके राज्यमें, गावोजी
रचना वनी मंगलकार । आज वधाइयां ॥ १० ॥
इंदु शिखि युग युगल, गावोजी
संवत् वीरजिन जयकार । आज वधाइयां ॥११॥
आतम मानिए, गावोजी
संवत दश विक्रम धार । आज वधाइयां ॥१२॥
उन्नीसो वासठा, गावोजी
आश्विनमास सुदि शुभकार। आज वधाइयां ॥ १३
तिथि शुभ पूर्णिमा, गावोजी
रचना पूर्ण हुई कविवार। आज वधाइयां ॥१४॥
श्रीविजयानंदसूरि, गावोजी
श्री लक्ष्मीविजय अणगार। आज वधाइयां ॥१५॥
तस शिष्य जानिए, गावोजी
हर्षविजय हर्ष दातार । आज वधाइयां ॥ १६ ॥

श्रावक इगलख व्रतधरा, ओगणसाठ हजार ।
सूत्र उपासक दाखिया, श्रावक दश सरदार ॥९॥
जिनपासे व्रत उच्चरे, द्वादश तजि अतिचार ।
गुरुवंदन करके करे, पूजन विविध प्रकार ॥ १० ॥
चिंतामणि मुनिमार्ग है, श्रावक सुरतरुसाज ।
दो बांधव गुणठाणमें, राजा अरु युवराज ॥११॥
मोक्षमार्ग व्रतका विधि, सप्तम अंग मझार ।
पंचम आरे प्राणिको, सुणतां हो उपकार ॥१२॥
तिस कारण पूजा रची, अनुपम तेर प्रकार ।
भवजल निधि तरने लिए, ये हैं पत्तन वार ॥१३॥
चांदीका सुरतरु करी, नील वर्ण शुभ पान ।
रक्त वरण फल दीपते, वाम दिशा तस थान ॥१४॥
तेर तेर मेली करी, शुचि वस्तु नव रंग ।
नर नारी कलशे भरी, तेर ठवे जिन अंग ॥१५॥
स्नात्र विलेपन वासकी, माल दीप धुव फूल ।
मंगल अक्षत दर्पणं, नैवेद्य धज फल मूल ॥१६॥

॥ अथ द्वादश व्रतपूजा ॥



॥ दोहा ॥

सामलापार्श्वनाथजी, वंदु आदिजिनंद ।
श्रीलोढनपारसप्रभु, शीतल शीतल चंद ॥ १ ॥
शांतिनाथ शांतिधणी, चंदधर्मसुखदाय ।
मुनिसुव्रतमंदिरविषे, विजयानंदसूरिराय ॥ २ ॥
पुरी दर्भावती शोभती, जिम अमरावती धाम ।
जिनमंदिर सुंदर अति, मोक्षपुरीको ठाम ॥३॥
अष्टकर्मकोचूरवा, अष्ट जिनालय सार ।
अष्टगुणे करि शोभता, अष्टमगति दातार ॥४॥
प्रणमुं श्रीअरिहंतको, सिद्ध सदा भगवान ।
सूरि पाठक साधुजी, पांचों मंगलज्ञान ॥ ५ ॥
पांचों पदको नमीकरी, सिमरी सारदमाय ।
द्वादशव्रत पूजा रचूं, वीरवचन सुपसाय ॥ ६ ॥
शासननायक वीरजी, त्रिशलानंदन धीर ।
कर्मधूर समीर ही, मदन दहनको नीर ॥ ७ ॥
समवसरण सुरवर रचें, वन महसेन मझार ।
संघ चतुर्विधथापके, भूतल करत विहार ॥ ८ ॥

रागी द्वेषी देव विकारी,
त्यागो समकित धर नरनारी।
त्यागो कुगुरु अब्रह्मचारी,
हिंसक धर्मको फंदजी-दर्शन धार॥ भ० १
सार्थवाह जगनाथ शिवंकर,
जगबांधव जगदेव सुहंकर।
वीतराग प्रभु जगगुरु शंकर,
नमिए ज्ञानानंदजी-दर्शन धार॥ भ० २
योग्य आचार सुगुरु आराधो,
यत्नासे भवि धर्मको साधो।
लाधो समकित पुण्य अगाधो,
नमो नितपडिमावृंदजी-दर्शन धार॥भ० ३
श्रेणिक नृप क्षायक गुण धारी,
जिनअभिषेक करे नित्य वारी।
कल्पतरु जिनवर बलिहारी,
पद जिनवर सुलहंदजी-दर्शन धार॥भ०४
आतम लक्ष्मी समकित प्रानी,
ज्ञान चरण गुण गणकी खानी।

॥ सम्यक्त्वारोपणे प्रथमा जलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चउतिस अतिशय शोभता, वाणी गुण पणतीस ॥
समकित पामी पूजिए, तीर्थंकर जगदीस ॥ १ ॥

॥ चाल-तारो तारो जिनंदजी ॥

धारो धारो जिनंदजी, धारो जिनंद ।
हिए धारो जिनंद, भवि पाया है पुण्य प्रचूर॥अं०॥
द्वादश भारी गुणके धारी । देव जिनेश्वर,
तारन तरन, किये दोष अठारांको दूर ॥ धा० १॥
संयम धारी गुरु उपकारी । हिंसा मृषा,
नहीं स्तेय मैथुन, नहीं ममता है जिनके हजूर धा०
विधिसे देव पूजन गुरु वंदन । दान शील,
तप भाव धर्म, हरे मिथ्यात्व जिम तम सूर॥धा०२॥
आतम लक्ष्मी समकित आवे । वीर वचन,
जावे कर्म कलंक, पावे वल्लभ हर्ष जरूर॥धा० ४ ॥

॥ चाल-मैं आया प्रभु नेमजी ॥

भवि पूजो जिनचंदजी, दर्शन धार ।
दर्शन धारी पाप निवारी,
दर्शन शिवसुख कंदजी,
दर्शन धार ॥ भवि० अंचली ॥

रागी द्वेषी देव विकारी,
त्यागो समकित धर नरनारी।
त्यागो कुगुरु अब्रह्मचारी,
हिंसक धर्मको फंदजी-दर्शन धार॥ भ० १
सार्थवाह जगनाथ शिवंकर,
जगबांधव जगदेव सुहंकर।
वीतराग प्रभु जगगुरु शंकर,
नमिए ज्ञानानंदजी-दर्शन धार॥ भ० २
योग्य आचार सुगुरु आराधो,
यत्नासे भवि धर्मको साधो।
लाधो समकित पुण्य अगाधो,
नमो नितपडिमावृंदजी-दर्शन धार॥भ० ३
श्रेणिक नृप क्षायक गुण धारी,
जिनअभिषेक करे नित्य वारी।
कल्पतरु जिनवर बलिहारी,
पद जिनवर सुलहंदजी-दर्शन धार॥भ०४
आतम लक्ष्मी समकित प्रानी,
ज्ञान चरण गुण गणकी खानी।

श्रीशुभ वीर विजयकी वानी,

वल्लभ हर्ष अमंदजी-दर्शन धार ॥भ०५

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलंयजामहे स्वाहा ॥ १ ॥



॥ प्रथमव्रते द्वितीया चंदनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

दंसण नाण अरु चरणके, आठ आठ अतिचार ।
अनशन वीर्याचारके, पण तिग तपके बार ॥ १ ॥
सुंदर समकित उच्चरी, लह चौथा गुण ठाण ।
पंचम गुण ठाणें चढी, थूल थकी पच्चखाण ॥ २ ॥

(देशी, गरबेकी ॥ चाल-आवो आवो अलवेलडाजीरे ॥)

गावो गावो श्री महावीरजी रे ।
भावो भावो दया धीर प्रभु
प्यारीया ॥ गावो० अंचली० ॥
चंदनवाला वोलसेंजी रे,
भक्त वत्सल भगवान प्रभु प्यारिया ।
वाकुल लेइ संचर्यांजी रे,
क्षमानिधि गुणवान प्रभु प्यारिया ॥ गा० ॥ १ ॥
क्षय किये चार घातियांजी रे,
प्रगट्यो केवल ज्ञान प्रभु प्यारिया ।
चंदनवाला वक्षियोजी रे,
संकेत कियो मनमान प्रभु प्यारिया ॥ गा० ॥२॥
केसररसे जिन पूजिएजी रे,
स्थूल प्रथम व्रत जाण प्रभु प्यारिया ।
दुविध त्रिविधके पाठसेजी रे,
जीव हिंसा पचखाण प्रभु प्यारिया ॥ गा० ॥ ३ ॥
वासी वीदल निशिभक्षको जी रे,
टालो पालो जिन आण प्रभु प्यारिया ।

त्यागो आचार अभक्ष्यकोजी रे,
बांधो चंद्रोया दशठाण प्रभु प्या० ॥ गा० ॥ ४॥
सवा विश्वा दया जानिएजी रे,
आतम लक्ष्मी हेत प्रभु प्यारिया ।
वल्लभ हर्षको पामिएजी रे,
वीर वचन संकेत प्रभु प्यारिया ॥ गा० ॥ ५ ॥

॥ चाल-केसरिया थासुं प्रीत करीरे साचा भावसुं ॥

महावीर जिनंदकी पूजा
करोरे भवि भावसे ॥ अंचली ॥
जीव किसीका जावे ऐसी,
वात कभी न करीजे ।
वध बंधन छविछेद न करिए,
भार अति न भरीजेरे ॥ म० १ ॥
भक्त पाणी विच्छेद न कीजे,
पण अति चार तजीजे ।
लौकिक देव गुरुगत मिथ्या,
त्यासी भेद गमीजेरे ॥ म० २ ॥
प्रभु आगम सुन चौमासामें,
जयणा काम करीजे ।

पाद पादमें निर्मल व्रतसे,
निज अघ दल वल छीजेरे ॥ म० ३ ॥
श्वास श्वासमें सौ सौ वेरी,
नाम प्रभुका लीजे ।
चंदनवाला सम प्रभु भविको,
सार धर्म फल दीजेरे ॥ म० ४ ॥
हरिवल राजा यह व्रत पाली,
मन वंछित सव सीजे ।
आतम लक्ष्मी वल्लभ हर्षे,
वीरवचन रस पीजेरे—महा० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्र ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

———>०<———

॥ द्वितीयव्रते तृतीया वासपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सरस कुसुम चूरण करी, केसर और बरास।
पूजो जगत दयालको, बहुल सुगंधी वास ॥ १॥

(चाल—राम नाम रस पीजे प्याला)

नाम वीर प्रभु लीजे,
भवियां लीजेरे लीजेरे लीजे अघ छीजे ॥ अं०॥
मोक्ष पुरीमें मोहन मेलो । डर मोहसे नवि कीजेरे
कीजेरे कीजे अघ छीजे ॥ ना० १ ॥
नाम कर्म के निर्जरणेको । भाव भगत मन रीजेरे
रीजेरे रीजे अघ छीजे ॥ ना० २ ॥
उपदेशी शिव मंदिर पहुंचे। तोसुं बनाव ठवीजेरे
ठवीजेरे ठवीजे अघ छीजे ॥ ना० ३ ॥
आनंदादिक दश यूं कहते। व्रत प्रभुपास धरीजेरे
धरीजेरे धरीजे अघ छीजे ॥ ना० ४ ॥
पांच झूट मोटे नवि बोले । मनमें आश भरीजेरे
भरीजेरे भरीजे अघ छीजे ॥ ना० ५ ॥
आतमलक्ष्मी वीर वचन रस। वल्लभ हर्षसे पीजेरे
पीजेरे पीजे अघ छीजे ॥ ना० ६ ॥

॥ चाल—हेजी तोरे दर्दे हिजरने सताया ॥

वीर जिन अर्चन शिवसुख दाया ।
गाया शचिपति, ध्याया यतिपति ।
पाया भवि महाराया ॥ वीर० अंचलि ॥
झूठ न बोलो दूसरा, व्रत धरी पण अतिचार ।
टालो मन शुभ भावसे, पामो भवजलपार ।
हेजी धरो ध्यान वयण गुरु पाया ॥ गाया० १ ॥
आसन आकाशे धरे, सत्य प्रभावे देव ।
झूठ बोलनेसे गिरा, भूमिपर ततखेव ।
हेजी गयो घोर नरक वसु राया ॥ गाया० २ ॥
मातंगी मांसादनी, भानु प्रश्न जवाब ।
झूठे नर पग भूमिको, शोधन जल छटकाव ।
हेजी ऐसी लौकिकमेंभी वाया ॥ गाया० ३ ॥
मंत्रभेद रह नारीको, न किए न दिए आल ।
कूटलेख लिखिए नहीं, मिथ्या उपदेश टाल ।
हेजी न तो मारी जावेगी व्रतछाया ॥ गाया० ४
कमल सत्यसे सुखी हुवा, झूठसे दुःखिया नंद ।
आतम लक्ष्मी सत्यसे, होवे हर्ष अमंद ।
हेजी शुभवीर वल्लभ मन भाया ॥ गाया० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्‌दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रींश्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय वासान् यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥



॥ तृतीयव्रते चतुर्थी पुष्पमालापूजा ॥

॥ दोहा ॥

चंपा जाई सुरतरु, मोगरा मालती सार ।
प्रभु कंठे ठवि पूजिए, सुंदर फूलका हार ॥१॥

(चाल—गुलशनमे आयी बहार)

बहार मेरे प्रभुके पूजनमें हो रही बहार ॥ अंचलि
श्रावक तीजे व्रत करीजे ।
थूल चोरी परिहार । बहार० १ ॥
स्वामी अदत्त कदापि न लीजे ।
त्यागिए भेद अढार । बहार० २ ॥

सात प्रकारे चौर कहावे ।
धारिए चित्त विचार । वहार० ३ ॥
राजदंड होवे वो चौरी ।
गिरे गए को विसार । वहार० ४ ॥
तोल माप कूडां नवि करिए ।
पंचातिचार निवार । वहार० ५ ॥
चौरीसे इस भव परभवमें ।
वध वंधन निहार । वहार० ६ ॥
आतम लक्ष्मी वीर वचनसे ।
वल्लभ हर्ष अपार । वहार० ७ ॥

(चाल तोरे गमका तराना)

श्रावकजनप्यारा, व्रत धरनारा,
पूजो श्री भगवान ।
प्रभु सुखकरनारा दुःखहरनारा,
भवजलतारा, पूजो श्रीभगवान । अं०
चौरीका धन न रहेरे,
भूखे मरे सदा चौर ।
कोइ धणी नवि चौरका होवे,
पास न वैठे और । प्रभु० १ ॥

प्राण लिए परधन लेनेसे,
हत्या पंचेंद्रि जान ।
जग जस उज्जल व्रत धरनेस,
पावे अमर विमान । प्रभु० २ ॥
पुण्य प्रभावे वहांभी सासय,
पडिमा पूजा प्रचार ।
जिन अभिषेक करे कलशोंसे,
फलियो सुरतरु सार । प्रभु ३ ॥
वीर गया स्वर्गे धनदत्त सो,
व्रत शाखा विस्तार ।
आतम लक्ष्मी फल सासयसुख,
वल्लभ हर्ष अपार ॥ प्रभु० ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
न्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् ?

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
पुष्पमालां यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ चतुर्थव्रते पंचमी दीपकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चौथा व्रत वर्णन करुं, जस दीपक सम जोत ।
केवल दीपक कारणे, दीपकका उद्योत ॥ १ ॥

॥ लावणी ॥

सर्व व्रतोंमें व्रत है मोटा,
ब्रह्मचर्य सुख कारारे ।
जिस विन खोटा धर्म कर्म सब,
मानो मन नर नारारे ॥ स० १ ॥
प्रभु पूजी विधिसे गुरु पासे,
ब्रह्मचर्य व्रत धारारे ।
पण अति चारको दूर करीने,
दूर करे पर दारारे ॥ स० २ ॥
निज नारी संतोषी श्रावक,
चौथा अणुव्रत सारारे ।
देव तिरी नर नारी नजरें,
रूप रंगको छारारे ॥ स० ३ ॥
विधवा नारी वाल कुमारी,
वेश्या परमें विचारारे ।
नर मारण काती अतिराती,
त्यागे धन्य अवतारारे ॥ स० ४ ॥

व्रत पीडा स्मर क्रीडा वाला,
दुर्गंधा परिहारारे ।
निर्नासा भी नारी प्रीति,
पंचाशकमें टारारे ॥ स० ५ ॥
परनारी कारण श्रावकको,
वाडी नव निरधारारे ।
नारायण चेडा महाराया,
कन्यादान निवारारे ॥ स० ६ ॥
सोंपी राज्य भरथ राजाको,
राम रहे वन चारारे ।
फंद फसे नहीं खर खेचरकी,
देखी नारी विकारारे ॥ स० ७ ॥
सीता सती मोटीमें खोटी,
दृष्टि रावण मारारे ।
कोटि हेमका दान वरावर,
नावे ब्रह्म व्रत पारारे ॥ स० ८ ॥
व्रत तोडे ने नरनारी दुःख,
पावे नरकमें भारारे ।

इंद्र नमन करी बैठे सभामें,
धन्य विरति मनोहारारे ॥ स० ९ ॥
इमजानी वानी जिन प्रानी,
खानी गुण अवधारारे ।
आतम लक्ष्मी वीरवचनसे,
वल्लभ हर्ष अपारारे ॥ स० १० ॥

॥ पीलू ॥ चाल—मेरे सज्जनसें यूं जा कहना ॥

वीर जिनंदकी दीपसे पूजा,
ब्रह्मचर्य व्रत दीप धरीरे । वी० अं० ॥
व्रतमें मुगुट समान विचारो ।
ब्रह्मचर्य आतम गुण धारो ।
सुरतरु नवनिधि पुण्य भंडारो ।
नमो नमो व्रत धारी, सदा ब्रह्मचारी,
अनंगको मूर जरीरे ॥ वी० १ ॥
परदारा सेवन अघ मानो ।
मदिरा मांससे अधिका जानो ।
लौकिक वेद पुराण वखानो ।
विप कन्या अवतार, के रंडा नार,
होवे व्रत भंग करीरे । वी० २ ॥

मन वंछित तस सुरवर साधे ।
जगमें जस कीर्ति अति वाधे ।
फल पारिजात्तक व्रत लाधे ।
पाप तापको टार, के व्रत संभार,
धार जिए आण खरीरे ॥ वी० ३ ॥
वत्रीस उपमा दशमे अंगे ।
शीलवती पाली व्रत रंगे ।
नाथ चरण तुम आयो उमंगे ।
नेक नजर करो नाथ, मुक्तिके साथ,
के जग तुम आस भरीरे । वी० ४ ॥
करि मुखसे एक दाना निकसे ।
कीडी कुटुंब सहु खाके विकसे ।
श्री शुभवीर जिनेश्वर हिकसे ।
आतम लक्ष्मी सोहके, हर्ष अमोहके,
वल्लभ पास परीरे, ॥ वी० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधरा श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय दीपकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥



॥ पंचमव्रते पष्टी धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पंचम व्रतको आदरि, पांच तजी अतिचार ।
जिनवर धुवसे पूजिए, भवजल तारन हार ॥ १ ॥

(चाल-धन धन वो जगमें नरनार.)

धन धन वीर जिनंद भगवान ।
भवोदधि पार लगानेवाले ॥ ध० अं० ॥
सुनो मनमोहन जगनाथ,
मैं गहिया तुमरा हाथ ।
तुम सम नहीं मिलिया साथ,
परिग्रह रोग मिटानेवाले ॥ ध० १ ॥
कृष्णागरु धूप दशांग,
खेवी करूं यह प्रभु मांग ।
टारो तृष्णा तरुणी सांग,
नहीं कोई और हटानेवाले ॥ ध० २ ॥

छलिया गति चारमें फूल,
तिर्यंचमें वृक्षके मूल ।
रहे धन ऊपर अति झूल,
बनी फणियर भय पानेवाले ॥ ध०३॥
सुर लोभी हैं संसार,
संसारी धन संहार ।
मुनि समरादित्य विचार,
सुने भवी लोभ घटानेवाले ॥ ध०४॥
नरभव सेवा धन काज,
करी नीचकी तजके लाज ।
पयों रणमें आशाराज,
जगद्‌गुरु वचन बचानेवाले ॥ ध० ५॥
आतम लक्ष्मी दातार,
संतोषमें हर्ष अपार ।
वल्लभ मन वीर आधार,
कनक कामनी विसरानेवाले ॥ ध० ६॥
(न छेड़ो गाली हूंगी रे भरने दो जल नीर)
पूजा फल मांगुं दीजो रे,
महावीर जिनराय । अंच० ।

कंचन कामनी मन धारी,
दीनो प्रभु नाम विसारी ।
मानुं गइ अक्कल मारी रे,
महावीर जिनराय । पू० १ ॥
भाग्ये मिलिया तुम स्वामी,
आदरुं व्रत अवसर पामी ।
नवविध परिग्रह परिणामीरे,
महावीर जिनराय । पू० २ ॥
अथवा इच्छानुसारी,
धन धान्यादिक विचारी ।
षटभेद परिग्रह धारी रे,
महावीर जिनराय । पू० ३ ॥
उत्तर चउ साठ वताया,
दशवैकालिकमें गाया ।
गुरु भद्रवाहु फरमाया रे,
महावीर जिनराय । पू० ४ ॥
परिमाणसे अधिका थावे,
तीरथपर खरचे भावे ।

खपे पाप छाप जिन गावे रे,
महावीर जिनराय । पू० ५ ॥
आतम लक्ष्मी धन पावे,
संतोषें वीर जनावे ।
वल्लभ मन हर्ष मनावेरे,
महावीर जिनराय ॥ पू० ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ पञ्चमी सप्तमी पुष्पपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पांच वर्णके पुष्पकी, वर्षा करे जिन अंग ।
गुण व्रत निग प्रथमें कह्यो, दिशि परिमाणको रंग

(चाल—होई आनंद वहार)

वीर जिनंद जयकाररे, भवी पूजा बनावे ।
पूजा बनावे आंगी रचावे, वीर जिनंद० ॥ अंचली॥
समवसरण सुरवर रचेरे, पूजा फूल अपाररे ॥भ०१
राय पसेणी सूत्रमेंरे, सुरियाभ देव विचाररे॥भ०२
दिक परिमाण करे करीरे, प्रभु पूजा विस्ताररे॥भ०
चारदिशा विमला तमारे, हिंसाका परिहाररे॥भ०४
आशा करे अरिहंतकीरे, पांच तजी अतिचाररे॥भ०
आतम लक्षमी हर्षसेरे, वल्लभ वीर आधाररे॥भ०६

(चाल पनिहारि)

तुम सरिखे जगमें नहीं मारा वालाजी ।
देखे देव दयाल वालाजी ।
वरसी दानको वरसियो मारा वालाजी ।
विप्र प्रवासी ते काल वालाजी ॥ १ ॥
वस्त्र देइ सुखियो कियो मारा वालाजी,
लेइ संयम दया धार वालाजी ॥
केवली जब जिनराजजी मारा वालाजी,
में कोइ गति तिण वार वालाजी ॥ २ ॥

शासन देखी आइयो मारा वालाजी,
तुम शिर सेवक लाज वालाजी ॥
इस व्रतसे महानंद लिया मारा वालाजी,
शिवसुख आतमराज वालाजी ॥ ३ ॥
श्री शुभ वीर जिनेसरु मारा वालाजी,
हमको तुम आधार वालाजी ॥
आतम लक्ष्मी पामिये मारा वालाजी,
वल्लभ हर्ष अपार वालाजी ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

। सप्तमव्रते अष्टमी अष्टमंगलपूजा ।

॥ दोहा ॥

नमन करी शुभ भावसे, अष्टमंगल पुरधार ।
भाव मंगल जिन पूजिए, पूजा आठमी सार ॥१॥
दूजा गुण व्रत जानिए, सातमा व्रत उच्चार ।
उपभोगे परिभोगसे, वीस तजी अतिचार ॥ २ ॥

(चाल—वाला वेगे आवोरे)

भक्तिभाव धारीरे, जग जयकारीरे,
वीर जिन पूजिए होजी ।
प्रभुजीको पूजतां भवदुःख जाय,
साहिबाको सेवतां शिवसुख थाय । अं० ।

॥ साखी ॥

आदरो विरति सातमे, होवे प्रभुकी महेर ।
आगम दर्पण देखिए, दूर है शिवपुर शहेर ।
वाला मारा वीसरो गली संसार ।
वाला मारा चरट पडोसी वार ।
वाला मारा रहना नित्य नित्य ख्वार ।
वाला मारा नहीं सज्जन आचार ॥ भ० १ ॥

॥ साखी ॥

फलजल अन्न तंबोल आदि, जानोसव उपभोग,
घर भूपण नारी वसन, आदि सब परिभोग।
वाला मारा नाथ नमी करो माप।
वाला मारा जाए भवो भव पाप।
वाला मारा आवे न रोग संताप।
वाला मारा निर्मल थावो आप ॥ भ० २ ॥

॥ साखी ॥

प्रभु पूजा मंगल करी, कीजे मंगल पोप।
पर हांसी तजी त्यागिए, मान अति अति रोप।
वाला मारा उदभट वेश न धार।
वाला मारा मेला वेश निवार।
वाला मारा महा विगय तजो चार।
वाला मारा त्यागो अभक्ष्य दश वार ॥ भ० ३ ॥

॥ साखी ॥

रात्रि भोजन त्यागिए, जस दूपण नहीं पार।
सज्जन जन मनमें वसे. करे निप्पक्ष विचार।
वाला मारा चूक विद्धी अचनार।
वाला मारा राक्षसादिक छलनार।

वाला मारा केश कंटक ज़ु विकार ।
वाला मारा गुण नहीं दीसे लगार ॥ भ० ४ ॥

॥ साखी ॥

वर्णन केशव हंसका, तिग मित्रादि अन्य ।
सुन रात्रि भोजन तजे, धन्य ते प्राणी धन्य ।
वाला मारा रात्रि भोजन परिहार ।
वाला मारा आतम लक्ष्मी दातार ।
वाला मारा वीर वचन अनुसार ।
वाला मारा वल्लभ हर्ष अपार ॥ भ० ५ ॥

(चाल—प्रेमे आयो प्रेमे आयोरे)

भावे पूजे भावे पूजेरे प्रभुजी भावे पूजेरे ।
भव मानुष्य लेखे थाय प्रभुजी भावे पूजेरे ॥ अं० ॥
शकट गंत्री वेचे खाय भाडा,
अंगार और वन कर्म ।
सर उपल और कूप खणावे,
श्रावकका नहीं धर्म ॥ प्र० १ ॥
दांत लाख रस केश निवारे,
विष व्यापार हटाय ।

शुक मेना पंजरे नवि पाले,
आग न दे वनमाय ॥ प्र० २ ॥
यंत्र पीलण नवि शोपिये सरको,
कर्म निर्लंछन वार ।
खोट खजाने नहीं शिव दीजे,
सेवक सेवा विचार ॥ प्र० ३ ॥
राजमंत्री पुत्री फल पामी,
साधक बाधक टार ।
आतम लक्ष्मी वीर वचनसे,
वल्लभ हर्ष अपार ॥ प्र० ४ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
अष्टमंगलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ अष्टमव्रते नवमी अक्षतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

ग्म व्रतको धारिए, नामे अनरथदंड ।
ालव विन करी पापको, बांधे कर्म प्रचंड ॥१॥
जन शरीरके कारणे, पापसे पेट भराय ।
। नहि अनरथदंडहै, इम भाखे जिनराय ॥२॥
जा नवमी मानिए, अक्षत तंदुल श्वेत ।
ष्टमव्रत प्रभु पूजना, अष्ट कर्म क्षयहेत ॥ ३ ॥

(चाल—बलिहारी बलिहारी)

सुखकारी सुखकारी सुखकारी
जगनाथ हो यह मांगु
वेरतिफल सेवा सेवक दीजिएजी ॥ सु० अंचलि ॥
नेक नजर होवे, नाथ दालिद्र खोवे ।
अक्षत उज्जल पूजा सारी जगनाथ ॥ १ ॥
वीर हजूर करुं, विनती चरण परुं ।
काल पंचम दुःख भारी जगनाथ ॥ २ ॥
ध्यानार्त्त रौद्र करी, अनर्थ दंडभरी ।
दियो उपदेश पापकारी जगनाथ ॥ ३ ॥
कूडी वातमें साखी, हुओ न खामी राखी ।
आरंभ युद्ध जम्न नहीं पारी जगनाथ ॥ ४ ॥

रथ मूशल दे दे, मार्ग तरुको छेदे।
वादे भगाए वेल मारी जगनाथ ॥ ५ ॥
लोक लडाए वाते, स्वामी में आते जाते।
सरणा लिया तुम धारी हारी जगनाथ ॥६॥
आतम लक्ष्मी थापो, वल्लभ हर्ष आपो
वीर वचन जाऊं वारी जगनाथ ॥ ७ ॥

(चाल—हूंठ फिरा)

वीरजिनंद जयकारा सुखकारा
व्रतधर भावे पूजिए ॥ अंचली ॥
अक्षतपूजा करे नरनारी,
विकथा चार को दूर निवारी।
जावे न पुण्य धन हारा
सुखकारा व्रतधर भावे पूजिए ॥ १ ॥
नगर अनीति चार धुतारे,
पाप करे भरे पेट लुटारे।
रत्न चूड लुट डारा सुखकारा
व्रतधर भावे पूजिए ॥ २ ॥
गणं घंटाके वचन को पाली,
सुखी हुवा गया निज धन वाली।

रत्न चूड हुशियारा सुखकारा
व्रत धर भावे पूजिए ॥ ३ ॥
तिम आज्ञा अरिहंतकी धारी,
व्रत ग्रही गुरुसे पाप पखारी।
पण अतिचार निवारा सुखकारा
व्रत धर भावे पूजिए ॥ ४ ॥
वीरसेन कुसुम श्री नामे,
आतम लक्ष्मी व्रत फल पामे।
वल्लभ वीर आधारा सुखकारा
व्रत धर भावे पूजिए ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् ?

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ ? ॥

॥ नवमव्रते दशमी दर्पणपूजा ॥

॥ दोहा ॥

शिक्षाव्रत कहे चार जिन, प्रथम सामायिक सार ।
आतम दर्शन कारणे, दर्पण पूजा धार ॥ १ ॥

॥ कव्वाली ॥

सुनो प्रभु विनती एती,
हमें संसारसे तारो ।
कचीभी नहीं भूलाएंगे,
कियो तुमने जो उपकारो ॥ १ ॥
सामायिक नवमे उच्चरके,
मुकुरसे पूजा प्रभु करिए ।
निजातमरूप अनुसरके,
सामायिक समता संवरिए ॥ २ ॥
पौषध शाला घरे चैत्ये,
सामायिक लेवे शुद्धभावे ।
टाली अति चार दो घटिका,
दयालु साधु समथावे ॥ ३ ॥
विधि सामान्य ए जानो,
राजा और मंत्री व्यवहारी ।

प्रशंसे सर्व दर्शनके,
आवे सब साथ सिंगारी ॥ ४ ॥
इस विध पास गुरु आकर,
आतम लक्ष्मी हर्ष धारी ।
घडी दो करके सामायिक,
वल्लभ दे दोषको टारी ॥ ५ ॥

(चाल—नाचत सुरवृंद छंद)

पूजन प्रभु वीर धीर आतम सुखकारी । पू० अं०

श्रावक सामायिक करंत,
करत कठिन कर्म अंत ।
खंत दंत संत होवे,
सूत्रके अनुसारी ॥ पूजन १ ॥
भाव पूजा एही जान,
द्रव्य पूजा कारण मान ।
कहा एक फल प्रमान,
सामायिक व्यवहारी ॥ पूजन० २ ॥
बाणु कोडी ओगणसाठ,
सहस पचीस उपर पाठ ।

नवसय पचीस पल्य ठाठ,
सुर आयु धारी ॥ पूजन० ॥ ३ ॥
मोक्ष गयो धन मित्र निहाल,
व्रत सामायिक विधिसे पाल ।
पंचम गुणठाणुं अजुवाल,
मांगु भव पारी ॥ पूजन० ४ ॥
आवे ध्येय ध्यान रूप,
आतम लक्ष्मी हर्ष अनूप ।
अचल सुख वीर भूप,
वल्लभ नहीं वारी ॥ पूजन० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय दर्पणं यजामहे स्वाहा ॥ १० ॥

॥ दशमव्रते एकादशी नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूर करी विग्रह गति, दीजे पद अनाहार ।
इम कही जिनवर पूजिए, भर नैवेद्यका थार ॥१॥

(चाल—तुम चिद्घनचंद)

प्रभु वीर जिनंद आनंद कंद,
तुम अर्चन जग जयकारी ।
नाथ तुम अर्चन जगजयकारी, प्र० अं० ॥
भक्ति सुधारस घोल करी ने,
रंग चोल मन धारी ॥ प्रभु० १ ॥
प्रभु पूजा विस्तारसे कर के,
कर्म कलंक निवारी ॥ प्रभु० २ ॥
देशावकाशिक दशमे व्रतमें,
नियम संक्षेप दश चारी ॥ प्रभु०३ ॥
पक्ष मास दिन रात मुहूरत,
वर्ष इच्छानुसारी ॥ प्रभु० ४ ॥
प्रत्याख्यान करे इस विधिसे,
शुभ भावे नर नारी ॥ प्रभु० ५ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष वरे वो,
वल्लभ वीर विचारी ॥ प्रभु० ६ ॥

(श्याम कल्याण)

वीरजिन पूजन आनंद कारा ॥ वी० अंचलि ॥

मंत्र बले विष डंकमें जिम तिम,
संक्षेप होय व्रत बारा ॥ वी० १ ॥

गंठसी घरसी दीपसी आदि,
मावे अभिग्रह सारा ॥ वी० २ ॥

चंड विडंसग दीपक ज्योति,
देशावकाशिक धारा ॥ वी० ३ ॥

धनद लिया इस व्रतसे शिवसुख,
पण अतिचार निवारा ॥ वी० ४ ॥

आतम लक्ष्मी वीर वचनसे,
वल्लभ हर्ष अपारा ॥ वी० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ११ ॥

॥ एकादशव्रते द्वादशी ध्वजपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पडह वजाय अमारिका, ध्वज वांधो शुभ ध्यान ।
पौषध व्रत इग्यारमे, ध्वज पूजा सुविधान ॥ १ ॥

(चाल सिमरनर अरे नाथ चरनन)

वीर प्रभु जगजन हितकारी, करे सुरासुरसेव
निरंतर श्रावक व्रत धारी ॥ वीर प्रभु० अंचलि ॥
पूजके प्रभु पडिमा भावे,
विकथा चार विसार पर्व साधे शुभ गति जावे ।
धर्मकी महिमा अति भारी,
जैसी शीतल छाया जगतमें तरुवर सहकारी,
होवे जस फलरस सुखकारी ।
माया खोटी जगतकी, सार नही संसार ।
जानो काया अंतमें, होवेगी वल छार ।
प्रेम धरो श्री जिन अणगारी ॥ करेसुरासुर०॥१॥
पडिलेहण ओर पडिकमणा,
देव वंदन तिगवार विधिसे स्थिर चित्त हो करणा ।
अर्थ पोषधका मन लाना,
करे धर्म को पुष्ट यथारथ पोषध तस माना,

करे नहीं पौषधमें स्नाना ।
ब्रह्मचर्य व्रतको धरे, जो जिनशासन सार ।
तप करी कर्म को निर्जरे, त्यागे पाप व्यापार ।
कह्या पौषध भेदे चारी ॥ करे सुरासुर० ॥ २ ॥
देशसे पोषध जो करते ।
अस्सी भेद विचार करे एकासण भी नर ते ।
कहा सिद्धांतमें अधिकारा,
जयणा मंगल बोल धरे निज जाय करे आहारा,
वदन भाजन पूंजी सारा ।
विनाशब्द भोजन करे, रस गृद्धिको त्याग ।
आवे ईर्या शोधता, थानकमें महा भाग ।
विधि करे पोषधकी सारी ॥ करेसुरासुर० ॥ ३ ॥
सर्व से आठ पहर जानो ।
चउविहार संथार निशि कंबल आदि मानो ।
पर्व पोषध गणधर बोले ।
लाभ तीस पूर्वोक्त गुणा माने सब निज तोले,
नहीं आवे जग जस मोले ।
श्रावक दश स्वर्ग गए, कार्त्तिक हरि अवतार ।
श्वेत कुमार विराधको, आराधक देव कुमार ।
तजी भावे पण अतिचारी ॥ करेसुरासुर० ॥४॥

पालिए पौषध तिम प्रानी ।
निज शक्ति अनुसार कहे आतम ज्ञानी ध्यानी।
अनुभव होवे मुनिपनका ।
जोर घटे मद मोह लोभ स्मर राग द्वेष गनका ।
सुधारा होवे तन मनका ।
आतम लक्ष्मी पामिए, आनी हर्ष अपार ।
वीर वचन मन मानिए, होवे भवजल पार।
वल्लभ जिन शासन वलिहारी ॥ करेसुरासु०॥५॥

(वढंस) नाथ कैसे गजके फंद छुडाये ॥ देशी ॥

पूजो भवि वीर जिनंद उपकारी,
धारी पौपध व्रत सुखकारी ॥ पू० अं० ॥
पौपधमें यति तुल्य कहावे,
श्रावक जन्न सागारी ॥
आठ पहर या चार पहर तक,
सावद्यके परिहारी ॥ पूजो० ॥ १ ॥
दोय सहस सय सात सतत्तर,
कोटि पोसह फल धारी ॥
लाख सतत्तर सहस सतत्तर,
ऊपर आयु विचारी ॥ पूजो० ॥ २ ॥

सातसो सतत्तर पल्योपम,
किंचिदधिक देव धारी ॥
व्रत आराधी एक भवंतर,
हुए केइ अणगारी ॥ पूजो० ॥ ३ ॥
धन्य वो सुलसा धन्य वो आनंद,
कामदेव बलिहारी ॥
पोषध व्रत जस दृढ पयंपे,
वीर जिनंद जयकारी ॥ पूजो० ॥ ४ ॥
आतम लक्ष्मी पोषध चिदघन,
वीर वचन अनुसारी ॥
पोषध स्वामी आतमरामी,
वल्लभ हर्ष अपारी ॥ पूजो० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय अजं यजामहे स्वाहा ॥ १२ ॥

॥ द्वादशव्रते त्रयोदशी फलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

द्वादशमा व्रत जानिए, अतिथि संविभाग ।
मानो अतिथि साधुको, देवे दान सुभाग ॥ १ ॥
पूजा तेरमी जिनतणी, फलपूजा फलआस ।
करिए वरिए शिवसिरी, सादि अनंता वास ॥२॥

ठुमरी-(महावीर तोरे समवसरणकीरे)

महावीर जिन चरण कमलकीरे
करे अर्चा मिल नरनारी, शुभ फलसे भरके थारी ।
श्रावक शुद्ध व्रत के धारी ॥ महावीर० अंचलि॥
अतिथि मुनि जानोरे, संविभाग मानोरे ।
बारमेव्रत लाहा लीजे, शुद्ध दान सदा मुनि दीजे ।
मानव भव सफला कीजे ॥ महावीर जिन० १ ॥
सुरतरुव्रत फलियोरे, मनमोहन मेलो मलियोरे ।
विनती कर मुनिको लावे, गुरु विनये आसन ठावे
आपे पडिलाभे भावे ॥ महावीर जिन० २ ॥
देशकाल अनुसरिएरे, पारणे दान करिएरे ।
इसमेंभी नहीं अतिचारिए, निर्दोष विधि मन धरिए

पद दोष रहितको वरिए । महावीर जिन० ३ ॥
लेइ दान मुनि जावेरे, पीछे जावे कुछ भावेरे ।
मुनि दानमें जो नहीं आवे, व्रतधारी वो नहीं खावे।
मनमें अति हर्ष मनावे ॥ महावीर जिन० ४ ॥
नहीं मुनि जब होवेरे, दिशि तब जोवेरे ।
जिमे भाव मुनिमनराखी,पोपधपारणविधिदाखी।
है धर्मदास गणि साखी । महावीर जिन० ५ ॥
धन्नादिक तरियारे, गुणकर शेठ वरियारे ।
आतम लक्ष्मी बलिहारी, शुभवीर वचन अनुसारी
वल्लभ मन हर्ष अपारी । महावीर जिन० ६ ॥

(चाल—मान मायाना करनारारे)

सुखकारी पूजन सुखकारीरे,
महावीर पूजन सुखकारी ।
करे सम्यक्त्व व्रतके धारीरे म० अंचलि ॥
विनती करूं मैं घरमुझ आवो,
विरति पणो व्रतधारी ।

सेवक स्वामी भावसे विनवुं,
दावा न और विचारीरे ॥ म० १ ॥
लील विलासी मुक्तिके वासी,
करुणा निधि उपकारी ।
सेवक चाहे मेल करी प्रभु,
सुंदर तुमरा दिदारीरे । म० २ ॥
रंग रसीले प्रभु जो आवो,
होवे जगत जयकारी ।
सेवकका मन वंछित होवे,
आनंद मंगल कारीरे । म० ३ ॥
अर्द्ध मार्गमें मिले प्रभुजी,
अर्ध वाकी हितकारी ।
निर्भय निजपुर जानेको साचा,
साथी प्रभु बलिहारीरे । म० ४ ॥
वदन कमल प्रभु वीरकी कांति,
हंस समा उजियारी ।
आतम लक्ष्मी वीर वचनसे,
वल्लभ हर्ष अपारीरे । म० ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥ (रेखता)

प्रभु महावीर जिनचंदा,
गाया गुण आतम सुखकंदा ।
पूजन विधि सूत्र अनुसारी,
करे व्रतधारी नरनारी ॥ १ ॥
अनुव्रत पांच फरमावे,
प्रभु व्रत तीन गुण गावे ।
कहे शिक्षाके व्रत चारो,
भवि मन शुद्ध अवधारो ॥ २ ॥
वेद कर चंद्र अतिचारा,
निवारी पाले व्रत सारा ।

अमर अपवर्ग सुख पावे,
करे प्रभु धर्म शुभ भावे ॥ ३ ॥
तप गच्छ गगन रवि रूपा,
श्रीविजयानंदसूरिभूपा ।
विजयलक्ष्मी गुरुदादा,
विजयश्री हर्ष गुरुपादा ॥ ४ ॥
विजय वल्लभ करी क्रीडा,
यथाशक्ति प्रभु ईडा ।
पुरी दर्भावती स्वामी,
सामलिया पास सिर नामी ॥ ५ ॥
वसु शिखी वेद कर साले,
वीर निर्वाणके काले ।
आत्म विक्रम रसेंदुमें,
वसु रस अंक इंदुमें ॥ ६ ॥
तिथि मधु सप्तमी जानो,
रवि दिन पूर्णता मानो ।
साधु पंचदशके संगे,
बनी रचना अतिरंगे ॥ ७ ॥

॥ काव्यम् ॥

सम्यग्दर्शनसंयुता व्रतधराः श्राद्धा जिनाराधका-
स्ते सर्वेपि च देवलोकमगमन् यान्ति व्रजिष्यन्त्यपि
च्युत्वा स्वच्छकुले ततोपि चरणं संसेव्य मोक्षं यतः
कुर्मस्तत्फलवांछया जिनवरस्यार्चामिमामुत्तमाम् १

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥ १३ ॥

॥ कलश ॥ (रेखता)

प्रभु महावीर जिनचंदा,
गाया गुण आतम सुखकंदा ।
पूजन विधि सूत्र अनुसारी,
करे व्रतधारी नरनारी ॥ १ ॥
अनुव्रत पांच फरमावे,
प्रभु व्रत तीन गुण गावे ।
कहे शिक्षाके व्रत चारो,
भवि मन शुद्ध अवधारो ॥ २ ॥
वेद कर चंद्र अतिचारा,
निवारी पाले व्रत सारा ।

अमर अपवर्ग सुख पावे,
करे प्रभु धर्म शुभ भावे ॥ ३ ॥
तप गच्छ गगन रवि रूपा,
श्रीविजयानंदसूरिभूपा ।
विजयलक्ष्मी गुरुदादा,
विजयश्री हर्ष गुरुपादा ॥ ४ ॥
विजय वल्लभ करी क्रीडा,
यथाशक्ति प्रभु ईडा ।
पुरी दर्भावती स्वामी,
सामलिया पास सिर नामी ॥ ५ ॥
वसु शिखी वेद कर साले,
वीर निर्वाणके काले ।
आत्म विक्रम रसेंदुमें,
वसु रस अंक इंदुमें ॥ ६ ॥
तिथि मधु सप्तमी जानो,
रवि दिन पूर्णता मानो ।
साधु पंचदशके संगे,
बनी रचना अतिरंगे ॥ ७ ॥

विवेक ललित लावण्य चंगा,
सोहन विमल उमंगा ।
विज्ञान विबुध जिन तीनो,
कुमतिमत त्याग जिन कीनो ॥ ८ ॥
तिलक विद्या विचाराजी,
विचक्षण मित्र प्याराजी ।
विजय समुद्र अवधारो,
विजयपद साथ सब धारो ॥ ९॥
विजय कमल सूरिराजे,
उपाध्याय वीर विजय गाजे ।
प्रवर्त्तक श्रीविजयकांति,
जिनोंके राज्य नहीं भ्रांति ॥ १० ॥
विजय शुभवीर अनुसारी,
करी रचना मनोहारी ।
मिथ्या दुष्कृत वल्लभ देवे,
सुधारी भूल सुजन लेवे ॥ ११ ॥

॥ इति द्वादश व्रतपूजा ॥

"धूपपूजा."

दशांग धूप धूखायके भवि
धूप पूजासे लिए,
फल ऊर्द्धगति सम धूम दहि
निजपाप भवभवके किए।
भव पाप ताप निवारणी
प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥



"दीपपूजा."

जिम दीपके परकाससे
तम चौर नासे जानिए,
तिम भावदीपक नाणसे
अज्ञान नास वखानिए।

भव पाप ताप निवारणी
प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

"पुष्पपूजा."

सुरभि अखंडित कुसुम मोगरा
आदिसे प्रभु कीजिए,
पूजा करी शुभयोग तिग गति
पंचमी फल लीजिए ।
भव पाप ताप निवारणी
प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

"धूपपूजा."

दशांग धूप धूखायके भवि
धूप पूजासे लिए,
फल ऊर्द्धगति सम धूम दाहि
निजपाप भवभवके किए।
भव पाप ताप निवारणी
प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

"दीपपूजा."

जिम दीपके परकाससे
तम चोर नासे जानिए,
तिम भावदीपक नाणसे
अज्ञान नास वखानिए।

भव पाप ताप निवारणी
प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

"पुष्पपूजा."

सुरभि अखंडित कुसुम मोगरा
आदिसे प्रभु कीजिए,
पूजा करी शुभयोग तिग गति
पंचमी फल लीजिए ।
भव पाप ताप निवारणी
प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

"नैवेद्यपूजा."

सरस मोदक आदिसे
 भरी थाली जिन पुर धारिए,
निर्वेदि गुणधारी मने
 निज भावना जनि वारिए।
भव पाप ताप निवारणी
 प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
 व्यवहार निश्चय मनधरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

"फलपूजा."

फल पूर्ण लेनेके लिए
 फलपूजना जिन कीजिए,
पण इंद्रि ग्रामी कर्म वामी
 शाश्वतापद लीजिए।

भव पाप ताप निवारणी
प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

"अक्षतपूजा."

शुभ द्रव्य अक्षत पूजना
स्वस्तिक सार बनाइए,
गति चार चूरण भावना
भवि भावसे मन भाइए ।
भव पाप ताप निवारणी
प्रभु पूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥६॥

॥ श्रीमद्विजयानन्दसूरिपूजाष्टकम् ॥

"जलपूजा" (शिखरिणी वृत्तम्)

सतां तीर्थादीनां विमलसलिलैः कुम्भनिभृतै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

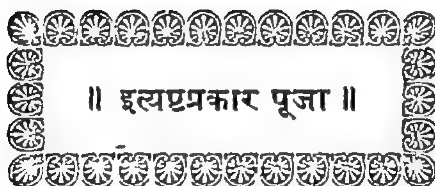
"चन्दनपूजा."

सुभद्रश्रीचन्द्रप्रचुरतरबाह्लीकनिकरै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ २ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

भव पाप ताप निवारणी
प्रभुपूजना जग हित करी,
करु विमल आतम कारणे
व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥


॥ इत्यष्टप्रकार पूजा ॥

॥ श्रीमद्विजयानन्दसूरिपूजाष्टकम् ॥

"जलपूजा" (शिखरिणी वृत्तम्)

सतां तीर्थादीनां विमलसलिलैः कुम्भनिभृतै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेचनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

"चन्दनपूजा."

सुभद्रश्रीचन्द्रप्रचुरतरवाह्लीकनिकरै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेचनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ २ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

"पुष्पपूजा."

जपाजातीपङ्केरुहबकुलकुन्दादिकुसुमै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे पुष्पाणि
यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

"धूपपूजा."

दशाङ्गैर्धूपैश्चागुरुमृगमदादिप्ररचितै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मंगलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे
धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

"दीपपूजा."

तमश्शान्त्यै नित्यं सुरभिघृतदीपेन विधिना,
महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

"अक्षतपूजा."

अखण्डैस्सच्छान्यैर्यवचणकवल्लाक्षतमुखै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ ६ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

"नैवेद्यपूजा."

सुधास्वादीयोभिर्वटकसहितैर्मोदकगणै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ ७ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयनन्दसूरिगुरवे नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

"फलपूजा."

फलैः शुद्धैर्द्राक्षाकदलपनसाम्रादिविविधै-
र्महान्तं गीतार्थं चरणकरणासेवनपरम् ।
तपागच्छाधीशं मुनिगणपतिं मङ्गलकरं,
यजामः श्रीसूरिं महितविजयानन्दमनघम् ॥ ८ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे फलानि यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीविजयानन्दसूरिपूजाष्टकं समाप्तम् ॥

"श्रीमद्विजयानंदसूरिपूजाष्टक."

"जलपूजा."

अति शुद्ध निर्मल नीर छान्यो
कलश कंचनको भरी ।
उपकारी जगमें मनोवांछित
करे मंगल अघ हरि ॥
तपगच्छ धोरी हाथ जोरी
करुं जलसे पूजनं ।
श्री सूरि विजयानंद होवे
कर्ममलको धूजनं ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानंदसूरिगुरवे जलं
यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

"चंदनपूजा."

घस शुद्ध चंदन और केसर
कटोरी कंचनभरी ।
उपकारी जगमें मनोवांछित
करे मंगल अघ हरि ॥

तपगच्छ धोरी हाथ जोरी
करुं चंदनपूजनं ।
श्री सूरि विजयानंद होवे
कर्ममलको धूजनं ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानंदसूरिगुरवे चंदनं
यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

"पुष्पपूजा."

पांच वर्ण सुगंध सुंदर
कुसुमसे माला करी ।
उपकारी जगमें मनोवांछित
करे मंगल अघ हरि ।
तप गच्छ धोरी हाथ जोरी
करुं फूलसु पूजनं ।
श्री सूरि विजयानंद होवे
कर्ममलको धूजनं ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानंदसूरिगुरवे पुष्पाणि
यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

"धूपपूजा."

सुगंध धूप दशांग महके
कुमति गंधको हरि करी।
उपकारी जगमें मनोवांछित
करे मंगल अघ हरि ॥
तपगच्छ धोरी हाथ जोरी
करुं धूप सुपूजनं,
श्री सूरि विजयानंद होवे
कर्ममलको धूजनं ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानंदसूरिगुरवे धूपं
यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

"दीपपूजा."

शुद्ध गोघृत्तभर्यो दीपक
प्रगट जतनासे करी।
उपकारी जगमें मनोवांछित
करे मंगल अघ हरि ॥

तपगच्छ धोरी हाथ जोरी
करुं दीपक पूजनं,
श्रीसूरिविजयानंद होवे
कर्ममलको धूजनं ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानंदसूरिगुरवे दीपं
यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥



"अक्षतपूजा."

अखंड उज्जल शुद्ध अक्षत
थाली कंचनकी भरी ।
उपकारी जगमें मनोवांछित
करे मंगल अघ हरि ॥
तप गच्छ धोरी हाथ जोरी
करुं अक्षतपूजनं ।
श्री सूरि विजयानंद होवे
कर्म मलको धूजनं ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानंदसूरिगुरवे अक्षतान्
यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥



"नैवेद्यपूजा."

अति शुद्ध सुंदर रसवती
पकवानसे थाली भरी ।
उपकारी जगमें मनोवांछित
करे मंगल अघ हरि ॥
तप गच्छ धोरी हाथ जोरी
करुं नैविद पूजनं ।
श्री सूरि विजयानंद होवे
कर्ममलको धूजनं ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्री विजयानंदसूरिगुरवे नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

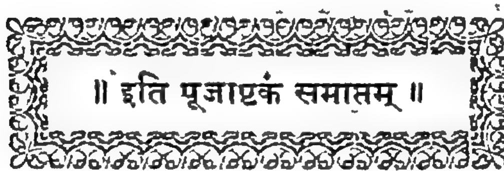


"फलपूजा."

निज पूर्ण फलके कारणे
नानाफले थाली भरी ।
उपकारी जगमें मनोवांछित
करे मंगल अघ हरि ॥

तप गच्छ धोरी हाथ जोरी
करुं फलसे पूजनं ।
श्रीसूरि विजयानंद होवे
कर्ममलको धूजनं ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ श्रीविजयानन्दसूरिगुरवे फलानि
यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥


॥ इति पूजाष्टकं समाप्तम् ॥

"श्रीगुरुमहाराजकी आरती"

[१] (दहींवालीका तौर-चाली.)

करो आरती गुरुकी प्यारे,
कर जोड़ करो वंदना सारे । करो० ॥
श्रीमहावीर सुधर्मा स्वामी,
क्रम होए-भ्रम खोए,
वज्र स्वामी पूर्व दश धारे ॥ करो० १ ॥
श्रीजगच्चंद्र सूरीश्वर क्रमसे,
तपी होए-खपी होए,
तप गच्छ विरुद राय कारे ॥ करो० २ ॥
क्रमसे श्री मणि विजयजी तस,
शिष्य थावे-शुभ भावे,
बुद्धि विजयजी गुण भंडारे ॥ करो० ३ ॥
श्रीविजयानन्द सूरि तस शिष्य,
शुभकरणी-जगतरणी,
मेटे कुमति अज्ञान अंधारे ॥ करो० ४ ॥
धर्माचार्य तणी बलिहारी,
गुण गावो-सुख पावो,
बोलो वार वार जयकारे ॥ करो० ५ ॥

मन वांछित आशा कर पूरण,
तूं दादा–गुण जादा,
गावे गुण नित वल्लभ थारे ॥ करो० ६ ॥

[२]

करूं गुरु आरतियां हे सुरंगसे
करूं गुरु आरतियां ।
जनम सफल कृता रथ होवे,
करूं गुरु आरतियां ॥ अंचली ॥
ज्ञानदरस चारितर सोहे,
तप पग धारतियां, हे सु० त०
खोहे करमको दूर हटे भव,
फिर फिर भामतीयां ॥ १ ॥
गुरु विन ज्ञान नहीं जगजीवन,
भवदुःख हारतियां, हे सु० भ०
विना ज्ञान किरिया नहीं सूधी,
कहे जिन भारतियां ॥ २ ॥
ज्ञान किया दोनोसे से मुक्ति,
सत नय मानतियां, हे सु० स०

षट भंगे दीपे जिन शासन,
 गुरु जन सारतियां ॥ ३ ॥
गौतम सोहम जंबू आदि,
 पाट धरावर्तियां. हे सु० पा०
वज्र स्वामी दश पूरव पाठी,
 सूत्र उधारतीयां ॥ ४ ॥
श्री गुरु बुद्धिविजय पटधारी,
 आतम तारतियां, हे सु० आ०
विजयानंद सूरिपद पामी,
 वल्लभ कारतियां ॥ ५ ॥

